खण्ड-07 सत्र-04 (भाग-02) अंक-44

सोमवार 17 अप्रैल, 2023 / 27 चैत्र, 1945 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

सातवीं विधान सभा

दूसरा सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड-07 सत्र-04 (भाग-02) में अंक 44 तक सम्मिलित हैं)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

राज कुमार

सचिव

RAJ KUMAR

Secretary

महेन्द्र गुप्ता

उप-सचिव (सम्पादन)

MAHENDRA GUPTA

Deputy Secretary (Editing)

विषय सूची

सत्र-04 (भाग-02)   सोमवार, 17 अप्रैल, 2023/27 चैत्र, 1945 (शक)   अंक-44

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	1-2
2.	निधन संबंधी उल्लेख	4
3.	माननीय सदस्य श्री संजीव झा तथा अन्य सदस्यों द्वारा अखबारों में एक दिन का सदन बुलाए जाने के संबंध में माननीय उपराज्यपाल के माननीय मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में सदन को नियमों के विरूद्ध बुलाया जाना कहने को लेकर विरोध तथा माननीया अध्यक्ष महोदया द्वारा इस संबंध में नियमों का हवाला देते हुए स्पष्टीकरण	5-24
4.	अल्पकालिक चर्चा (नियम-55)	25 -105
5.	माननीय सदस्य एवं मुख्य सचेतक श्री दिलीप पाण्डेय द्वारा प्रस्तुत संकल्प एवं उस पर चर्चा	106-140

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-04 (भाग-02) सोमवार, 17 अप्रैल, 2023/27 चैत्र, 1945 (शक) अंक-44

दिल्ली विधान सभा

सदन पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुआ।

सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए:

1. श्री अजेश यादव
2. श्री अखिलेश पति त्रिपाठी
3. श्री ए. धनवंती चंदीला ए.
4. श्री अजय दत्त
5. श्री अमानतुल्ला खान
6. श्री अब्दुल रहमान
7. श्रीमती बंदना कुमारी
8. सुश्री भावना गौड़
9. श्री बी.एस. जून
10. श्री धर्मपाल लाकड़ा
11. श्री दिनेश मोहनिया
12. श्री गिरीश सोनी
13. श्री जय भगवान
14. श्री जरनैल सिंह
15. श्री करतार सिंह तंवर
16. श्री कुलदीप कुमार
17. श्री महेंद्र गोयल
18. श्री मुकेश अहलावत
19. श्री नरेश वालियान
20. श्री नरेश यादव

21. श्री पवन शर्मा
22. श्रीमती प्रीति जितेंद्र तोमर
23. श्री प्रलाद सिंह साहनी
24. श्री प्रवीण कुमार
25. श्री ऋतुराज गोविंद
26. श्री रघुविंदर शौकीन
27. श्री राजेश गुप्ता
28. श्री राजेश ऋषि
29. श्री रोहित कुमार
30. श्री शरद कुमार चौहान
31. श्री संजीव झा
32. श्री सोम दत्त
33. श्री शिवचरण गोयल
34. श्री सोमनाथ भारती
35. श्री सही राम
36. श्री एस. के. बग्गा
37. श्री सुरेंद्र कुमार
38. श्री विनय मिश्रा
39. श्री वीरेंद्र सिंह कादियान
40. श्री अभय वर्मा
41. श्री अनिल कुमार बाजपेयी
42. श्री अजय कुमार महावर
43. श्री जितेंद्र महाजन
44. श्री महेन्द्र यादव
45. श्री मोहन सिंह बिष्ट
46. श्री ओमप्रकाश शर्मा
47. श्री प्रकाश जारवाल
48. श्री शोएब इकबाल
49. श्री विजेंद्र गुप्ता
50. श्री विशेष रवि

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-04 (भाग-02) सोमवार, 17 अप्रैल, 2023/27 चैत्र, 1945 (शक) अंक-44

दिल्ली विधान सभा

सदन पूर्वाह्न 11.06 बजे समवेत हुआ।

माननीया उपाध्यक्ष (श्रीमती राखी बिरला) पीठासीन हुईं।

राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम्

माननीया अध्यक्षः माननीय सदस्यगण सातवीं विधानसभा के चौथे सत्र के दूसरे भाग में मैं आप सब का हार्दिक स्वागत करती हूँ। ये विशेष सत्र है अतः मेरा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे शालीनतापूर्वक अपने विचार सदन में प्रस्तुत करें और सदन का समय खराब ना होने दें, साथ ही कार्यसूची में सूचीबद्ध विषयों के अतिरिक्त किसी भी अन्य विषय को मेरी अनुमति के बिना ना उठाएं। मुझे आशा है कि आप सदन की कार्यवाही को सुचारू रूप से संचालित करने में मेरा सहयोग करेंगे।

श्री विजेंद्र गुप्ताः जो दिल्ली में आज दो घटना घटित हुई हैं।

निधन संबंधी उल्लेख

माननीया अध्यक्षः अभी मैंने दो लाइनें बोली हैं। माननीय सदस्यगण गत दिनों विभिन्न दुर्घटनाओं में कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। शनिवार 15 अप्रैल, 2023 को महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के खपोली इलाके में, ओल्ड मुम्बई पुणे हाईवे पर एक प्राइवेट बस की गहरी खाई में गिरने से 13 लोगों की मौत हो गई, जबकि 29 अन्य लोग घायल हो गए। बस में सवार हादसे के शिकार मुम्बई के गौरेगांव इलाके के संगीत मंडली के सदस्य थे। शनिवार 15 अप्रैल, 2023 को ही उत्तर प्रदेश के शाहजहाँ पुर में ट्रेक्टर–ट्रोली पुल से नीचे गिर गई और 12 लोगों की मौत हो गई तथा 27 लोग घायल हो गए। रविवार 16 अप्रैल, 2023 को नवी मुम्बई में खुले मैदान में आयोजित किए गए महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार समारोह के दौरान तेज धूप लगने से 11 लोगों की मौत हो गई जबकि 50 लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस तरह की दुर्घटनाओं में लोगों की मौत होना दुखद है। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से मृतकों के प्रति हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करती हूँ तथा घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करती हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि उनको और उनके परिवार वालों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। अब दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए सदन द्वारा 2 मिनट का मौन धारण किया जाएगा।

(सदन द्वारा 2 मिनट का मौन धारण किया गया)

माननीया अध्यक्षः देखिये मेरा दोनों साथी सदस्यों से निवेदन है कि जो भी बात।

श्री विजेंद्र गुप्ताः ऐसी दो घटनाएं दिल्ली के अंदर भी हुई थी, बाहर की बात कर रहे हो आप यहां की बात तो कर ही नहीं रहीं।

माननीया अध्यक्षः जो भी बात हो

श्री विजेंद्र गुप्ताः बोलने दीजिए ना आप।

माननीया अध्यक्षः आप आ जाइये इस कुर्सी पर, नहीं आप आ जाइये आप रूलिंग दे दीजिए, मैं अपनी रूलिंग दे रही हूँ।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः नहीं गुप्ता जी ये बताइये, रूलिंग दे ली जाए एक बार। मैंने दोनों सदस्यों का नाम लिया है और ये कहा है कि दोनों सदस्य एक बार बैठ जाएं और परमिशन लेकर ही अपनी बात को कहें। आपको बीच में बोलने की क्या जरुरत पड़ गई। नहीं, आपको बीच में, आप बैठिये, तीनों लोग बैठिये। संजीव झा जी आप भी बैठिये, आप भी बैठिये। हां जी संजीव झा जी, मैं बारी-बारी सबको मौका दूंगी। हां तो सबको मौका मिलेगा ना, पहले और बाद की तो कोई बात ही नहीं है।

श्री संजीव झाः अध्यक्ष महोदया।

माननीया अध्यक्षः संजीव झा जी, अपनी बात रखिये।

श्री संजीव झाः बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदया। मैं आपके माध्यम से सदन के संज्ञान में जो मैंने कल बहुत सारे अखबारों में देखा, वो सदन के संज्ञान में लाना चाहता हूँ, चुंकि ये सदन की गरिमा के खिलाफ है, हम सब जितने भी चुने हुए जनप्रतिनिधि हैं जिन्हें सदन में दिल्ली के लोगों ने भेजा है,

मुझे लगता है ये उसके विशेषाधिकार का भी हनन है। अध्यक्ष महोदया, कल हमें अखबार के जरिये जानकारी मिली कि माननीय एलजी महोदय ने ये जो आज दूसरे पार्ट का जैसा आपने अभी कहा, हाउस शुरु हो रहा है, उसके बारे में विधान सभा को एक सूचना दिया है। मुझे लगता है कि ये सूचना हास्यास्पद है, जिस तरह की बातें मीडिया के जरिये आ रही है, एलजी साहब ने ये कहा है कि नया सेशन कनवे नहीं हो सकता। पहली बात कि ये कोई नया सेशन नहीं है, आपने भी कहा कि सेशन का ये दूसरा पार्ट है और ये पहले भी हमेशा होता रहा है, कोई पहली बार तो नहीं हुई है ये घटना। हमारे अपोजिशन के साथी श्री विजेंद्र गुप्ता जी इसी सदन के सदस्य हैं, विजेंद्र गुप्ता जी इस बात को लेकर कोर्ट गए थे और कोर्ट ने इस बात को नहीं स्वीकारा था। ना केवल विजेंद्र गुप्ता जी बल्कि इससे पहले भी देश की जो सर्वोच्च संस्था हैं लोकसभा, वहां भी रामदास अठावले जी इस बात को लेकर के 2004 में गए थे और इस बात को इन्होंने कहा था कि सेकेण्ड पार्ट में प्रेसिडेन्शियल एड्रेस होना चाहिए। उस बात को सुप्रीम कोर्ट ने नकारा था, तो मुझे लगता है कि इस तरह की उल-जुलूल बातें जब एलजी साहब करते हैं, बात किसी व्यक्ति की नहीं है, एलजी एक संवैधानिक पद है और संवैधानिक पद की अपनी एक गरिमा होती है तो इससे उस संवैधानिक।

माननीया अध्यक्षः जब वे बोल लेंगे तो मैं आपको बोलने का मौका दे दूंगी। बीच में बोलना जरुरी नहीं है ना।

श्री संजीव झाः संवैधानिक संस्था का एक तरह से मजाक बनता है, दिल्ली का मजाक बनता है। मैं इस बात को मानता हूँ कि एलजी साहब को दिल्ली की समझ नहीं है, चलो दिल्ली में नहीं थे, हालांकि एलजी किसी ऐसे व्यक्ति

को बनना चाहिए जिसे दिल्ली की समझ हो, दिल्ली के बारे में जानता हो, दिल्ली के नेचर को जानता हो। चलो उनको दिल्ली की समझ नहीं है, लेकिन संविधान की समझ होनी चाहिए, लेजिसलेटिव प्रक्रिया की समझ होनी चाहिए, चलो मैं मान सकता हूँ कि आपको संवैधानिक प्रक्रिया, संविधान की, लेजिसलेटिव प्रक्रिया की लोकतांत्रिक मूल्यों की समझ नहीं हो सकती है, जरूरी नहीं हर बात की समझ आप को हो, लेकिन कोई जानकारविद तो आप रख लीजिए, आप एलजी पद पर हैं, किसी ऐसे ऐडवाइजर को रखिये जो आपको संविधान को बताए, जो आपको लोकतांत्रिक मूल्यों को समझाए, जो आपको लेजिसलेटिव जो प्रोसेस है, जो प्रक्रिया है, उस प्रक्रिया को आपको समझाए, ताकि इस तरह की उल-जुलूल बातें जब पेपर में आती हैं तो इससे मजाक बनता है और मैं एक बात और बता दूं कि बात केवल इस सूचना की नहीं है, इससे पहले भी एलजी साहब ने हाउस में मैसेज भेजा है। मैं आपको सुप्रीम कोर्ट का एक जजमैंट बताता हूँ और मैं इस सदन के माध्यम से कहना चाहता हूँ कि एलजी साहब डायरेक्टली इस सदन को कभी मैसेज दे ही नहीं सकते हैं। अगर एलजी साहब को कैबिनेट रिकमेंड करे, कैबिनेट के रिकमेंडेशन पर कोई मैसेज हाउस को दे सकते हैं। मैं एक नाबामराबिया बर्सेज डिप्टी स्पीकर का जो है 2016 का एक जजमैंट है जिसमें कहा गया 'even if the Hon’ble Lt. Governor wants to send a message, it can be only on the aid and advice of the Council of Ministers. This has been upheld in the decision of the Hon’ble Supreme Court in the matter of' जैसा हमने कहा नाबाम राबिया बर्सेज डिप्टी स्पीकर और बात दिल्ली की नहीं है, कहीं भी, जहां कहीं भी हाउस को चाहे वो लैफ्टिनेंट गवर्नर हो, चाहे वो गवर्नर हो, अगर हाउस को

मैसेज देना है तो बिना कैबिनेट के रिकमेंडेशन के नहीं दिया जा सकता है। तो इस तरह से ना केवल सदन का अपमान हो रहा है बल्कि दिल्ली का मजाक भी हो रहा है। मैं लगातार देख रहा हूँ कि चाहे वो एक्सीक्यूटिव का काम हो, एलजी साहब वो सारा काम करते हैं जो उनको नहीं करना चाहिए और एलजी साहब वो कोई भी काम नहीं करते जो उनको करना चाहिए। मैं देखता हूँ कि दिल्ली सरकार के कामकाज में उनका direct intervention रहता है। मैं कैसे मान लूं कि एलजी साहब मेरी सरकार के या मेरे मुखिया हैं, मेरी विधानसभा में आते हैं मुझे बुलाते नहीं, वहीं कोई भारतीय जनता पार्टी की विधानसभा में जाएं तो उनके काउंसलर तक को बुलाते हैं, मैं कैसे कहूं। मैं मानता हूँ कि वो संवैधानिक पद है, उसकी गरिमा का सम्मान करना चाहिए, लेकिन एक व्यक्ति जो लगातार उस पद की गरिमा के खिलाफ काम कर रहा है, लगातार पार्टीसन काम कर रहा है, लगातार ऐसा लग रहा है कि वो किसी पार्टी का एजेंट है, कैसे दिल्ली की जनता मानेगी कि वो दिल्ली के एलजी और संवैधानिक पद की गरिमा को मेंटेन कर रहे हैं। उनके तीन काम थे। पहला काम था लॉ एण्ड ऑर्डर, कल ही खान मार्केट में एक व्यक्ति को चाकू मार दिया और उसकी डेथ हो गई। आए दिन इस तरह की घटना हो रही हैं, पूरी दिल्ली में हर गली में नशा बिक रहा है और दिल्ली नशे का शहर बनता जा रहा है। तरह–तरह का, अब लोग रेप कैपिटल कहने लगे हैं, उस पर एलजी साहब का ध्यान नहीं है। डीडीए का जो काम है, आज डीडीए के कारण पूरी दिल्ली की जमीन अस्त–व्यस्त है, उसकी रखवाली कौन करेगा, किसकी जिम्मेदारी है पता नहीं चल रहा है। एलजी साहब एक बार डीडीए की मीटिंग नहीं बुला रहे हो, किसी क्षेत्र में नहीं जा रहे, हमने जाकर उनको कहा था

कि हमारे यहां डीडीए के इग्नोरेंस के कारण लैण्ड माफिया जमीन कब्जा कर रहा है, एलजी साहब ने अनसुना कर दिया। मैंने उनको जाकर कहा कि मेरी विधानसभा में एक क्षेत्र है जहां हर घर में नशा बिक रहा है, मैं आपके साथ हूँ आप एक मुहिम चलाईये, आप पुलिस को कहिए, एक जगह को अगर नशा मुक्त कर देंगे तो पूरे दिल्ली में मैसेज जाएगा, पूरे दिल्ली में शुरु कर सकते हैं, नहीं किया आपने। हां, कर क्या रहे हैं। मैं जब कभी भी अपने Flood and Irrigation के अधिकारी को फोन करता हूँ तो कहता है जी एलजी साहब के यहां मीटिंग में हूँ, भई तुम्हारा क्या काम है, क्यूं आप डिस्टर्ब कर रहे हो वहां। तो वो सारा काम जो उनको नहीं करना चाहिए वो करते हैं, इससे दिल्ली सरकार का काम काज डिस्टर्ब होता है, जो काम उनको करना चाहिए था वो काम नहीं करते हैं। मैं आज इसी बात को सदन के संज्ञान में लाना चाहता था और मैं बार-बार एलजी साहब को इस सदन के माध्यम से, आपके माध्यम से निवेदन करना चाह रहा हूँ कि दिल्ली में संवैधानिक पद की जो गरिमा है, जो एलजी पद की गरिमा है आप उस गरिमा को तार-तार मत कीजिए, इससे दिल्लीवासी का मजाक बनता है, हम सबका मजाक बनता है। बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदया जी आपने समय दिया।

माननीया अध्यक्षः आप बैठिये दो मिनट मैंने आते ही, बिधूड़ी जी मैंने आते ही व्यवस्था दी थी, शायद आपने नहीं सुना, मैं दुबारा रिपीट कर देती हूँ। मैं दुबारा रिपीट कर दूं, मैंने आते ही इस बात को कहा था, मैं बोल लूं। मैंने आते ही इस बात को बोला था, मैं दुबारा इस बात को बोल देती हूँ कि आज का जो सत्र है, वो बहुत ही विशेष परिस्थितियों में बुलाया गया है और विषय सूचीबद्ध हैं, उन्हीं पर बोलने की अनुमति दी जाएगी। अन्य कोई सा जो भी

विषय होगा वो अनुमति लेकर ही आप बोलेंगे मैं आपके, मैं आपके नियम 55 पर रूलिंग दे दूं।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठिए, मैं नियम 55 पर रूलिंग दे रही हूँ ना। नियम 55 पर रूलिंग दे दें। हां तो उनको, नहीं आप सबकी तरफ से बोलेंगे विजेंद्र गुप्ता जी, नहीं विजेंद्र गुप्ता जी आपको सबकी तरफ से बोलना है, आपके बिधूड़ी जी बोलेंगे, तो भी आप बोलेंगे। महावर जी का विषय मेरे पास आ गया है और मैंने उनको बोला है कि मैं आपको बोलने का मौका दूंगी, लेकिन जब आपको जानकारी नहीं तो आप बार-बार बीच में न बोलें।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः नहीं आप बीच में बोलने का आपको, मैं बिधूड़ी जी से बात कर रही हूँ ना, बिधूड़ी जी से बात हो रही है तो..

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः नहीं तो वो हर बात में बोलेंगे। नहीं आप हर विषय पर बोलेंगे क्या?

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः नहीं हर विषय में बोलेंगे, इतना गंभीर विषय, इतनी गंभीर बात।

...व्यवधान...

श्री मोहन सिंह बिष्टः एक ही निवेदन किया आपसे, कौन से नियम के तहत, कौन से रूल के तहत आप इस बात को रख रही हैं, इतना ही तो कहा।

माननीया अध्यक्षः तो नहीं आप, आप ये बताइये ना कि जब एक व्यक्ति से बात हो रही है, नहीं बात गलत और सही की नहीं है, बात ये है कि बिना परमीशन के आप बोल कैसे सकते हैं। बात सही और गलत को डिसाइड करने वाले आप कौन होते हैं। आप ये तय करने वाले कौन होते हैं कि सही क्या है और गलत क्या है। जब आपसे बात हो रही है तो इन्हें बोलने की जरुरत क्या है, इन्हें चुप कराइये। आप इन्हें चुप कराइये। बताइये। जब तक आप बैठेंगे नहीं तो बात होगी नहीं।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः जब तक, आप ही को पता हैं सारे रूल, आप ही इस सदन के सदस्य नहीं है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः नहीं आपको, आप। क्या पूछा।

श्री विजेंद्र गुप्ताः हाउस को कौन से रूल के तहत आपने।

माननीया अध्यक्षः हां तो बता रहे हैं ना। आपने सवाल पूछ लिया, आपको बता रहे हैं। हां मैं रूलिंग देती हूं, बैठिये।

श्री विजेंद्र गुप्ताः कौन सा रूल है बताइये।

माननीया अध्यक्षः हां मैं बता रही हूँ बैठिये।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः हां तो बैठिये ना। दो मिनट, ऐसा है अभी सारे सदन के सदस्यों ने सुना। समाचार पत्रों के माध्यम से भी पढ़ा है और कल से सुन भी रहे हैं और अभी माननीय सदस्य संजीव झा जी ने बड़ी बारीकी से बताया है कि किस प्रकार से असंवैधानिक तरीके से सदन की मर्यादा और सदन की शक्तियों का हनन करने का पूरा प्रयास किया जा रहा है। मुझे बेहद दुख और खेद के साथ ये कहना पड़ रहा है कि विपक्ष के साथी विपक्ष की जिम्मेदारी निभा रहे हैं, अपने आप के जिम्मेदार सदस्य होने का इनको बिलकुल इस बात का एहसास ही नहीं है, बेहद शर्म की बात है और ये बहुत ही चिंता का विषय है। अगर आपको लगता है कि किस रूल के तहत आज का सदन बुलाया गया है, मंत्री जी बोलना चाहते हों उसके बाद मैं आपको बताउंगी कि किस रूल के तहत आज का विशेष सत्र बुलाया गया है। सौरभ भारद्वाज जी।

श्री सौरभ भारद्वाज (माननीय स्वास्थ्य मंत्री): अध्यक्षा महोदय बहुत-बहुत धन्यवाद। अध्यक्षा जी ये बड़ी गंभीर बात है कि हम सब लोग जो इस हाउस के मेम्बर्स हैं हम सब लोगों को चुनकर ही इसलिए भेजा गया है कि इस हाउस के अंदर जब कोई डिस्कशन हो हम उसमें पार्टिसिपेट करें। मगर कल से जो एलजी साहब ने चिट्ठियां लिखीं, एलजी साहब ने चिट्ठी लिखी माननीय मुख्यमंत्री जी को। उन्हें पता है मुख्यमंत्री जी कॉश्चनिंग के लिए सीबीआई हेडक्वाटर में हैं। मुख्यमंत्री जी तक तो चिट्ठी पहुंचेगी नहीं। उन्होंने ये चिट्ठी मीडिया को दे दी और मीडिया के अंदर इस खबर को प्लांट करने की कोशिश की कि ये जो हाउस है, इसकी जो मीटिंग बुलाई गई है ये गलत तरीके से

बुलाई गई है जोकि मुझे लगता है कि एक गंभीर विषय है। एलजी साहब के दफ्तर से इस तरीके की चिट्ठी का लीक हो जाना बहुत गंभीर विषय है। किसने वो चिट्ठी लीक की और लिखा हुआ है, अच्छा आप देखिए क्योंकि हमने ही नहीं पढ़ी वो चिट्ठी इसलिए हमें नहीं पता कि उसके ऊपर सीकरेट भी लिखा है। जो खबर फिर एलजी के दफ्तर से प्लांट की गई उसके अन्दर वो चिट्ठी जो है वो दे दी गई, उसके जो कंटेंट्स हैं दे दिये गए और मंत्री जो हैं लेजिसलेटिव अफ्रेयर्स के कैलाश जी वो बता रहे हैं कि उस चिट्ठी के ऊपर लिखा हुआ है सीक्रेट। अब आप ये बताइये कि क्या इसकी जांच नहीं होनी चाहिए कि एलजी साहब ने जो चिट्ठी मुख्यमंत्री को लिखी और उस पर लिखा सीक्रेट, मुख्यमंत्री के पास तो वो पहुंची ही नहीं होगी क्योंकि वो तो मुख्यालय में थे। ना उनकी सीकरेट चिट्ठी कोई मुख्यमंत्री के दफ्तर में खोल सकता है, तो चिट्ठी किसने खोली, इसकी जांच होनी चाहिए। ये तो सीधा-सीधा जो है विशेषाधिकार हन्न का मामला है। वो चिट्ठी आपको एन्डोर्स की गई थी। वो चिट्ठी कैसे लीक हो गई। हमारे भाजपा के मित्रें को वो चिट्ठी और उसके कंटेंट्स कहां से पता चल गए। वो चिट्ठी अखबारों को कैसे पहुंच गई और उसके अन्दर क्या कहा गया। उसमें ये कहा गया कि ये जो हाउस है, अध्यक्षा महोदय आप ही इस हाउस को नहीं बुला सकतीं। मतलब कितनी अजीब बात है, आप इस हाउस की गार्जियन हैं। आप नहीं हैं, तो अध्यक्ष जी इसके गार्जियन हैं और जिस रूल बुक की बात कर रहे हैं, रूल पोजिशन की बात कर रहे हैं वो तो स्पष्ट है। उसके अन्दर रूल 17 है Adjournment of the House and the procedure of re-convening.The Speaker shall determine the time when the sitting of the House shall be adjourned sine die or to a particular day or to an hour or part of the same day provided that the

Speaker may, if he thinks fit, call a meeting of the House before the date or time to which it has been adjourned or at any time after the House had been adjourned sine die दूसरा लिखता है। 'In case, the House, after being adjourned, is re-convened under the provison of sub rule 1, the Secretary shall communicate each Member the date, time, place, duration of the next part of the session.' अध्यक्षा महोदया आपको सारे के सारे हक अधिकार दिये गए कि आप जब चाहे एडजॉर्न कर दें, जब तक चाहे तब तक एडजर्न कर दें या अनिश्चितकाल के लिए साइनेडाय के लिए एडजर्न कर दें और आपको अगर लगे तो आपने जब तक एडजर्न किया उससे पहले भी बुला लें। जब आपका मन करे बुला लें। इसमें तो सरकार के विषय में भी नहीं लिखा हुआ कि सरकार कहेगी तो आप बुलाएं। मगर एक संवैधानिक परम्परा है कि सरकार रिकमेंड करती है, उसके रिकमेंडेशन पे स्पीकर जो है वो ये हाउस बुला लेते हैं। अब एलजी साहब ने इसके अन्दर कन्ट्रोवर्सी क्यों क्रियेट की इसको समझिये। एलजी साहब को समस्या ये है कि उनके बिना कहे ये हाउस कैसे कन्वीन हो गया। वो कहते हैं कि भई ये हाउस जो है प्रोरोग कर दो और फिर जब दोबारा बुलाओ तो मुझसे पूछो और मैं ये तय करूंगा कि ये हाउस बुलाया जाएगा कि नहीं बुलाया जाएगा। अध्यक्षा महोदय, ये हाउस हम सबकी तनख्वाह देता है। इन सब बाबूओं की तनख्वाह देता है। एलजी हाउस का खर्चा भी ये हाउस चलाता है। इस हाउस का खर्चा एलजी साहब का हाउस नहीं चलाता, ये हाउस एलजी हाउस का पैसा भी देता है। वहां पर जो अधिकारी काम कर रहे हैं, जो चिट्ठियां बना रहे हैं उनकी तनख्वाह भी ये हाउस देता है। ये हाउस सुप्रीम है। एलजी साहब सुप्रीम नहीं है। ये

गलतफहमी उन्हें कैसे हो गई और इस हाउस के जो भी मेम्बर हैं चाहे वो पक्ष में हैं, चाहे वो विपक्ष में हैं, वो इस चीज को समझें कि वो इस हाउस की सुप्रीमेसी को बनाकर रखें। अपने राजनीतिक कारणों से आप एलजी साहब को सुप्रीम ना बनाएं, वो हैं ही नहीं। संविधान में ऐसी व्याख्या ही नहीं है। अब सवाल ये आता है कि एलजी साहब की तरफ से शाम को भी एक खबर प्लांट की गई और वो खबर जो प्लांट की गई वो खुद ही मतलब ऐसे लोगों से एलजी साहब खबरों को प्लांट कराते हैं, मैं तो नाम भी जानता हूँ, जिससे उनका मजाक उड़ रहा है। हमारा मजाक नहीं उड़ रहा, ना दिल्ली का मजाक उड़ रहा है, एलजी साहब के दफ्तर का मजाक उड़ रहा है। उनका कल का प्लांट किया हुआ कागज क्या कहता है। 'The CM/Cabinet and the Speaker may first decide, if the Cabinet wants to (1) call a one day Session of the Assembly on 17-04 (2) दो ऑप्शन दिये है the Speaker want to re-summon the continuing House, the Speaker want to re-summon the continuing Session of the House which was not adjourned but prorogued ये कब हुआ भई। कहते हैं which was not adjourned but prorogued on 29-03-2023.' मुझे लग रहा है जिससे एलजी साहब ने प्लांट कराया उसको ये ही नहीं पता कि एडजर्नमेंट का मतलब क्या होता है, प्रोरोग का मतलब क्या होता है। वो उल्टा लिख रहे हैं। मतलब उस एडवाइजर की तनख्वाह तो काटनी ही चाहिए, उसको तुरन्त बाहर करना चाहिए। वो तो मजाक उड़वा रहा है। वो कह रहे हैं कि 'it was not adjourned but prorogued on 29-03-2023' भई कब प्रोरोग हो गया। 29.3 को कब प्रोरोग हो गया? हुआ हो तो हमें दिखा दो। या तो हाउस के मिनट्स में आया हो कि प्रोरोग हो

गया। कैबिनेट की रिकमनडेशन आई हो कि ये प्रोरोग हो गया। एडजर्न हुआ है। स्पीकर साहब ने एडजर्न किया है अनिश्चितकाल के लिए तो इसके अन्दर एक झूठी बात हाउस के विषय में कहना ये अपने आप में एक विशेषाधिकार हनन का मामला है स्पीकर महोदया। आप हाउस के विषय में एक झूठ प्रकाशित कर रहे हैं। अखबारों को दे रहे हैं कि आप इसे छापिये और सारे अखबार छाप रहे हैं। अंग्रेजी के कई अखबार मैंने पढ़े उन्होंने जो झूठ सूट उनको बताया गया वो उन्होंने छाप दिया। कैसे छाप दिया भई? ये जो हाउस है ये बहुत पायस है। बहुत सैक्रोसेंक्ट है और हमारे ये जितने लोगों की यहां पर तस्वीरें लगी हैं इनमें से अधिकतर लोगों ने इस हाउस के लिए कुर्बानी दी है, अपनी जान दी है कि इस तरीके का इन्डीपेन्डेंट हाउस बने जिनकी सुप्रीम पावर हो जिनके पास, जिनके नीचे जो है सारी की सारी अफसरशाही हो, जिनके कहने से सारे के सारे हों और आज जो है इस हाउस की जो प्रीविलेजेज है उसके ऊपर सवाल उठाया गया है, वो गलत है। नहीं उठाया जाना चाहिए था और मैं एक और बात बता देता हूँ। ये बात जो एलजी साहब ने कल उठायी, ये सटैल्ड है। एलजी साहब को लग रहा है कि वो दुनिया के पहले एलजी बने हैं। उनसे पहले कई एलजी आए, कई गर्वनर आए, कई राष्ट्रपति आए, आए चले गए। ये सब चीजें सटैल्ड हैं। इनके सवाल आप आज उठा रहे हो। कोई टाइम्स ऑफ इंडिया, हिन्दुस्तान टाइम्स का जो एडिटर है उसको नहीं मालूम, उसने छाप दिया। ये सोच के पता नहीं एलजी साहब ने क्या नई चीज निकालकर बता दी। उन्होंने छाप दिया, मगर गलत छापा। अध्यक्षा महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूँ जैसे संजीव भाई ने भी बताया। ये सिविल रिट पिटीशन सुप्रीम कोर्ट के अंदर लगा था और ऐसे कई लगे। रामदास अठावले वर्सेस यूनियन ऑफ इंडिया सिविल पिटीशन 86/2004 बिधूड़ी जी बैठे हैं वो ये सब समझते हैं। देखिए

इस हाउस के अंदर एक आदमी जो सारे रूल्स रेगुलेसंस प्रोसीजर्स समझता है सारे, उनमें बिधूड़ी जी एक हैं। हमारे बिधूड़ी जी हैं, वो ये सब समझते हैं मगर मर्यादा के कारण पार्टी के साथ बंधे हुए हैं इसलिए जो कुछ चल रहा है कह रहे हैं चलो चलने दो। वो जानते हैं। अब क्या कहता है '14th Session of the 13th Lok Sabha commenced on 2nd December, 2003. The Lok Sabha adjourned sine die on 23rd December, 2003 but, the House was not prorogued अनिश्चितकाल के लिए स्थगित किया प्रोरोग नहीं किया। 2003 में The House was re-convened 29th January, 2004 अगले साल जनवरी में दोबारा से हाउस बुला लिया। which was treated as the second part of the session that has commenced on 2nd December, 2003 जो 2003 का सेशन था दिसम्बर का अध्यक्षा महोदय उसको प्रोरोग नहीं किया गया, एडजर्न सिनेडाय किया गया और अगले साल 2004 जनवरी में दोबारा उसका सेकेण्ड पार्ट बुला लिया। हमारे जो मेंबर ऑफ पार्लियामेंट हैं रामदास अठावले साहब जो अब इनके साथ ही हैं, वो सुप्रीम कोर्ट चले गए। अब उसके अन्दर सुप्रीम कोर्ट ने Constitutional validity चेक की। उन्होंने कहा कि साहब ये जो पूरी की पूरी हाउस की प्रोसिडिंग है, ये ही Constitutionally invalid है जो एलजी साहब भी करने की कोशिश में थे। अब क्या कहा सुप्रीम कोर्ट ने The Constitutional validity of the proceedings of the second part of the session was challenged before the Supreme Court in a writ petition on the ground that it being the first session of the year, the President should have addressed both Houses under article 87 (1) of the Constitution अब हुआ क्या the writ petition was dismissed by the Hon'ble Supreme Court उन्होंने भी यही कहा कि साहब आपने बिना राष्ट्रपति

को बुलाए और उनका एड्रेस कराये दोबारा सेकेण्ड पार्ट कैसे बुला लिया? वो ही जो है हमारे उपराज्यपाल चाहते हैं कि जब-जब सेशन बुलाया जाए उनको कहा जाए कि साहब आप साइन कर दो और फिर वो साइन करने के अंदर आपको पता ही है। वो कहेंगे नहीं आज नहीं मैं कल करूंगा, कल नहीं मैं परसो करूंगा, मैं नहीं करूंगा। बजट में ही आपने देखा कि क्या-क्या किया गया। उनको समस्या सिर्फ इतनी है कि ये जो चुने हुए विधायक हैं ये कैसे अपना सेशन कर पा रहे हैं और स्पीकर के पास ये पावर क्यों आ गयी कि स्पीकर को जब सही लगता है वो हाउस बुला लेते हैं। स्पीकर महोदया, ये आपकी पावर है और ये किसी एलजी, किसी प्रधानमंत्री ने नहीं दी, ये देश के संविधान ने आपको पावर दी है। आपके पास है और ये पूरा हाउस आपके साथ है। धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः बहुत-बहुत धन्यवाद मंत्री जी। मंत्री जी के बोलने से पहले मैं एक बार आप ही की बात का जवाब दे रही हूँ। मंत्री जी के बोलने से पहले विपक्ष के माननीय सदस्य विजेन्द्र गुप्ता जी ने सवाल किया था कि आज का सदन किस रूल के तहत बुलाया गया, किस अनुच्छेद के तहत बुलाया गया। तो माननीय सदस्यगण, माननीय उपराज्यपाल महोदय ने इस सत्र के आयोजन के संबंध में माननीय मुख्यमंत्री जी को एक नोट लिखा। नोट की एक प्रति विधान सभा सचिव को भी भेजी गई है। माननीय उपराज्यपाल महोदय की राय है कि आज चौथे सत्र के दूसरे भाग का आयोजन कैविनेट निर्णय संख्या 3115 दिनांक 14 अप्रैल, 2023 के अनुरूप नहीं है और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के वैधानिक प्रावधानों से भी असंगत है। इस संबंध में मैं माननीय सदस्यों को यह सूचित करना चाहती हूँ कि विधान सभा सचिवालय को शनिवार दिनांक

15 अप्रैल, 2023 को विधि विभाग के माध्यम से आज अर्थात 17 अप्रैल, 2023 के लिए एक दिवसीय सत्र आयोजित करने के संबंध में कैविनेट निर्णय संख्या 3115 दिनांक 14 अप्रैल, 2023 को प्राप्त हुआ। यह एक सामान्य प्रक्रिया है। चूंकि 29 मार्च 2023 को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित किये गये चौथे सत्र के सत्रवसान की कोई सिफारिश नहीं की गई थी, इसीलिए माननीय अध्यक्ष ने दिल्ली विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्यसंचालन नियमों के, नियम सुन लीजिएगा विजेन्द्र गुप्ता जी, नियमों के नियम 17 भाग (2) के तहत चौथे सत्र का दूसरा भाग बुलाया है। तदानुसार माननीय सदस्यों को समन जारी किया गया। दिल्ली विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के नियमों के नियम 17 के तहत माननीय अध्यक्ष के पास सदन को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित किये जाने के बाद किसी भी समय सदन की बैठक बुलाने की शक्ति है। हालांकि प्रचलित संसदीय परम्पराओं के अनुसार अध्यक्ष केवल मंत्रीमंडल की सिफारिश पर ही सदन की बैठक बुलाते हैं। लोकसभा सहित सभी विधान सभाओं में ये ही परम्परा है। लोकसभा के प्रक्रिया नियमों के नियम 15 में लोकसभा अध्यक्ष को समान शक्तियां प्रदान की गई हैं। 'रामदास अठावले बनाम भारत संघ' के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सत्र के दूसरे भाग की कार्यवाही की वैधता को बरकरार रखा जिसे 29 जनवरी, 2004 को फिर से बुलाया गया था। वास्तव में श्री विजेन्द्र गुप्ता जी, माननीय सदस्य ने भी हमारी विधान सभा के पार्ट सेशन को माननीय उच्च न्यायालय में चुनौती दी थी लेकिन उन्हें कोई राहत नहीं मिली। माननीय उपराज्यपाल महोदय ने भी यह देखा कि दिल्ली विधान सभा की प्रक्रिया नियमों के नियम 15(1) के तहत सत्र के दौरान प्रस्तावित किसी विधायी कार्य का कोई संकेत नहीं दिया गया है। नियम 15(1) स्पष्ट रूप से कहता है कि

ये अध्यक्ष है जो माननीय मुख्यमंत्री के परामर्श से सदन के कार्य का निर्णय करेंगे। जो माननीय उपराज्यपाल महोदय की इन मामलों में कोई भूमिका नहीं है। सभी बैठकों में विधायी कार्य होना भी आवश्यक नहीं है। दिल्ली के लोगों को प्रभावित करने वाली अविलंबनीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए पहले भी सदन को कई बार बुलाया गया है। मुझे आश्चर्य है कि स्पष्ट वैधानिक प्रावधानों और माननीय न्यायालयों के निर्णय के बावजूद माननीय उपराज्यपाल महोदय ऐसी प्रथाओं में क्यों लिप्त हैं जो उनके संवैधानिक पद के अनुरूप नहीं है। उपराज्यपाल तथा उनके कार्यालय को ये समझ लेना चाहिए कि उन्हें कोई प्रतिरक्षा नहीं मिली हुई। उपराज्यपाल कोई राज्यपाल नहीं है। उपराज्यपाल के इस नोट को किसी को भी हमारे पास पहुंचने से पहले ही मीडिया में शेयर किया जा चुका है। मैं इस मामले को जांच के लिए विशेषाधिकार समिति को सौंपती हूँ। समिति इसकी जांच करें और उस संबंध में रिपोर्ट दे कि क्या उक्त मामले में विशेषाधिकार हनन और सदन की अवमानना हुई है या नहीं तथा उपराज्यपाल महोदय को समिति के समक्ष उपस्थित होने के लिए सम्मन दिये जा सकते हैं या नहीं। तो मुझे लगता है, विजेन्द्र गुप्ता जी, मैं पहले बोल लूं, आपको मैं बोलने का पूरा मौका दूंगी। मैंने बहुत ही सरल और साफ शब्दों में आपके प्रश्न का सदन के समझ जवाब दिया। चूंकि आप अपने खुद के अधिकार पर प्रश्नचिन्ह खड़े कर रहे हैं, आप किसी और पार्टी के सदस्य होने से पहले इस सदन के सम्मानित सदस्य हैं, एक बार नहीं दो–दो बार। तो आप अगर अपनी शक्तियों के हन्न की कुप्रथा आज से चलाने का प्रयास करेंगे तो फिर तो आपका भविष्य किस ओर जा रहा है उस पर तो बहुत बड़ा प्रश्नचिन्ह है। हाँ जी, बोलिये क्या कहना चाहते हैं।

श्री विजेंद्र गुप्ताः अध्यक्षा जी, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि ये हमारा इस असेंबली का चौथा वर्ष है और सामान्यतः हर वर्ष एक ही सत्र बुलाया जा रहा है और उसको पार्ट में एक इन्टेंशन के साथ रूल 5 का खुलेआम उल्लंघन किया जा रहा है। ये इसके पीछे की जो मानसिकता है 'summoning of the Houses' का 'सभा का आह्वान' इसका खुले रूप से उल्लंघन हो रहा है। मेरा साफ रूप से और स्पष्ट रूप से कहना है कि 17 की जो बात की जा रही है और जो लोकसभा का हवाला यहां किसी पढ़े-लिखे, कम पढ़े-लिखे मंत्री ने दिया है वो लोकसभा के नियम और कानून हो सकते हैं। जब तक कि लोकसभा के रूल बुक को हम यहां ना देख लें और उसको ना समझ लें। लेकिन हमारी रूल बुक जो है, ठीक है।

माननीया अध्यक्षः बोलने दीजिए।

श्री विजेंद्र गुप्ताः और लोकसभा में कितनी बार ऐसा हुआ है कि कोई सदन का आह्वान हुआ हो और साल भर पार्ट्स में चलाया गया हो। ये तो यहीं हो रहा है। अभी पिछले तीन साल में नहीं पिछले आठ साल से तो मैं खुद इस बात का चश्मदीद हूँ। हमारे ओम प्रकाश शर्मा जी को एक सत्र में बाहर किया गया और ये डेढ साल तक दो सत्र के लिए, और ये डेढ साल तक सदन में नहीं आ पाये क्योंकि सत्र का निर्वासन हुआ ही नहीं। अभी जो रूल 17 की बात की जा रही है उसमें भी बड़ा स्पष्ट लिखा है कि 'सदन का स्थगन और पुनः समवेत करने की प्रक्रिया'। ये साइनडाय जो होता है ये किसी पर्टिकुलर विशेष परिस्थितियों में होता है। इस बात को ध्यान में रखकर के कि एक पर्टिकुलर डेट और डे, हा हा हा हा, वाह वाह वाह।

माननीया अध्यक्षः आप बोल लेने दीजिये संजीव झा जी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः पूरे सदन का मजाक बना रहे हो आप लोग। मजाक बना दिया है असेम्बली का। अपने पोलिटिकल एजेंडे के लिये सदन बुलाते हो। कोई दिल्ली की चर्चा यहां नहीं करते, दिल्ली में दो बड़ी घटनायें हो गयी, बिल्डिंग कलैप्स हो गयी।

माननीया अध्यक्षः गुप्ता जी विषय पर आईये।

श्री विजेंद्र गुप्ताः सिलेंडर फटने से लोग मर रहे हैं, हास्पिटलाईज हैं कोई चर्चा नहीं यहां। हमें बोलने तक नहीं दिया जा रहा। वो उस पर मंत्री का ध्यानाकर्षित तक नहीं करने दिया जा रहा। और यहां पर सदन बुलाकर सदन का मजाक बनाना 17 रूल साफ रूप से कहता है 'The Speaker shall determine the time when a sitting of the House shall be adjourned sine die or to a particular day or to an hour or part of the same day' ये साइनेडाई किसलिये होता है? ये होता है किसी पर्टिकुलर परपज से। ये आपने प्रैक्टिस बनाई है प्रैक्टिस, ये प्रैक्टिस में 17 लागू नहीं होता। आप रूल 3 का खुले रूप से उल्लंघन कर रहे हैं। अगर आपको सदन बुलाना है, आपको एक प्रक्रिया को अडॉप्ट करना चाहिये, कैबिनेट की मीटिंग हो, उसमें सदन की तारीख तय हो, उप राज्यपाल की अनुमति हो और सदन की मीटिंग हो, क्या दिक्कत है? क्या दिक्कत है, ये भारत का संविधान कहता है आपने 8 साल से यहां सदन का मजाक बनाया हुआ है। और जो ये रूल 17 का यहां हवाला दिया जा रहा है इसका और जो अदालत का मामला अटका रहे।

माननीया अध्यक्षः संजीव झा जी। बोलने दीजिये।

श्री विजेंद्र गुप्ताः अदालत का कौन सा फैसला आया है बताईये आप? आप फैसला रखिये न। मेरे मामले में कौन सा फैसला, दिखाईये। आप दिखाईये न।

माननीया अध्यक्षः संजीव झा जी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः कोई फैसला हो तो दिखाईये। और अभी भी मेरी एक एप्लीकेशन कोर्ट में विचाराधीन है जिसमें ओम प्रकाश शर्मा जी भी मेरे साथ में पीटिशनर हैं। अभी बहुत जल्द मैं चाहूंगा उसका भी फैसला आये कि किस तरह ये सदन उपराज्यपाल की गरिमा को ठेस पहुंचाने के लिये आए, दिन संवैधानिक व्यवस्था को ठेस पहुंचाने के लिए इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। ये पूरी तरह गलत है और हमारा ये कहना है कि विशेष सत्र कोई नहीं होता, इसमें कहीं कोई वर्ड यूज नहीं हुआ। 17 में भी जो बात की गयी है वो भी बहुत साफ है और इसमें भी यही कहा गया है कि अगर सदन की बैठक अनिश्चित काल तक के लिये स्थगित हो या किसी विशेष दिन अथवा किसी विशेष समय उसी दिन के लिये, कोई पर्टिकुलर डे डिसाईड तो करिये। आप अगर साइनेडाई कर रहे हैं तो आप कोई रिजन तो दीजिये लेकिन आपने प्रथा बना ली, साल में एक बार सदन बुलाओ और पूरे साल पार्ट में उसको करते जाओ और जब मन हो तब बुला लो। दिल्ली के मुद्दों पर चर्चा मत करो, अपनी राजनीति करो और चले जाओ।

माननीया अध्यक्षः अब मैं आपकी बात का जवाब, संजीव झा जी।

श्री विजेंद्र गुप्ताः यह सदन की बैठक पूरी तरह से असंवैधानिक है मैं और हमारा विपक्ष के सभी सदस्य इससे असहमत हैं।

माननीया अध्यक्षः चलिये, विजेंद्र गुप्ता जी बहुत बहुत धन्यवाद विजेंद्र गुप्ता जी। राजेश।

श्री दिलीप पाण्डेयः यहां पे 30 सैकिंड मैं लेना चाहूंगा। विजेंद्र गुप्ता जी बहुत समझदार आदमी हैं और

माननीया अध्यक्षः संजीव झा जी।

श्री दिलीप पाण्डेयः मैडम मैं इनके साथ मैं ऑनेस्टली बताउं मैं।

माननीया अध्यक्षः ये गलत बात है।

श्री दिलीप पाण्डेयः सौभाग्य है मेरा कि मैं।

माननीया अध्यक्षः एक दिन का सत्र है बहुत महत्वपूर्ण विषय है।

श्री दिलीप पाण्डेयः 30 सैकिंड बस एक छोटी सी चीज क्लेरिफ्राई करनी थी। मैं कोई कानून का विद्यार्थी नहीं हूं। मैंने मास्टर्स की हुई है कंप्यूटर एप्लीकेशन में, मेरी डिग्री असली भी है। मैं गुप्ता जी के साथ डीडीए में मेंबर, बहुत पढ़े लिखे हैं, बहुत लर्न्ड और बहुत ही तैयारी के साथ कोई बात कहते हैं। मैं विधि विशेषज्ञ नहीं हूं, सौरभ भाई तो बल्कि लॉ के जानकार हैं। मैं खाली दो शब्दों के मायने एक बार क्लेरिफ्राई करना चाहता हूं एडजर्नमेंट और साइनेडाई। और जो प्रोरोगेशन होता है सहज और सरल अंग्रेजी भाषा में अगर हम इसको एक्सप्लेन करने की कोशिश करें साइनेडाइका मतलब होता है, हां हिंदी बता रहा हूं मैं। एडजॉर्नमेंट सिने डाई जो होता है उसका मतलब होता है कि आप सीटिंग को ऐंड कर रहे हो। आप सेशन को एंड नहीं कर रहे हो। जब आप प्रोरोगेशन की बात करते हो तो आप सेशन को एंड कर रहे

हो और साइनेडाइका मतलब ही होता है 'अनिश्चितकालीन' और उसमें कोई कंडीशन नहीं है, कोई टर्म्स नहीं है कोई स्टार मार्क नहीं है। तो मैं सदन के सामने खाली दोनों शब्दों के मायने स्पष्ट कर रहा था । बाकि सब समझदार हैं, अपनी राजनीतिक बाध्यतायें हैं, सीमायें हैं उसका उल्लंघन गुप्ता जी नहीं कर पा रहे वो एक अलग बात है।

माननीया अध्यक्षः चलिए बहुत-बहुत धन्यवाद। हाँ मैं आपको समय दूंगी। आप दोनों को मैं समय दूंगी, आप बैठ जाइये सूचिबद्ध तरीके से मुझे सदन चला लेने दीजिए। समय को अगर आप बचायेंगे तो समय आप ही को मिलेगा। अजय महावर जी बैठ जाइये। दिल्ली में अभूतपूर्व स्थिति जहां केन्द्र सरकार सीबीआई और ई.डी. जैसी एजेंसियों का दुरूपयोग कर रही हैं ताकि मुख्यमंत्री को तुच्छ आधारों पर गिरफ्तार करके दिल्ली सरकार को अस्थिर किया जा सके। इस पर अल्पकालिक चर्चा प्रारम्भ करेंगे राजेश गुप्ता जी। आपको मैं इसके बाद समय दूंगी। राजेश गुप्ता जी। राजेश गुप्ता जी शुरू करें। बिधूड़ी साहब, मैं चाह रही थी इस चर्चा, हाँ मैं उसी पर आ रही हूँ। मैं चाह रही थी कि इस चर्चा के बाद मैं आपको मौका दूं अगर समय बचा तो लेकिन अगर आपको प्रारम्भ में ही व्यवस्था चाहिए तो मैं व्यवस्था दे देती हूँ। आप बैठ जाइये। आपको समय मैं बिल्कुल दूंगी और आपका विषय मेरे पास है। मेरे पास विषय है मैंने इसे पढ़ा भी है और मैं चाहती हूँ कि समय बचे तो मैं आपको इस विषय की चर्चा के लिए अनुमति दूं। तो आपको व्यवस्था तो खुद बनानी पड़ेगी ना। राजेश गुप्ता जी शुरू करें।

श्री राजेश गुप्ताः अध्यक्षा जी, जैसा कि आप लोग देख ही रहे हैं दिल्ली के अंदर जो हालात पिछले कुछ दिनों से बनाये गए हैं। मैं या मेरे सभी साथी, जब हम छोटे थे तो बार-बार रामलीलाओं में जाया करते थे और ये सोचते थे कि ठीक है मनोरंजन हो रहा है। झूले झूल रहे हैं, तीर-कमान खरीद रहे हैं। आपस में गदा युद्ध बच्चे कर रहे हैं। लेकिन फिर जब बड़े हुए तो बात दिमाग में ये आई कि हर साल क्यूं करते हैं। इस रावण को आप हर साल फूंकते हो, भई क्यूं फूंकते हो। ना जाने कब से फूंका जा रहा है, मेरे टाइम में रहा, मेरे पिताजी, मेरे दादा जी, सदियों से इस रावण को फूंका जा रहा है। शायद ये बार बार बताने के लिये कि भगवान राम ने जब रावण से पूछा कि आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन कौन है तो उन्होंने कहा हे राम, आदमी में 5 दोष होते हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। पहले के 4 में फिर भी कोई फायदा हो सकता है लेकिन जो 5वां है आपके अंदर से पनपेगा और आपका नाश कर देगा और वो है अहंकार। कबीर ने एक दोहे में कहा 'एक लाख पूत, सवा लाख नाती, न रावण घर दिया न बाती।' जिसके एक लाख बेटे थे, जिसके सवा लाख पोते थे उस घर में कोई दिया जलाने वाला नहीं बचा क्योंकि उस व्यक्ति की मत मारी गयी। उसे ये घमंड हुआ कि मेरा दल बहुत बड़ा है, दुनिया का सबसे बड़ा लिखते हैं। मेरे पास बहुत सारे लोग हैं, कोई नहीं बचता उस अहंकार में, सबकुछ खत्म हो जाता है। बहुत ही अजीबोगरीब घटनाक्रम चलते रहे। पर कभी कभी लगता है कुछ घटनाक्रम करे किस लिये गये हैं। आम जनता से पूछिये आप। कहेंगे यार केजरीवाल तो बड़ा ही सीधा सा आदमी है, हमारे बालकों की शिक्षा के बारे में सोच रहा है, फ्री दवाईयों की बातें करता है, महिलाओं के लिए कैमरे की बात करता है,

बसों में फ्री राईड की बात करता है। इसने क्या दोष कर दिया, क्यूं बुला लिया। आम आदमी मोहल्ले में बैठ के कह रहा है कवरिंग फायर है, कवरिंग फायर। कुछ बहुत बड़ी खबरों को छुपाना है। अरे बार बार एलजी साहब की बात करते हैं। मैं अपने दल की तरफ से, मैं अपने दल का एक छोटा सा विध ायक हूं, मैं इनको भरोसा दिलाता हूं हम एलजी की सारी बातें मान लेंगे दिल्ली के एलजी की, सारी बातें, आप जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यपाल की एक बात मान लो भाई साहब। एक बात। एक बार मान जाओ। जो सीआरपीएफ के जवान मरे थे उन्हें मरने दिया गया। कहा गया कि इनको एयर लिफ्ट कराना चाहिये लेकिन गृह मंत्रालय ने ध्यान नहीं दिया और जब राज्यपाल ने कहा कि ये हमारी कमी है, हमारे लोग मारे गये, तो कहते हैं आप चुप रहिये। सिर्फ एक बात मान जाओ। आप एक बात मान लो, मैं अपने पूरे दल की तरफ से आपसे वादा कर रहा हूं हम एलजी की सारी बातें मान लेंगे यार। लोगों की लाशों पे राजनीति करते हैं। अरे आप बालकों की तरह रो रहे हो कि स्कूल के अंदर क्लास क्यूं लगा दी। अरे जो बच्चा पढ़ना जानता है हम तो बड़े खुश होते हैं जब यहां लगता है, बड़ा मजा आता है हमें। हम अपनी दिल्ली की बातें करते हैं। आप रोते हो स्कूल में क्यूं आना पड़ गया, घर बैठकर, एसी में बैठकर, एसी में बैठना चाहते हो। एक बात नहीं मानी। उन्हीं राज्यपाल ने कहा कि जब वो गोवा में गवर्नर थे तो वहां के मुख्यमंत्री टैक्सी वालों से पैसे वसूलते थे। एक बात मान जाओ न गवर्नर की। मानोगे? नहीं मानोगे। और कमाल की बात है आपने कोई मानहानि की बात भी नहीं की अभी तक। आपने श्रीलंका सरकार पे मानहानि की बात नहीं करी, बुला लो उनको कटघरे में। उन्होंने साफ साफ कहा कि भारत सरकार ने कहा है कि अडानी भारत सरकार है, इनसे

काम कराना होगा। करो मानहानि। आपने कहा हिंडनबर्ग के उपर अडानी केस करेगा, आप लोग यहां खड़े हो हो के चिल्ला रहे थे, कोई केस नहीं किया आपने हिंडनबर्ग के उपर। लेकिन आप एलजी को मोहरा बनाते हुए, अपनी इन एजेंसियों को मोहरा बनाते हुए आप दिल्ली के यशस्वी मुख्यमंत्री के उपर सवाल उठाने की आपने जुर्रत करी। अरे थारे छप्पन ईंच की छाती को तो सबने देख लिया। अरूणाचल के हम रोज अखबार में पढ़ते हैं, बार्डर पे देखते हैं। गंगवाल की घाटी में देखते हैं 56 इंच की छाती का क्या हो रहा है। लेकिन ये जो हमारे ट्रांसफार्मर को आपने हाथ लगाया है न कल, इतने करंट लगेंगे वो दामड़ी में कहते हैं न जैसे पड़ गया न इससे छूटने वाले नहीं हो तुम। दिल्ली में पुलिस आपकी, एलजी आपके, उसके बाद भी हमने प्रदर्शन करे, पूरी दिल्ली ने करे, हमने तो क्या करे पूरी दिल्ली कर रही थी और ध्यान रखना आपकी तरह नहीं करे, रेल नहीं रोकी, बस नहीं जलाई, पंचर नहीं करे, गाड़ियों के शीशे नहीं फोड़े शांतिपूर्ण तरीके से करे हैं। उसमें भी तुमने उठाया। तुमने कैबिनेट के मंत्रियों तक को उठवा दिया। किसलिये करना चाहते हो ये? कहते हो गोवा के अंदर पैसे लगाये हैं, अरे गोवा में एक साल से डांस कर रहे हो आप, किसको पकड़ा आपने, पोस्टर लगाने वाले तक को बुला लिया आपने कि भई पैसे कैसे मिले थे बताना। कहते हैं साहब चेक से मिले। दो हमारे एमएलए हैं वहां पर। आपने कहा यार कांग्रेस के तो सारे ले लिये, 12वां ले लेते, ये दो नहीं टूटते कमबख्त। भाई साहब नहीं टूटेंगे। आम आदमी पार्टी वाले हैं नहीं टूटेंगे। ऐसे नहीं टूटते हमारे। और आपके टूट टूट के कैसे जा रहे हैं कर्नाटक में, दिलीप भाई के पास लिस्ट हो तो बता देंगे। रोज भाग रहे हैं पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व उप मुख्यमंत्री सारे भाग गये। रोज ही जा रहे हैं, मेरे बोलते बोलते चले जायेंगे। सर आपने

एक और केस करा दिया मानहानि का कि डिग्री क्यूं मांग ली। इलेक्शन कमीशन पर सारे हिंदुस्तान के विधायकों को मानहानि का दावा कर देना चाहिये कि भई फिर आप हमारी डिग्री क्यूं मांगते हो। हम भी नहीं दिखायेंगे। देते हैं न? आपने भी दी होगी। ये जो आप ईडी का, सीबीआई का दुरूपयोग कर रहे हो, 8 साल में कितने केस करे आपने 3755, कितने लोगों को प्रूव कर पाये आप, 23, मतलब बीजेपी का कोई ईडी में आता ही नहीं है। क्या वाशिंग मशीन है, सर्फ है कि रिन है कि क्या है भगवान ही जाने। जो आ जाता है वो साफ हो जाता है, क्लीन हो जाता है। और जो दूसरे पक्ष का हो, सारे बेईमान हैं। उद्धव ठाकरे जी आपके साथ थे बहुत बढ़िया थे, आपके खिलाफ हो गये ओहो, काम खराब। ममता जी ने आपके साथ सरकार बनाई, बहुत बढ़िया थी, रेलमंत्री बनाया आपने उनको। आज आप पूरी कोशिश कर रहे हो कि उनकी रेल पटरी से उतर जाये। यही है न? जो आपके साथ आ जाये, भाई बहुत बढ़िया है। आप सुबह 5 बजे सरकार बनाओ बहुत बढ़िया है। नीतिश कुमार, सुशासन बाबू, आपसे अलग हो जायें, कुशासन बाबू। यही है न? क्या कर रहे हो, पूरी दुनिया को क्या संदेश देना चाहते हो? हां महबूबा मुफ्ती, अब वो आतंकवादी हो गयी। कल तक आपकी दीदी थी, बहन जी थी। आप जाकर हररोज सलाम वालेकुम, सलाम वालेकुम वहां बोलते रहते थे। आप किस राम की बात करते हो। अरे जो राम ने कहा वो तो दिल्ली में केजरीवाल जी कर रहे हैं। बच्चों को पढ़ा रहे हैं, बड़े बूढ़ों को फ्री दवाइयां दिलवा रहे हैं, महिलाओं की सुरक्षा तुम्हारी पुलिस नहीं कर रही तो हम कैमरे लगा रहे हैं। क्या दिक्कत है आपको? आप उस आदमी पर रोज सवाल उठाते हो क्योंकि आपको परेशानी है। आपको सिर्फ राजनीति दिखाई देती है। अरे जब इतनी बड़ी बात हो गयी, जब 40 जवान

मरवा दिये सरकार बनाने के लिये, अब कुछ कहने को बचा ही नहीं भाई। पूरी दुनिया में आपने थू थू कराई और आपके 8 साथी आके, जैसे कि अभी कह रहे थे सौरभ भाई कि हमारे बिधूड़ी जी सब समझते हैं। सौरभ भाई महाभारत के अंदर एक भीष्म पितामह हुआ करते थे, मजबूर थे, बंधे हुए थे वो सत्ता के साथ बंधे थे, ये विपक्ष के साथ बंधे हुए हैं। लेकिन बार बार कहते थे अर्जुन विजयी भवः। तो इनको मालूम है कि अर्जुन किस तरफ है। ये जानते हैं ये किनके साथ में बंधे हुए हैं, इनकी मजबूरी है। लेकिन अपने दिल से कहते हैं अर्जुन विजयी भवः। ये सारी बातें समझते हैं। सबको कहते हैं, सारे कहते हैं। ये सारी बातों को समझते हैं और एक बात साफ-साफ समझ लो, रावण के पास में कुछ भी था लेकिन दो वनवासी वानरों की सेना के साथ में उसके अहंकार का नाश कर दिया। महाभारत के अंदर 100 बेटे थे गुरू कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह, कर्ण, लेकिन भगवान कृष्ण ने हथियार भी नहीं उठाये, सिर्फ गाईड करके ही सब काम कर दिया। आज भी यही होने वाला है। आपको जितनी ताकत लगानी है आप लगा लो, उल्टी गिनती चालू करे जा रहे हो और केजरीवाल रूकेगा नहीं, केजरीवाल झुकेगा नहीं। ये बात अब आपके कानों में गूंजती रहेगी। वो कौन सी पिक्चर थी कर्मा? वो कहता है न थप्पड़ की गूंज ऐसे ही आपको जो कल आपने करा है न, ये गूंज रोज आपके आयेगी कि कहां पंगा ले लिया यार, किससे पंगा ले लिया। ये गूंज रोज आपके कानों में आयेगी कि केजरीवाल रूकेगा नहीं, पिछली बार 3 थे पूरी कोशिश करके आप 8 हुए, हमें बड़े अच्छे लगते हो, हमारे तो अंकल हो, दादा की उम्र के हो कई तो। हम आपके चरण स्पर्श करते हैं।

श्री राजेश गुप्ता: लेकिन आप क्यूं उनको छेड़ रहे हो भाई साहब वो बेमतलब पीछे पड़ेंगे आप आठ भी निपट जाओगे। हम आपसे रिक्वेस्ट कर रहे हैं, प्रार्थना कर रहे हैं आप यहीं रहें, हमें अच्छे लग रहे हैं, आप हमारे बड़े हैं। ऐसा काम ना करें नहीं तो शून्य पे कहानी आ जाएगी। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, मैं हाथ जोड़कर विपक्ष के साथियों से निवेदन करता हूं कि वो इस बात को समझेंगे कि दिल्ली में अच्छे काम हो रहे हैं और जो आदमी अच्छे काम कर रहा है उसे करने दो, उसे ना रोको क्योंकि भगवान राम सब देख रहे हैं। जय सिया राम।

माननीया अध्यक्ष: संजीव झा जी।

श्री संजीव झा: बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदय कि आपने मुझे आज बोलने का मौका दिया। मुझे लगता है कि जो कुछ भी पिछले नौ साल में हो रहा है वो इस देश के लिए, इस देश के लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए, इस देश के संविधान के लिए, संवैधानिक संस्थाओं के लिए ठीक नहीं है क्योंकि इतिहास जब हम पढ़ते हैं तो हम देखते हैं कि हिटलर तो गलती करके गया लेकिन उसका नुकसान कई सदियों तक जर्मनी ने भुगता। गलती तो मुसोलिनी ने किया लेकिन उसके कई सदी बाद तक इटली उसका भुगतान करता रहा। अध्यक्ष महोदय, 2014 में देश में बहुत दिनों के बाद बड़ी बहुमत के साथ इस देश की जनता ने एक नई उम्मीद के साथ सरकार को चुना। जब प्रधानमंत्री जी पहली बार संसद आए तो हमने देखा कि संसद की सीढ़ी को सर झुकाकर प्रणाम किया तो ऐसे में देश के लोगों की उम्मीदें जगी कि जो संसद की सीढ़ी पर सर झुका रहा है इसका मतलब है कि इस देश की संवैधानिक व्यवस्था,

लोकतांत्रिक व्यवस्था, संसदीय प्रक्रिया की अब रक्षा होगी लेकिन जैसा मैंने कहा कि जिस तरह से नौ साल में सारी संस्थाओं को तार तार किया गया है वो सब देश के सामने है। आते ही प्रधानमंत्री जी ने दो नारा दिया था, एक कहा था 'सबका साथ सबका विकास', और फिर उन्होंने कहा कि अब टीम इंडिया यानि जो पक्ष हो विपक्ष हो सब मिलकर काम करेंगे जिससे देश आगे बढ़ेगा। हम सबको नई उम्मीदें जगीं कि अब अगर कोई सरकार अच्छा काम करती है तो प्रधानमंत्री उसके साथ खड़े हो जाएंगे, शाबाशी देंगे। अब मुझे लगता है कि इस देश को आगे बढ़ाना है तो प्रक्रिया भी यही होनी चाहिए। सबका साथ, सबका विकास का क्या हाल हुआ है वो तो पूरा देश देख रहा है। मैं अपनी पार्टी का प्रवक्ता हूं, कई बार टीवी पर जाता हूं तो मैं इनके प्रवक्ता से भी पूछता हूं मैं अभी अपोजिशन के हमारे साथी मैं इनसे ही पूछता हूं, आज इनके जरिए बीजेपी के सभी नेताओं से पूछता हूं कि आप अपने दिल पर हाथ रखकर ये कहिए कि जब आप राष्ट्र की बात करते हैं तो क्या 130 करोड़ लोग आपके जहन में आते हैं, अगर आपको राष्ट्र की परिकल्पना करते समय 130 करोड़ लोग अगर आपके जहन में नहीं आते हैं तो फिर देशद्रोही कौन है और मैं दावे से, चूंकि ये लंबा टाईम है, देखिए मैं आंकड़ें देखकर बता सकता हूं कि जब ये राष्ट्र की बात करते हैं तो इनके जहन में इस देश के 130 करोड़ लोग नहीं आते हैं। तो सबका साथ सबका विकास प्रधानमंत्री जी ने कहा लेकिन पूरे नौ साल उसके उलट काम होता रहा। टीम इंडिया की बात इन्होंने किया लेकिन जब टीम इंडिया की बात इन्होंने किया तो हमने देखा कि जो सरकार सबसे अच्छा काम कर रहा है, उसी सरकार को परेशान कर रहे हैं और वो 2015 से ही शुरू हो गया था। 2015 में इसी हाउस में मई में डिस्कशन हुआ

था कि एक चिट्ठी आई थी, संदेश आया था कि किस तरह से सरकार के पावर को कम करना है कि सरकार अच्छा काम कर रही है। इस सदन को सैबोटेज करने की कोशिश की गयी, तो टीम इंडिया की भी जो बात थी वो केवल कोरी कल्पना थी। मैं तो ये देखता हूं कि जब जब जहां कहीं भी चुनाव होता है, चुनाव के समय इनकी सारी एजेंसियां विपक्ष के खिलाफ जांच पड़ताल करने शुरू हो जाते हैं, कई बार ईडी के अधिकारियों से प्रेस के लोगों ने पूछा, वो बोले नहीं, ये महज संयोग है। पर ये महज संयोग कैसे है कि अगर बंगाल का चुनाव होगा तो ईडी वहां पहुंच जायेगा, अगर महाराष्ट्र का चुनाव होगा तो ईडी वहां पहुंच जायेगा, अगर किसी भी राज्य का चुनाव हो उससे पहले वहां ईडी पहुंच जाती है। ऐसा लगता है ये ईडी जो है भाजपा का इलेक्शन मैनेजमेंट डिपार्टमेंट बनकर रह गया है, ये जांच एजेंसी नहीं रह गया। इसी हाउस में दिल्ली के लोकप्रिय मुख्यमंत्री आदरणीय अरविंद केजरीवाल जी ने कहा कि किस तरह से ये बंदूक रखते हैं कान पे कि बंदूक रख दो और अगर आप मान गये तो ठीक, और नहीं माने तो फिर आपको जेल जाना पड़ेगा। आपको याद होगा अध्यक्ष महोदय, जब अभी हाल फिलहाल में महाराष्ट्र में सरकार किस तरह बनायी गयी। पहले ईडी को भेजा गया, ईडी के जरिये विधायकों को परेशान किया गया, नेताओं को परेशान किया गया शिवसेना के और उसके बाद फिर वहां पे सरकार को तोड़ा गया और उसके बाद फिर नई सरकारें बना दी गयी। तो ये महज संयोग कैसे हो सकता है कि शिवसेना का एक नेता एकनाथ शिंदे ग्रुप ज्वाईन करते समय कहा कि हम हालात के हाथों विवश हैं। तो हालात के हाथ क्या विवश थे, उनको डेढ साल पहले जब मिनिस्टर थे तो उनके यहां ईडी पहुंच गया और उनकी 78 करोड़ की संपति को अटैच कर लिया,

लगातार जांच चल रहा था और ज्योंहि एकनाथ शिंदे ग्रुप ज्वाईन किया, क्या हुआ, किसी को नहीं अता पता। तो ये पूरी जांच एजेंसी को आप अपने राजनीतिक फ्रायदे के लिये उपयोग करते हो, आप डराने की कोशिश करते हो, हमने ये देखा कि अचानक ये ईडी का ऐसा क्या प्रकोप हुआ कि बाकी देखिये हालांकि सारी जांच एजेंसी पहले आयकर विभाग को भेजेगा, आयकर विभाग अगर कुछ नहीं कर पायेगा तो फिर सीबीआई को भेजेंगे, सीबीआई कुछ नहीं कर पायेगा तो फिर उसके बाद ईडी आता है। चूंकि इनको लगा कि कई बार हमारे आयकर डिपार्टमेंट हो, सीबीआई हो, या तो दोनों जब फेल हो जाती हैं तो ईडी को भेजा जाता है। और ईडी को इतना एम्पावर कर दिया गया, इतना एम्पावर कर दिया गया कि अब ईडी जो चाहे कर सकता है, जिस तरह चाहे वो आज अपोजिशन को डरा धमका सकता है। हमने देखा कि पीएमएलए एक्ट में सेक्शन 45 को जोड़ा। अब वो सेक्शन 45 में ये कहता है कि अगर मान लीजिये ईडी के अधिकारी पहले सीबीआई या इनकम टैक्स को अगर लगता था कि पीएमएलए में ये केस होना चाहिये तो रेफर करते थे तब उसकी जांच होती थी। सेक्शन 45 में ये कहा गया कि वो किसी भी व्यक्ति को बिना वारंट के कभी भी गिरफ्तार कर सकता है। अगर सेक्शन 45 का अगर कोई संपति पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनको लगता है कि गैरकानूनी तरीके से कमाया गया है तो उसमें कार्रवाई कर सकती है। अगर मान लीजिये पुलिस किसी को सम्मन करता है या पुलिस एफआईआर करता है तो एक्यूज चाहे तो एफआईआर की कापी ले सकता है लेकिन अगर ईडी एफआईआर करेगा तो आप एफआईआर की कापी भी उससे नहीं मांग सकते हैं। ईडी के सामने अगर आपने स्टेटमेंट दे दिया, अगर मान लीजिये सीआरपीसी में पुलिस के सामने, सीबीआई के सामने

अगर आपने स्टेटमेंट दिया और 164 में जाकर के आपने कहा कि जबर्दस्ती हमसे स्टेटमेंट ले लिया गया है तो वो वैलिड स्टेटमेंट नहीं होगा, लेकिन अगर ईडी के सामने स्टेटमेंट आपने दिया तो वो 164 में भी वो उसको चैलेंज नहीं कर सकते हैं। अभी आपने देखा कि दिल्ली में ही आबकारी नीति में ही बहुत सारे लोगों ने ये जाकर के कोर्ट में अपनी प्ली दिया है कि 164 में हमने जो स्टेटमेंट दिया है वो हमसे जबर्दस्ती, धमकाकर, मारपीट कर लिया गया है, हम उसको कंटेस्ट करते हैं और वापिस लेना चाहते हैं। तो इस तरह से ईडी को इतना एम्पावर कर दिया गया, इतना एम्पावर कर दिया गया कि ईडी नहीं हो गया वो ब्रह्मास्त्र हो गया कि ईडी गया तो फिर आप बाहर निकल नहीं सकते। इस तरह से उसको पावरफुल बना दिया। भ्रष्टाचार की बात करते हैं, वो कहते हैं कि दिल्ली में आबकारी नीति में भ्रष्टाचार हुआ और हम भ्रष्टाचार की जांच कर रहे हैं। एक बात बताईये हालांकि अभी हमारे साथी ने जिक्र किया कि जम्मू कश्मीर के गवर्नर थे सतपाल मलिक जी। इनके अपने गवर्नर ने कहा कि जम्मू कश्मीर में भ्रष्टाचार हुआ, जिन जिन व्यक्ति का नाम लिया वो व्यक्ति प्रधानमंत्री के बहुत करीबी हैं, बार बार सतपाल मलिक जी ने कहा भ्रष्टाचार में ये लिप्त हैं। जब वो गोवा का गवर्नर उनको बनाया गया तो उन्होंने कहा कि सबसे भ्रष्ट मुख्यमंत्री गोवा का मुख्यमंत्री है। अगर भ्रष्टाचार से लेनादेना होता तो आप उसकी जांच करते। कर्नाटक के मुख्यमंत्री के बारे में वहां की सरकार के बारे में, वहां के कांट्रेक्टर्स ने लिखकर के दिया कि ये 40 परसेंट कमीशन हमसे मांगा जाता है, अगर नहीं देते हैं तो काम नहीं होता है। वहां पे होर्डिंग पोस्टर लग गये 40 परसेंट कमीशन की सरकार, अगर भ्रष्टाचार से लेना देना होता तो आप उसकी जांच कराते। जिस तरह से एकनाथ शिंदे की

सरकार बनी उसी सदन में जिस सदन में एकनाथ शिंदे की सरकार की शपथ हो रही थी वहां पर नारे लग रहे थे खोखे खोखे, 50 खोखे। अगर आपको भ्रष्टाचार से लेनादेना होता तो आप उसकी जांच करते। तो जैसा सतपाल मलिक जी ने कहा और इस बात से पूरा देश सहमत है कि प्रधानमंत्री को भ्रष्टाचार से परहेज नहीं है।

मननीया अध्यक्षः कंपलीट कीजिए?

श्री संजीव झाः तो फिर दिल्ली में ऐसा क्या हुआ? अध्यक्ष महोदया, दिल्ली में साजिशें की गयी, आज नहीं 2015 से, सरकारें बनते समय जब सरकार काम करने लगी करप्शन के खिलाफ तो पहले एसीबी ले लिया गया, सर्विसिस ले लिया गया। इस तरह से पंगु बना दिया गया कि कोई अगर करप्शन करे तो सरकार चाह कर के भी उसको पकड़ नहीं सकते चूंकि वही एसीबी इनके बड़े बड़े मंत्रियों के गिरेबान तक पहुंच चुका था, इनको पता था। ये भी इतिहास में लिखा जायेगा कि किस तरह से रातोंरात दिल्ली के सचिवालय में जाकर रात के 12 बजे में एसीबी कब्जे में कर लेता है। जब कभी इस बात को दिल्ली इतिहास में लिखा जायेगा तो काले अक्षरों में लिखा जायेगा कि प्रधानमंत्री ने किस तरह से संवैधानिक संस्था को, संवैधानिक व्यवस्था को, लोकतांत्रिक मूल्यों को तार तार किया है। 2015 से तमाम साजिशें कर लीं, पूरा कोशिश किया कि सरकार को पंगु बना दें, विधायक को खरीद लें, आपरेशन लोटस चलाया गया, एलजी के जरिये कोशिश की गयी काम रोकने की, पूरी दिल्ली में ऐसा लगता है कि कोई बाउंसर आ गया हो, ऐसा लगता है कि एलजी,जो आदेश आता है उसी आदेश पर रिएक्ट करने लगते हैं। इन तमाम कोशिशों के बावजूद जो दिल्ली की जनता से अरविंद केजरीवाल जी ने वादा किया था एक

एक वादे पे काम किया, चाहे वो बिजली का हो, चाहे पानी का हो, चाहे शिक्षा का हो, चाहे स्वास्थ्य का हो। जब उस वादे पे काम होने लगा, उससे पूरे देश में एक नयी उम्मीद जगी, पूरे देश के लोग ये कहने लगे कि नहीं, यही माडल इस देश की जरूरत है और अरविंद केजरीवाल जी ने कहा कि हम इस देश को नंबर वन, विश्व का नंबर वन देश बनायेंगे। चूंकि 5-7 साल दिल्ली में काम करते करते लग गया कि शिक्षा में काम करना, शिक्षा को ठीक करना कोई मुश्किल काम नहीं, 10 साल से किसी ने शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी, स्वास्थ्य को प्राथमिकता नहीं दी, चहुंमुखी व्यवस्था नहीं बनाया। तब उन्होंने कहा कि इस देश को हम नंबर वन बनायेंगे। उसका परिणाम हुआ कि दिल्ली से चलकर पंजाब जब गये तो पंजाब में ऐतिहासिक मैनडेट मिला। जब प्रधानमंत्री गुजरात गये तो समझिये, जहां वो 20 साल मुख्यमंत्री रहे, 20 साल के मुख्यमंत्री के दौरान उन्होंने एक स्कूल ऐसा नहीं बनाया जिस स्कूल में जाकर, बैठके सीना चौड़ा करके कहते कि ये है हमारा माडल स्कूल, हम ऐसा स्कूल बना रहे हैं और बनायेंगे। टेंट का स्कूल बनाया। वो गये, कहा हमारे यहां भी माडल स्कूल है, हमारे साथी चुनाव लड़ रहे थे अगले दिन देखने गये कौन सा स्कूल है, पता लगा वो स्कूल वहां से ट्रक में लोड हो रहा है। तो तीस साल में आप एक स्कूल नहीं बना पाये। गुजरात के लोगों ने कहा कि हमें ऐसा स्कूल चाहिये।

माननीया अध्यक्षः चलिये बहुत बहुत धन्यवाद। कंपलीट करिए।

श्री संजीव झाः झारखंड के लोग, छत्तीसगढ़ के लोग, जहां कहीं भी जा रहे हैं, लोग ये कह रहे हैं कि जो माडल आफ गवर्नेंस दिल्ली में है वो माडल आफ गवर्नेंस मिलना चाहिये। तो लगा कि सबसे बड़ा खतरा कौन है?

अरविंद केजरीवाल। अरविंद केजरीवाल पर इन लोगों ने सारे हथकंडे अपना लिये, अरविंद केजरीवाल का बाल बांका नहीं कर पाये, तो सीडी बनाया सत्येंद्र जैन साहब का जिन्होंने स्वास्थ्य का मॉडल दिया। मनीष सिसोदिया जिन्होंने शिक्षा का मॉडल दिया। और उसके बाद उस सीढ़ी पर चढ़ते चढ़ते लगातार एक बार अरविंद केजरीवाल शिकंजे में आ जाये, ये खत्म हो जाये। लेकिन जैसा अभी इन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल अब रूकेगा नहीं। अरविंद केजरीवाल अब झुकेगा नहीं। ये कारवां है जो चल दिया है।

माननीया अध्यक्षः बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री संजीव झाः अब इस कारवां का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। अरविंद केजरीवाल जिन्होंने अपना पूरा जीवन ईमानदारी के नाम, भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था के नाम दिया, अगर भ्रष्टाचार करना होता तो कमिश्नर थे कर लेते। कमिश्नर की नौकरी छोड़कर, झुग्गी में जाकर उसके खिलाफ लड़ते रहे तो उस शख्स पर आरोप नहीं लगा सकते और तुम्हारे कहने से वो भ्रष्टाचारी हो नहीं सकता। तो बस मेरा इतना ही कहना है कि अब ये एक लड़ाई है, ये लड़ाई है एक अहंकारी शासक जिसको ये लगता है कि हम जो चाहें वो कर सकते हैं। उसने कहा 'सबका साथ सबका विकास' और ले लिया सबका साथ, विकास हुआ एक का वो है अडानी। तो अब ये नहीं चलने वाला। अब अरविंद केजरीवाल जी का जो सपना है कि हम इस देश को विश्व का नंबर वन देश बनायेंगे, अब वो सपना पूरा होगा और जैसा ये कह रहे थे अभी कि देखिये कई बार क्या होता है कि मनुस्मृति में कहा गया है कि, ''जब नास मनुष पर छाता है पहले विवेक मर जाता है।'' तो जब आपके दिन बुरे होते हैं न, तब आपके काम बुरे हो जाते हैं। ईश्वर आपकी मति मार लेता है। ईश्वर भी चाहते हैं

कि इस अहंकारी शासक से देश का नुकसान हो रहा है तो ईश्वर इनसे खराब काम करा रहे हैं और इनके इस खराब काम से अरविंद केजरीवाल की लोकप्रियता और बढ़ रही है। और ईश्वर ये चाहते हैं कि 2029 नहीं देश का बदलाव और अरविंद केजरीवाल जी का सपना 2024 से ही पूरा हो। बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः चलिये। कुलदीप कुमार जी।

श्री कुलदीप कुमारः धन्यवाद अध्यक्षा जी। इतने महत्वपूर्ण चर्चा पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया। अध्यक्षा जी, जैसा अभी यहां सीबीआई, ईडी का जिक्र सदन के अंदर हुआ और सबने देखा कि किस प्रकार से एक तानाशाह इस देश की गद्दी के उपर बैठे हुए हैं और वो अपनी तानाशाही के अंदर किस प्रकार से देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री, देश के सबसे सशक्त मुख्यमंत्री और उनकी पूरी टीम और आम आदमी पार्टी, जिन अरविंद केजरीवाल जी को ये देश जानता है कि उनका राजनीति के अंदर जो जन्म हुआ वो भ्रष्टाचार आंदोलन से हुआ, इस देश से भ्रष्टाचार खत्म करने के लिये हुआ और पूरे देश के अंदर उनके नाम की दुहाई दी जाती है क्योंकि सब जानते हैं कि अरविंद केजरीवाल जी ने भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ी है और उसके बाद ये आम आदमी पार्टी खड़ी हुई है। और अरविंद केजरीवाल जी कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं अध्यक्षा जी। अरविंद केजरीवाल जी इस देश की आईआईटी से तो पढ़े ही हैं, साथ में उन्होंने अन्ना आंदोलन से अपनी शुरूआत की, एक आईआरएस थे उस नौकरी को छोड़ा और कहते हैं कि अगर आपको पैसा कमाना हो तो इनकम टैक्स में नौकरी कर लेना करोड़ों-अरबों रुपए कमा लोगे, अरविंद केजरीवाल जी ने उस नौकरी को छोड़ने का काम किया। उसके बाद दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार बनी। कोई गांव का प्रधान बन जाता है, अगर

उससे आप कहो अपनी प्रधानी छोड़ दे, तो बीच में छोड़ने के लिए राजी नहीं होता है। लेकिन दिल्ली की जनता के लिए, दिल्ली के लोगों के लिए उन्होंने अपनी मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़ी और दिल्ली के लोगों ने उनको इतना प्यार और आशीर्वाद दिया किजब पहले 28 सीटें थी और जब दुबारा चुनाव लड़े 2015 में दिल्ली के लोगों के बीच में गए, तो 70 में से 67 सीटें देकर अरविंद केजरीवाल जी को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाया जो ऐतिहासिक था। ऐसा कभी नहीं हुआ। वो कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। उन्होंने सुंदर नगरी की झुग्गियों के अंदर, गली-गली में जाकर, झुग्गियों के अंदर जाकर, राशन माफियाओं के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। उन्होंने उस दर्द को झेला है कि गरीब आदमी को पानी नहीं मिल पाता पीने के लिए। उन्होंने उस दर्द को झेला है कि कैसे एक गरीब, दलित बच्चा झुग्गी में बिना बल्ब के, बिना लाइट के सोता है, उन्होंने इस दर्द को झेला है और उसके बाद जो सरकार बनी तो उन्होंने दिल्ली के लोगों को, चाहे बिजली की बात हो, चाहे पानी की बात हो, चाहे शिक्षा की बात हो, चाहे स्वास्थ्य की बात हो, हर क्षेत्र में उन्होंने अभूतपूर्व बदलाव करने का काम किया क्योंकि उनको पता था, उन गरीब आदमियों का, उन झुग्गी वालों का दर्द वो जानते थे। लेकिन कल उन्हें सीबीआई ने सम्मन किया, सीबीआई ने उनको बुलाया और सीबीआई ने जब बुलाया तो 56 सवाल उनसे पूछे, आज 56 इंच सीने वाले लोग, 56 इंच छाती वाले लोग सीबीआई के पीछे छुपकर वार कर रहे हैं। अरे अगर हिम्मत है और असली में मर्द हो, तो सामने आकर वार करो, सीधा आमने-सामने की लड़ाई करो। अरविंद केजरीवाल डरते नहीं है, अरविंद केजरीवाल जी तो दबने वाले नहीं है। वो एक ऐसे नेता हैं जिनको पूरा देश पसंद करता है क्योंकि उन्होंने 'केजरीवाल मॉडल ऑफ गवर्नेंस' को आज

देश का एक-एक कोना जानता है कि अरविंद केजरीवाल जी ने दिल्ली में क्या बदलाव किए हैं। लेकिन मोदी जी बहुत घबरा गए हैं, प्रधानमंत्री जी बहुत डरे हुए हैं क्योंकि उनको पता है कि आम आदमी पार्टी की लोकप्रियता दिल्ली के अंदर नहीं, दिल्ली के बाद पंजाब भी पहुंच गई और पंजाब के बाद प्रधानमंत्री जी और अमित शाह जी डर तो तब गए जब उनको पता लगा कि गुजरात के अंदर, जो प्रधानमंत्री का गढ़ था, जो अमित शाह का गढ़ था, गुजरात के 40 लाख लोगों ने आम आदमी पार्टी को वोट देकर समर्थन दिया। उस दिन के बाद से उनकी नीवें हिलनी शुरू हो गई अध्यक्षा जी। आज देश ये देख रहा है कि कैसे अरविंद केजरीवाल जी को सीबीआई के माध्यम से, ईडी के माध्यम से खत्म करने की कोशिश की जा रहीहै। और ये सीबीआई और ईडी, ये इतने बड़े धोखेबाज लोग हैं, ये इतने झूठे लोग हैं सीबीआई, ईडी वाले, ये जाकर कोर्ट में झूठा एफिडेविट दे देते हैं। ये जाकर कहते हैं भाजपा के प्रवक्ता, भाजपा के नेता चिल्ला-चिल्ला के कहते थे घोटाला हो गया, दिल्ली के अंदर बहुत बड़ा घोटाला हो गया। 14 मोबाइल फोन बदले गए, 14 मोबाइल फोन। आज मैं डिबेट में जाता हूं तो पूछता हूं भई कितने मोबाइल फोन बदले गए, चुप हो जाते हैं उस मुद्दे पर, बात नहीं करते हैं क्योंकि इनकी पोल खुल गई। जो 14 मोबाइल की बात करते थे, उन मोबाइल में से 5 मोबाइल तो सीबीआई के पास है, जिनको ये कहते थे कि वो नष्ट कर दिए गए हैं। तो ये इतने झूठे लोग हैं, ये कोर्ट में एफिडेविट देते हैं, वहां पर झूठ बोलते हैं जाकर। तो आज पूरा देश इनको देखने का काम कर रहा है। प्रधानमंत्री जी 18-18 घंटे काम करते हैं। भाजपा वाले कहते हैं, बड़े चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं प्रधानमंत्री 18-18 घंटे काम करते हैं। मैं कहना चाहता हूं भाई। काम तो

दीमक भी करती है दिन-रात, काम तो दीमक भी दिन-रात करती है, पर वो निर्माण का नहीं विनाश का काम करती है। आज प्रधानमंत्री जी वो काम कर रहे हैं, वो इस देश को विनाश की ओर ले जाने का काम कर रहे हैं। वो आज देश विक्रेता बनकर काम कर रहे हैं। देश को बेचने का काम कर रहे हैं और किसके द्वारा बेचने का काम कर रहे हैं, अपने ही मुंह बोले भाई अडानी के द्वारा इस देश को बेचने का काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री 18-18 घंटे ये दिमाग लगाते हैं कि मैं कैसे एयरपोर्ट बेच दूं, मैं कैसे पोर्ट बेच दूं, मैं कैसे शेल बेच दूं, मैं कैसे रेल बेच दूं और सबकुछ बेच दिया, सबकुछ बेच दिया इस देश का। 18-18 घंटे काम किया है। लेकिन आज ये देश मुझे लगता है कि जाग रहा है। आपने जो पंगा लिया है वो अरविंद केजरीवाल जी से लिया है और अरविंद केजरीवाल जी, मैंने उनके बारे में बताया की वो ऐसे व्यक्ति हैं कि मुझे लगता है कि अब प्रधानमंत्री जी का, अब भारतीय जनता पार्टी का समय नजदीक आ चुका है। 2024 नजदीक है और देश की जनता जागने वाली है। प्रधानमंत्री जी का जो खुलासा अरविंद केजरीवाल जी ने दिल्ली की विधान सभा के अंदर किया था, आज उसकी चर्चा गांव-गांव तक, गली-गली तक, मोहल्ले-मोहल्ले तक देश के अंदर पहुंच चुकी है और वो चर्चा आज देश के लोग करने का काम कर रहे हैं। और ईडी आज क्या काम कर रही है, ईडी आज क्या काम कर रही है? ईडी आज बंदूक की नोक पर, आज ईडी जो है वो भारतीय जनता पार्टी का इलैक्शन डिपार्टमेंट बन चुका है, प्रधानमंत्री जी कहते थे कि ये सीबीआई जो है, ये कॉग्रेस ब्यूरो इन्वैस्टीगेसन है, लेकिन आज ये सेंट्रल भाजपा इन्वेस्टीगेशन बन चुकी है। ये उनके रूप में काम कर रही है। धमका कर, बन्दूक की नोक पर ईडी बयान लेती है। किसी

की बेटी को, किसी की वाइफ को बैठाकर ईडी एक कमरे में उससे बयान लिखवाती है। कहती है अरविंद केजरीवाल जी का नाम ले दो, क्योंकि उनको पता है कि अरविंद केजरीवाल जी वो व्यक्ति हैं। कंस को भी पता था ये बात। कंस को भी पता था कि श्रीकृष्ण उसका काल बनेंगे और कंस ने अपनी पूरी ताकत लगाई श्रीकृष्ण को खत्म करने के लिए, लेकिन देश जानता है, इतिहास जानते हैं सब लोग कि श्रीकृष्ण दबे नहीं, ये सब जानते हैं और मैं सदन के अंदर कहना चाहता हूं कि अरविंद केजरीवाल भी दबेंगे नहीं, अरविंद केजरीवाल जी दबेंगे नहीं और वो ना झुकेंगे, ना रूकेंगे, वो इसी तरह से।

माननीया अध्यक्षः चलिए कम्पलीट कीजिए।

श्री कुलदीप कुमारः आगे बढ़ते रहेंगे। एक और मैं बात कहना चाहता हूं कि आज जिस प्रकार से देश को ईडी और सीबीआई के माध्यम से कब्जा करने की कोशिश की जा रही है, विपक्ष के नेताओं को दबाने की कोशिश की जा रही है, ये सारे जो ईडी और सीबीआई वाले हैं, ये विपक्ष के यहां ही क्यों पहुंचते हैं भाई। भाजपा में कोई भ्रष्टाचारी नहीं है क्या? अभी मैं पढ़ रहा था। कर्नाटक के अंदर एक अधिकारी था जिसने 4300 करोड़ का घोटाला किया और कल जब भाजपा की लिस्ट जारी हुई कर्नाटक की तो उसके अंदर उसका नाम था, ये कितनी शर्म की बात है। ये इनकी लड़ाई है भ्रष्टाचार के खिलाफ और सीबीआई और ईडी ने जो अभी तक केस रजिस्टर्ड किए हैं, मैं उसके बारे में बताना चाहता हूं। पीएमसी पर 30 मुकद्दमें दर्ज किए हैं अभी तक, आईएमसी पर 26, आरजेडी में 10, बीजेडी में 10, वाईएसआर पर 6, बीएसपी पर 5, टीडीई पर 5, आप पर 4, एआईडीएमके पर 4, सीपीएम पर 4, एनसी पर 3, 95 परसैंटजो केस रजिस्टर्ड किए गए वो सब विपक्ष के दलों

के खिलाफ किए गए। आज मोदी जी चाहते हैं कि वो विपक्ष को खत्म कर दें। यहां हमारे भाजपा के साथी बैठकर कहते हैं, विपक्ष को मौका दो, ये तो 8 ही हैं। वो आज सदन में कितनी संख्या है देख लीजिए। लेकिन आप चाहते हैं कि किसी भी कीमत पर आज विपक्ष के नेताओं को खत्म किया जा सके क्योंकि आज प्रधानमंत्री जी केदिल के अंदर डर बैठ चुका है। उनको पता है कि लड़ाई आसान नहीं है, लड़ाई बहुत कठिन है, 2024 की डगर इतनी आसान नहीं है, अभी तो इन्हें देश के अंदरपता नहीं क्या-क्या कराना पड़ेगा। हो सकता है दंगे भी कराएं, लड़ाई भी कराएं, झगड़े भी कराएं, लोगों को आपस में बांटे, क्योंकि उसके बिना तो सत्ता में ये आ नहीं सकते हैं। अगर ये काम की बात करेंगे तो जिंदगी में कभी कोई भाजपा का स्टेट का मुख्यमंत्री की हिम्मत नहीं है, कि वो अरविंद केजरीवाल जी से काम के मामले में बराबरी करके दिखा दे। काम के मामले में राजनीति दिखा दे।

माननीया अध्यक्षः बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री कुलदीप कुमारः ना शिक्षा में, ना स्वास्थ्य में, ना पानी में ना बिजली में। तो अध्यक्षा जी जिस प्रकार से आज इस देश को ईडी और सीबीआई के माध्यम से दबाने की कोशिश की जा रही है, ये देश दबने वाला नहीं है, इस देश के लोकतंत्रा को, डैमोक्रेसी को बचाने के लिए अगर हम लोगों को, आम आदमी पार्टी का एक-एक कार्यकर्ता बचेगा तो उस लड़ाई को लड़ने का काम करेगा, इस देश के संविधान को, बाबा साहब अम्बेडकर के संविधान को बचाने की लड़ाई जारी रहेगी, संघर्ष जारी रहेगा, जय भीम, जय संविधान। आपने मुझे बोलने का मौका दिया बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः अजय महावर जी। आप ही ने नाम भेजे है ना।

श्री अजय कुमार महावरः धन्यवाद अध्यक्षा महोदय जी। मुझे लगता है कि आज जो सुबह से सदन में चर्चा चल रही है ये रिपीटिशन ऑफ भाषण ज्यादा लग रहा है मुझे। बार-बार, पता नहीं कितनी बार किसी ना किसी तरह से वही-वही भाषण, वही-वही लोग। एक भी बात में मुझे आज नवीनता नजर नहीं आई। और बार-बार दिल्ली विधान सभा का पूर्ण दुरूपयोग इस सरकार के द्वारा हो रहा है। दिल्ली के मुद्दों पर चर्चा से भागती हुई ये सरकार, आज भी मुझे इस बात का दुख है कि ये सदस्य जरूर अरविंद जी के नाम की माला जपकर उन्हें खुश करना चाहते होंगे। लेकिन जिस सीबीआई और ईडी की वो बात कर रहे हैं, तो देश को पता है, इन्हें भी पता होना चाहिये कि आदरणीय गृहमंत्री और आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने भी सीबीआई का सामना किया, उससे भागे नहीं, उसको इवेंट नहीं बनाया, चुपचाप पेश होते थे और अपनी बात करके आज कोर्ट से पाक-साफ, उजली चादर वो देश के सामने आज बैठे हैं। अभी बहुत सारे लोग इकट्ठे होकर सुप्रीम कोर्ट गए, आम आदमी पार्टी भी उसमें थी, ये लोग ये गुहार लगाने के लिए कि देखोये ईडी और सीबीआई से हमको मुक्ति दिलाओ, हम नेता हैं, भ्रष्टाचारी हुए तो क्या हुआ, हम पर कार्रवाई नहीं होनी चाहिये। आदरणीय सर्वोच्च न्यायालय ने उनकी याचिका खारिज करी और ये विपक्ष के गाल पर एक तमाचा था जिसमें ये कहा गया कि जैसे आम आदमी के लिए जांच हो सकती है, वैसे ही आप भी कोई विशेष नहीं है, आपके लिए भी जांच होगी। आप बार-बार कोर्ट को चेलेंज कर रहे हैं, अरे भई अगर लगभग 10-11 महीने से सतेंद्र जैन जेल में हैं, हालांकि जेल में होने के बावजूद, हवाला कांड में बंद होने के बावजूद इस सरकार ने अनैतिक रूप से उन्हें मंत्री बनाकर रखा और वेतन भत्तों का सबका उनको भुगतान देते

रहे। लेकिन बार-बार कोर्ट जमानत याचिका खारिज कर रही है, एविडेंस के आधार के बिना कर रही है क्या? क्या आप कोर्ट को थ्रैट करना चाहते हैं, क्या आप कोर्ट की अवमानना करना चाहते हैं जो बार-बार आप ये कह रहे हैं कि उन्हें गलत ढंग से बंद किया गया है। अभी संजीव झा जी कह रहे थे, अभी है नहीं यहां कि जी भ्रष्टाचार से समझोता करने वाला तो अरविंद केजरीवाल नहीं है। मैं पूछना चाहता हूं और बताना चाहता हूं इस सदन को कि 360 पेज की वो कागज के ढ़ेर कहां है जब शीला दीक्षित के खिलाफ उन्होंने उपयोग में किए थे, सबसे पहले उन्होंने कहा था एफआईआर दर्ज करके उसपर जांच कराऊंगा, आज तक उस पर कोई जांच नहीं हुई, भ्रष्टाचार से समझोता उसी दिन से प्रारम्भ हो गया था। आपने एक पूर्व एलजी का नाम लेकर के अभी फिर याद दिलाया कि लेकिन उस एलजी ने जो पूर्व एलजी हैं पिछला जब बयान दिया था, अधिकारिक रूप से अभी कहा की 'हाँ' मैंने भी जो पिछली बातें कही थी वह झूठ है। तो ऐसे झूठे व्यक्ति के ऊपर आप विश्वास करना चाहते हो, आप क्या कहना चाहेंगे, क्या आप बताएंगे की शरद पवार ने जो इस देश के विपक्ष के माननीय नेता है, उन्होंने भी तो कुछ कहा, उस पर भी बताइए। आपके क्या विचार हैं जो उन्होंने आपके बयानों पर भी और जो आप बार-बार अडानी की बात करते हैं उसके बारे में भी उन्होंने अपनी बात स्पष्टता से रखी। तो क्या आप बताएंगे कि आप शरद पवार के साथ सहमत हैं या नहीं है? बार-बार आप बात करते हैं, मैंने मुख्यमंत्री जी को भी कल कहते सुना है कि देश को नम्बर एक बनने से कोई नहीं रोक सकता, मोदी जी भी रोक नहीं पाएंगे। अरे भई देश को नम्बर एक बनाने में अगर किसी नेता का सबसे बड़ा रोल है तो आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का है। पूरी

दुनिया आज उनको ग्लोबल लीडर मानती है, पूरी दुनिया में उन्होंने भारत की साख को ऊपर किया है और आज।

श्री प्रवीण कुमारः चाइना अंदर आ गया।

श्री अजय कुमार महावरः चाइना को तो धक्के मारकर बाहर निकाल आए। ये हम समझोता नहीं करते, पूरे देश को भरोसा है, तुम्हें भरोसा हो या ना हो, तुम्हें तो कभी होगा नहीं लेकिन पूरे देश को मेरे प्रधानमंत्री पर भरोसा है, जिन्होंने धारा-370 हो या 35-ए हो इसके माध्यम से भी इस देश को एक करने का काम किया है।

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः भईया आप तो मुंगेरी लाल के हसीन सपने देखते रहो।

माननीया अध्यक्षः अजय महावर जी आप विषय पर रहिए।

श्री अजय कुमार महावरः एक एमपी, एक सांसद आपका लोकसभा में नहीं है और आप कहते हो कि वो डर गए, ये डर गए। अरे भईया अभी आप 2029 से 24 पर आ रहे हो, 2050 तक भी यहां कोई वैकेंसी नहीं है, भारतीय जनता पार्टी के नेता ही इस देश में समाज का भला, गरीब का कल्याण और देश का विकास, सबका साथ, सबका विकास करते हुए इस देश को चलाएंगे।

माननीया अध्यक्षः चलिए धन्यवाद, धन्यवाद अजय जी बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अजय कुमार महावरः एक मिनट बस ज्यादा समय नहीं लूंगा। आप ध्यान हटाना चाहते हो शराब घोटाला से, आप ध्यान हटाना चाहते हो क्लासरूम घोटाला से, आप डीटीसी घोटाले से ध्यान हटाना चाहते हो, आप दिल्ली जल बोर्ड पर बोल नहीं रहे, 71 हजार करोड़ से ज्यादा की लाइबिलटी हो गई है और अभी कह रहे थे अरविंद केजरीवाल रूकेगा नहीं। हमारे पंडितजी ने तो पहले ही घोषणा कर दी, वो रूकेगा नहीं जेल जाएगा। तब कहते थे आपने गिरफ्तार नहीं किया जी, मनीष सिसोदिया के यहां कुछ निकला नहीं जी। सतेंद्र जैन को अंदर क्यों नहीं किया जी। अरे जब कर दिया तो आपके पेट में दर्द हो रहा है। जबकि कानून अपना काम कर रहा है। और आप किस अहंकार की बात कर रहे थे। एक वो व्यक्ति आज दिल्ली की इस विधान सभा में खड़ा होकर कह रहा था मैं हूं दिल्ली का मालिक, वो अहंकार है या मेरा प्रधानमंत्री कह रहा था मैं हूं देश का प्रधान सेवक, मैं हूं देश का चौकीदार वो अहंकार के शब्द नहीं थे, ये दिल्ली के मालिक का शब्द अहंकार का शब्द था।

माननीया अध्यक्षः चलिए बहुत-बहुत धन्यवाद अजय महावर जी।

श्री अजय कुमार महावरः मैं उसकी निंदा करता हूं।

माननीया अध्यक्षः अजय महावर जी बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अजय कुमार महावरः मैं एक बात और कहना चाहता हूं अध्यक्षा महोदय, आज दिल्लीवासी जब एक-एक बूंद पानी को तरस रहे हैं, जब दिल्ली के बुजुर्ग पेंशन के लिए तरस रहे हैं, तब उसके लिए ये विशेष सत्र बुलाते तो आज मुझे भी खुशी होती, लेकिन आपने राजनैतिक उपयोग के लिए इस

सदन का दुरुपयोग किया है जिसकी मैं घोर निंदा करता हूं, अध्यक्ष जी आपने बोलने का मौका दिया आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः चलिए जी बहुत-बहुत धन्यवाद। भावना गौड़ जी।

सुश्री भावना गौड़: धन्यवाद अध्यक्ष महोदय। अध्यक्ष महोदय मुझे लगता है कि इतिहास अपने आपको को दोहराता है। आज मेरी आंखों के सामने राष्ट्रीय जीवन का वो जगमगता पृष्ठ उभरकर आ रहा है जब नंद वंश के अत्याचारों से त्रस्त जनता को संरक्षण देने के लिए आर्यश्रेष्ठ चाणक्य ने पावन प्रतिज्ञा की थी और कालांतर में ऐसे राज्य की स्थापना की थी जिसने देश के भीतर स्वर्णयुग का सूत्रपात किया था। अध्यक्ष महोदय, ऐसा लगता है कि दिल्ली में अनडिक्लेयर एमरजेंसी लगी हुई है। केंद्र में बैठी बीजेपी की सरकार ईडी और सीबीआई का दुरुपयोग कर दिल्ली सरकार को अस्थिर करने के लिए तुच्छ आधार पर मुख्यमंत्री को सम्मन भेजती है और उन्हें पूछताछ के लिए बुलाती है। अध्यक्ष महोदय, भारत एक महान देश है। पर नैतिकता के पतन की ओर किस तरह से धंसता जा रहा है ये अपने आप में एक शर्मनाक बात है। आज देश जिस संकट से गुजर रहा है वहां केन्द्र में बैठी हुई भारतीय जनता पार्टी की सरकार अपने आप में समझौतावादी सरकार के रूप में उभर कर आई है। कानून का दुरूपयोग करने वाली कोई सरकार है तो केन्द्र में बैठी हुई भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। ये सरकार केवल एक राज्य के लिए नहीं अपितु पूरे लोकतंत्रा के लिए अपने आप में खतरा बन गई है। अध्यक्ष महोदय, लोग कहते हैं कि कल का दिन जो गया हुआ कल है, बीता हुआ कल है वो इतिहास में काले दिन के रूप में जाना जायेगा। लेकिन अध्यक्ष महोदय मैं तो ये कहूंगी कि कल का दिन प्रधानमंत्री बनने के लिए अरविन्द केजरीवाल जी का उठाया एक पहला

कदम है। मुझे लगता है कि सत्य कभी पराजित नहीं हो सकता। हाँ उसे समझने में थोड़ा सा वक्त जरूर लग जाता है लेकिन सत्य हमेशा शाश्वत रहता है। अध्यक्ष महोदय, राजनैतिक महत्वाकांक्षा अपने आप में कोई बुरी बात नहीं है। लेकिन व्यक्तिगत आकांक्षा की पूर्ति के लिए दिल्ली को राजनैतिक अस्थिरता की कगार पर खड़ा कर दिया जाए तो यह अपने आप में अनुचित है। अध्यक्ष महोदय, कई बार मन में ये विचार आता है, बार–बार ये विचार आता है कि ये सब क्या हो रहा है। केन्द्र में बैठी भारतीय जनता पार्टी की सरकार का हाजमा अपने आप में इतना कमजोर हो गया कि दिल्ली में जब से आम आदमी पार्टी की सरकार आई है शायद हम उन्हें कहीं हजम नहीं हुए। अध्यक्ष महोदय, आम आदमी पार्टी की सरकार को कैसे खत्म किया जाए, कैसे बर्बाद किया जाए उसके लिए किस प्रकार के षडयंत्र रचे जाएं मुझे लगता है कि भारतीय जनता पार्टी का केवल एक सूत्रीय कार्यक्रम रह गया है कि किस तरह से आम आदमी पार्टी की सरकार को दिल्ली से उखाड़कर फेंका जाए। अध्यक्ष महोदय, केन्द्रीय एजेंसियां ईडी और सीबीआई का दुरूपयोग किया जा रहा है और ऐसा लगता है कि दिल्ली में तो इन्होंने तांडव सा मचा दिया है। ये सवाल अध्यक्ष महोदय अब मुझे लगता है सबके मन में आता है कि आखिर ऐसा क्या हो गया कि केन्द्र सरकार ने अपनी सारी ताकत अरविंद केजरीवाल जी को बर्बाद करने के लिए झोंक दी है। अध्यक्ष महोदय, अरविन्द केजरीवाल जी इन्कम टैक्स में ऑफिसर थे। अपनी नौकरी को छोडकर सुन्दर नगर की झुग्गियों के अंदर गए। गरीबों के लिए राशन की लड़ाई लड़ी और एक ऐसा व्यक्ति जो अपने आप को खत्म करके गरीबों की देखरेख करता है, उनके हितों की रक्षा करता है, ऐसे व्यक्ति पर अगर भ्रष्टाचारी होने का आरोप लगाया जाएगा तो मुझे लगता

है कि शायद दुनिया के अंदर कोई इमानदार व्यक्ति नहीं रह जाएगा। अध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात पर गर्व है कि मैं आम आदमी पार्टी का हिस्सा हूं और इसके संयोजक माननीय अरविंद केजरीवाल जी हैं, जिन्होंने भारत को ही अपना सर्वस्व माना है, जिनकी एक-एक सांस लोगों की जिंदगी के लिए समर्पित है और जो केवल देश के लिए ही जीते और मरते हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहूंगी माननीय अरविंद केजरीवाल जी शुगर के पेशेंट है। डाक्टर ने बहुत सारी हिदायतें दी है कि वो तरीके से रहें, टेंशन ना लें। लेकिन उसके बावजूद भी दो-तीन बार उन्होंने स्वयं अनशन किया पन्द्रह-पन्द्रह दिन का और जो उनका एक सपना है कि भारत से राष्ट्र विरोधी ताकतों को खत्म कर भारत को नम्बर वन कैसे बनाया जाएगा वो हमेशा इसी ओर अग्रसर रहते हैं। अध्यक्ष महोदय, वैसे तो भारत के अंदर बहुत बड़े-बड़े राजनैतिक दल रहे। दशकों तक उन्होंने राजनीति की मगर अभी हमारे वर्तमान के प्रधानमंत्री अगर उन्हें किसी से डर सताता है तो उनका नाम माननीय अरविंद केजरीवाल जी है। एक पार्टी, एक व्यक्ति को खत्म करने के लिए अपनी पूरी ताकत का दुरूपयोग करने वाली देश में बैठी केन्द्र शासित भाजपा की सरकार अन्याय कर रही है, जो अपने आप में ठीक नहीं है। अध्यक्ष महोदय, देश को आजाद हुए 75 साल हो गए। केन्द्र में यूं तो कई पार्टियां आई, बहुत बड़े-बड़े बहुमत से भी जीत करके आने वाली सरकारें बनीं, लोगों ने पार्टियों की दोस्ती को भी देखा और राजनैतिक दुश्मनियों को भी देखा लेकिन आज तक राजनैतिक इतिहास में मुझे ये मालूम नहीं पड़ता कि अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने मनमाने ढंग से सरकार का दुरूपयोग करना, सरकारी एजेंसियों का दुरूपयोग किसी सरकार ने किया हो ऐसा इतिहास में कहीं नजर नहीं आता। अध्यक्ष महोदय, अब प्रश्न

ये है कि वर्तमान में क्या हो रहा है। मुझे लगता है कि वर्तमान में बड़ी बेशर्म ऐसी बात हो रही है जिसे हमें यहां कहते हुए भी शर्म आती है और बड़े चीप शब्दों में कहूं तो खुल्लम-खुल्ला नंगा नाच हो रहा है। अध्यक्ष महोदय, ईडी और सीबीआई का गलत तरीके से इस्तेमाल हो रहा है। आम आदमी पार्टी को खत्म करने के लिए खुल्लम खुल्ला दुश्मनी निकाली जा रही है। हम एक छोटे से राजनैतिक दल हैं। भाई हम मैं तो बीजेपी वालों को कहना चाहूंगी हम एक बहुत छोटी सी पार्टी हैं। दो राज्यों में सरकार चला रहे हैं। राष्ट्रीय पार्टी जब से बने है तब से हम इन्हें हजम नहीं हो रहे। हमारी और बीजेपी की तो माना जाए तो तुलना ही नहीं हो सकती और प्रधान मंत्री जी तो स्वयं ही कहते हैं कि हमारा डंका तो तीनों लोक के अंदर बजता है। दुनिया भर के दुश्मनों को छोड़कर एक छोटी सी अदनी सी आम आदमी पार्टी की सरकार के साथ में इस तरह की दुश्मनी जो केन्द्र में बैठी हुई भाजपा की सरकार निभा रही हैं, इससे इनकी मानसिकता का पता चलता है। भाजपा वाले बोलते हैं हम बहुत इज्जतदार लोग हैं तो मैं तो कहना चाहूंगी अध्यक्ष महोदय इज्जतदार लोग भी दुश्मनी भी बड़ी इज्जतदार तरीके से ही निभाते हैं।

माननीया अध्यक्षः कम्पलीट कीजिए भावना जी।

सुश्री भावना गौड़ः लेकिन अब ऐसा लगता है कि ये दुश्मनी निभाते-निभाते बहुत निम्न स्तर तक आ गए हैं। मैं तो कहूंगी भाजपा वालो कहां तक गिरोगे, चट्टान से टकरा रहे हो, चट्टान से और वो चट्टान का नाम है अरविंद केजरीवाल और जितनी बार चट्टान से टकराओगे, तुम्हें चोट ही लगेगी। हम तो बता सकते हैं, बाकी निर्णय तो आप लोगों का ही है। अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय अरविंद जी के लिए चार पंक्तियां कहूंगी कि :

''सच्चाई जीवन को आधार बना देती है,

सच्चाई जीवन को आधार बना देती है,

सच्चाई ठोस संसार बना देती है,

सच्चाई के उत्कर्ष की राह

सच्चाई के उत्कर्ष की राह जब निकलती है,

सच्चाई इंसान को खुद्दार बना देती है।''

अध्यक्ष महोदय, जैसा कि हमारे कुलदीप भाई ने कहा कंस को पता था कि कृष्ण के हाथों उनका वध होना है, उनका अंत होना है लेकिन उसके बावजूद भी उन्होंने हर बार कृष्ण को हानि पहुंचाने के अलावा कुछ नहीं किया और जब-जब उन्होंने हानि पहुंचाई तब-तब भगवान कृष्ण का बाल भी बांका भी नहीं हो सका। अध्यक्ष महोदय, आम आदमी पार्टी आंदोलन से निकली हुई पार्टी है। मुझे लगता है कि ये जो कुछ हो रहा है देश की जनता उस सबको देख रही है। जब देश में इंदिरा गांधी की सरकार थी तो दिल्ली में एमरजेंसी लगी थी। मीसा एक शब्द होता था उसको ले करके कानून बनाया था वो खैर अब तो नहीं है लेकिन मुझे लगता है अध्यक्ष महोदय कि उसका अर्थ केवल एक ही था कि विपक्ष को खत्म कर दिया जाए। जब विपक्ष नहीं रहेगा तो केवल एकमात्र सरकार का अस्तित्व रहेगा। अध्यक्ष महोदय, वर्तमान में भी ये ही सब कुछ हो रहा है। ईडी और सीबीआई अपने आप में एक स्वतंत्रा एजेंसी है। वर्तमान में केन्द्र शासित भाजपा सरकार का इन पर पूर्ण अधिपत्य है। ईडी और सीबीआई जिस तरीके से काम कर रही है लगता है कि दिल्ली

में एक एमरजेंसी का स्वरूप वर्तमान में मिल गया है जो अनडिक्लेयर्ड एमरजेंसी कहूं तो कोई बड़ी बात नहीं होगी। सीबीआई और ईडी केन्द्र सरकार ने जैसे चू-चू का मुरब्बा होता है ना उस तरह काम कर रही है। अध्यक्ष महोदय, अब बीजेपी और सीबीआई तय करेगी कि दिल्ली में किस के खिलाफ मुकदमा चलेगा, कौन जेल जायेगा। अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहूंगी कि यूपी के अंदर भी सरकार है। वहां नकल माफिया चलता है, वहां भूमाफिया है। यूपी के अंदर टीचर्स घोटाला हुआ हमने आज तक वहां सीबीआई और ईडी का कोई रोल नहीं देखा। उनको समझ ही नहीं आता कि यूपी के अंदर क्या हो रहा है क्या नहीं हो रहा। अध्यक्ष महोदय, मुझे लगता है कि बीजेपी में बैठे राजनैतिक लोगों का स्तर, उनका बौद्धिक स्तर अपने आप में बहुत निम्न प्रकार का हो गया। ईडी और सीबीआई का तानाशाही पूर्ण रवैया और ये जांच एजेंसियां जिस प्रकार से लोगों को प्रताडित करती हैं, डराती हैं, धमकाती हैं, जबरन बयान लेती हैं, ऐसा लगता है कि लोकतंत्र का जो स्तर है वो रसातल को कहीं ना कहीं छू गया है। केन्द्र शासित भाजपा के औसत राजनेता मुझे लगता है कि उनकी मानसिकता उनमें तीन प्रकार के घिनौने अभाव का समिश्रण मिलता है। उनमें ना तो बुद्धि है, उनमें ना चरित्र है, उनमें ना तो ज्ञान है। आज इस दशा में ऐसा महसूस होता है कि लोकतन्त्र की हत्या हो रही है। दिल्ली, पंजाब, गुजरात, गोवा और उसके बाद अनेकों राज्यों के अंदर आम आदमी पार्टी की सरकार जिस तरह से काम कर रही है। दिल्ली में हमने स्कूल बनवाये। दिल्ली में हमने अस्पताल बनवाये।

माननीया अध्यक्षः कम्पलीट कीजिए भावना जी। बहुत आपने...

सुश्री भावना गौडः दिल्ली में हमने सड़कें बनवाई, पानी दिया, बिजली दिया, इन्होंने 75 साल में क्या किया, ये अपने आप में एक क्वेश्चन मार्क है अध्यक्ष महोदय और मैं तो एक बात कहूंगी कि एक बार गुजरात में मोदी जी को एक क्लास रूम के साथ में फोटो खिंचवानी थी। बड़े शर्म की बात है उन्होंने टेंट को क्लास रूम की शकल दी और उसमें अपनी फोटो खिंचवाई। अध्यक्ष महोदय, एक लेखक हुए हैं उनका नाम है श्री अरविंद। उन्होंने एक पुस्तक लिखी 'श्री अरविन्द का स्वप्न'। उसमें उन्होंने ये पक्तियां लिखी कि ''भारत माता कोई मिट्टी का ढेला नहीं है, वो अपने आप में एक शक्ति है, वो अपने आप में एक शक्ति है, वो अपने आप में एक देवी है'' और अध्यक्ष महोदय, कहां आज के वर्तमान में भारत का स्वरूप। इसे तो आज के पेशावर राजनेताओं ने नरक के कुंड के अंदर धकेल दिया है ऐसा भारत की जनता महसूस करती है। अध्यक्ष महोदय, एक बात और कहूंगी, बड़े दुख की बात है, बड़ी पीडा की बात है। आज हमारे देश में जो तिरंगा लहरा रहा है, उसके रंग बदल गए हैं। आज उसका रंग काला हो गया। आज उसका रंग लाल हो गया। आज उसका रंग कथई हो गया और मुझे लगता है कि काला रंग धन लोलुपता को दर्शाता है, लाल रंग फीताशाही को दर्शाता है और इसके साथ में कथई रंग भ्रष्टाचार का प्रतीक है। अध्यक्ष महोदय, आज बीजेपी और हमारे प्रधान मंत्री मोदी जी...

माननीया अध्यक्षः भावना जी अब कम्पलीट कर लीजिए। दस मिनट से ज्यादा का समय हो गया है।

सुश्री भावना गौडः बस एक मिनट और लूंगी मैं। आज मुझे लगता है कि बीजेपी और मोदी सरकार केजरीवाल जी को डराना चाहती है, धमकाना चाहती है, उनके बढ़ते हुए कदमों को रोकना चाहती है। अंहकार और सत्ता के नशे में डूबी हुई सरकार, इसको ये समझ लेना चाहिए कि वो ना तो हमें डरा सकती है ना हमें धमका सकती है ना हमें रोक सकती है। ये परिवर्तन की आंधी है। ये व्यवस्था परिवर्तन की आंधी है और ये आंधी यूं ही चलती रहेगी। अध्यक्ष महोदय, बस एक छोटी सी बात को कह कर मैं अपने वक्तव्य को समाप्त करूंगी। अध्यक्ष महोदय...

माननीया अध्यक्षः नहीं बस, बहुत-बहुत धन्यवाद। बहुत-बहुत धन्यवाद भावना जी। ऋतुराज गोविन्द जी।

सुश्री भावना गौडः अध्यक्ष महोदय, मैं केन्द्र शासित भारतीय जनता पार्टी की सरकार को ये कहना चाहूंगी कि...

माननीया अध्यक्षः ऋतुराज गोविन्द जी शुरू करिये।

सुश्री भावना गौडः ये कहना चाहूंगी कि किसी के साथ गलत करके ध्यान से सुनिये भाजपा वाले साथी भी हमारे यहां पर बैठे हैं।

माननीया अध्यक्षः भावना जी कम्पलीट कीजिए बस।

सुश्री भावना गौड़ः कि किसी के भी साथ गलत करके अपनी बारी का इंतजार करना क्योंकि समय के पास हर किसी के कर्मो का हिसाब किताब होता है।

माननीया अध्यक्षः चलिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

सुश्री भावना गौड़: धन्यवाद अध्यक्षा जी। जय भारत।

श्री ऋतुराज गोविंद: पूरे देश में एक अनडिक्लेयर्ड एमरजेंसी है। इसको कहने में कोई वो नहीं है। कौन डराता है दूसरों को। किसी महान व्यक्ति ने कहा है कि जो खुद डरा हुआ होता है, उसका सबसे बड़ा हथियार यही होता है कि वो दूसरों को डराता है। ये डर क्या है? किस बात का डर है? आप लोग सब अडाणी का ग्रोथ रेट तो बहुत पढ़े है, देखें है, सुने हैं कि अडाणी ऐसी ग्रोथ कर रहा है कि 60 हजार करोड़ का जो नेटवर्थ था 2014 में वो 2022 तक आते-आते ग्यारह लाख करोड का हो गया। आज मैं आपको ग्रोथ रेट बताता हूं, ग्रोथ रेट होता क्या है? एक पॉलिटिकल पार्टी जो लगभग 10 साढे 10 साल पहले पैदा होती है। 2013 में अध्यक्ष महोदय, उसको 28 सीट मिलता है और सरकार बनाती है दिल्ली के अंदर। तब तक ये लोग कुछ नहीं समझ रहे, ये हलवा है कभी भी खा जायेंगे इसको लोग। कुछ नहीं है ये सब। वही पॉलिटिकल पार्टी जो 2015 में 67 सीट आ जाती हैं। फिर निगम के चुनाव होते हैं 2017 में तो एक पार्टी को मिलता है 50 सीट निगम में और उसी पॉलिटिकल पार्टी को 2022 में मिलता है 134 सीट। 50 से 134, 28 से 67 फिर 2020 में फिर 62 फिर पंजाब में 2017 में 20 सीट मिलता है और 2022 में 90 सीट हो जाता है। बात समझ रहे हैं। एक पॉलिटिकल पार्टी को गुजरात में मिला था 2017 में मिला था 29 हजार वोट और 2022 में मिला 41 लाख वोट। चण्डीगढ़ में हम लार्जेस्ट पार्टी बन जाते हैं सिंगरोली में हमारा मेयर हो जाता है। गोवा में हमको लाखों वोट मिल जाते हैं। ग्रोथ रेट समझ रहे हैं। दस साल के अंदर हमारी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी हो जाती है जिस वक्त बहुत बड़ी-बड़ी पार्टी को रीजनल स्टेटस दे दिया जाता है। ये डर क्या है इस बात

को दिखाता है। एक कम्पनी का ग्रोथ रेट तो सब जानते हैं। लेकिन एक पार्टी का ग्रोथ रेट समझिये एक लीडर का ग्रोथ रेट समझिये जिसके चलते अफरातफरी मची हुई है इतना डर, इतना डर, इतना डर की रात को नींद नहीं आ रही है और मिर्ची लगी हुई है। ये सीबीआई, ईडी क्या है, सुप्रीम कोर्ट ने कहा था तोता है आज साहब जो मुख्यमंत्री थे सबसे ज्यादा सीबीआई का माखौल वही उड़ाते थे। अभी एक सज्जन कह रहे थे हम सुन रहे थे वो काला कुर्ता वाला बाहर चले गये, कह रहे थे रिपिटिशन ऑफ भाषण हो रहा है इनको नागपुर में ये सिखाया जाता है कि एक झूठ को अगर सौ बार बोलो तो वो सच हो जाता है। पिछले 10 साल से कीचड़ फेंक रहे थे कुछ चिपक ही नहीं रहा था अब ये घोटाला है, घोटाला है, घोटाला है, लिकर घोटाला है, लिकर घोटाला, लिकर घोटाला, अरे ठीक है घोटाला कैसे हो सकता है। अब किसी पॉलिसी के अंदर में अच्छाई या बुराई कर सकते हो की भईया इसकी ये अच्छी बात है इसकी ये खराब बात है, है की नहीं? आप उसको घोटाला कैसे कह सकते हो। अगर घोटाला होता तो ये सेम पॉलिसी पंजाब में लागू होता है और वहां पर रेवेन्यु 41 प्रतिशत कैसे बढ़ गया अगर ये 41 प्रतिशत रेवेन्यु दिल्ली में भी बढ़ जाता तो किसको फायदा होता। शायद 200 यूनिट वाला बिजली 300 यूनिट या 500 यूनिट हो जाता, है की नहीं या हो सकता है कि वृद्धावस्था पेंशन का अमाउंट बढ़ जाता। सरकार की जब आमदनी बढ़ेगी तो उसका लाभ तो जनता को ही मिलेगा ना, पंक्ति में खड़ा हुआ अंतिम व्यक्ति को ही मिलेगा, जिस अन्त्योदय का झंडा इनका श्यामा प्रसाद मुखर्जी कब से उठाकर घूम रहे हैं। इनको झूठ बोलने से मतलब है, इनकी पाठशाला में केवल एक ही चैप्टर है कि एक झूठ को 100 बार बोलो तो लोग सच मान लेंगे

और वही करने का कोशिश इनका बूथ का कार्यकर्ता से लेकर इनका जो आधा निक्कर वाला है जो सुबह-सुबह पार्कों में जाकर भी यही करता है, बूथ वाला भी यही करता है, रात को भी यही करता है 24 घंटा रात को सपने में भी वही बोलते होंगे। हमको तो लगता है सोते वक्त इनकी घरवाली भी डर जाती होगी पूरे टाइम लिकर घोटाला हुआ है, लिकर घोटाला हुआ है केजरीवाल, केजरीवाल रात को सपने में भी केजरीवाल आता होगा। अब घोटाला क्या होता है देखिये, घोटाला होता है जो हेंमत विश्व शर्मा किये असम में वॉटर घोटाला उसके ऊपर में सीबीआई रेड होती है, उसके ऊपर में ईडी होता है वो भाजपा में आ गये तो मुख्यमंत्री हो गये। घोटाला मुकुल भाई ने किया, सुबेंधु अधिकारी ने किया चीट फंड घोटाला... वो भाजपा में आये तो लीडर ऑफ ऑपोजिशन हो गये, एक उपाध्यक्ष हो गये भाजपा के, घोटाला हुआ जो येदुरप्पा ने किया जिसके सामने में हाथ जोड़कर ऐसे खड़े थे वोट के लिये, शिंदे और सिंधिया ने किया। उस शिंदे के बारे में कहता हूं तो रो रहा था कि ईडी है गिरफ्तार कर लेगा। तब जाकर के बोला कि 40 विधायक को लेकर के असम जाओ तुमको मुख्यमंत्री बना देंगे, वो था घोटाला। सिंधिया कैबिनेट मिनिस्टर हो गये, सुखराम टेलीकॉम घोटाला वाला डिप्टी सी.एम. हो गये थे वहां हिमाचल में, ये है घोटाला। घोटाला क्या होता है, एक पूंजीपति जो 60 हज़ार करोड़ का था जिसका नेटवर्थ उसका 2022 में आकर के वो 11 लाख करोड़ का हो जाता है, उसके पोर्ट पर 20 हज़ार करोड़ का ड्रग्स मिलता है और उसकी जांच नहीं होती है, कोई जांच नहीं होती है। हिन्डनबर्ग रिपोर्ट लेकर के आता है दुनिया को दिखाता है की एक पूंजीपति ने किस तरीके से shell companies बनाकर के दुनियाभर के लाखों इन्वेस्टर्स को ठगने का काम किया और जिसके

चलते एलआईसी जैसी प्रतिष्ठित संस्थान जिसके ऊपर में देश का विश्वास है और जो आज तक सबसे प्रोफिटेबल मतलब की कम्पनी के रूप में जानी गई उसका 50 दिन के अंदर में 50 हज़ार करोड़ रुपया डूब जाता है, लाखों लोगों का पैसा डूब जाता है उसकी जांच नहीं होगी, मुद्रा पोर्ट पर 20 हज़ार करोड़ का ड्रग्स कहां से आया उसकी जांच नहीं होगी। एक कम्पनी 60 हज़ार करोड़ से 11 लाख करोड़ की कैसे हो गई इसकी जांच नहीं होगी, हेमंत विश्व शर्मा की जांच नहीं होगी, शुभेंदु अधिकारी की जांच नहीं होगी, मुकुल राय की जांच नहीं होगी, शिंदे, सिंधिया की जांच नहीं होगी जांच होगी सिसोदिया की कि आप स्कूल बनाये, जांच होगी सतेंद्र जैन की क्योंकि मोहल्ला क्लिनिक बनाये उसको देखने के लिये UN ke Kofi Annanvk, सिसोदिया जी के स्कूल को देखने के लिये अमरीका के राष्ट्रपति की पत्नी आई मेलिना ट्रंप, टाइम्स मैग्ज़िन में कभी प्रधानमंत्री का फोटो छपा है, न्यूयार्क टाइम्स में छपा किसका तो दिल्ली के बच्चों का छपा तो एक आदमी जो सत्ता के शीर्ष पर बैठा हुआ है, कुकर्म करके पहुंचा है, उसको ये जो inferiority complex हो रहा है कि यार ये बताओ जिसको हम हलुआ समझते थे उसका फोटो तो न्यूयार्क टाइम्स में छप रहा है और हम लोग इतना बड़ा शासन चला रहे हैं हमारा कोई चर्चा नहीं हो रहा है। तो ये जो डर है ये जो incompetency है क्योंकि जो केजरीवाल मॉडल ऑफ गर्वनेंस है उसको ये कम्पीट नहीं कर सकते हैं, उससे ये लड़ नहीं सकते हैं, औकात नहीं है इनकी क्योंकि एक व्यक्ति को 30 साल समझो गुजरात में जिनका सत्ता है उनको फोटो खिंचवाने के लिये भी फर्जी स्कूल बनाना पड़ा तो जिसके पास फर्जी डिग्री है वो स्कूल कहां से असली बनायेगा बताईये, बात समझ रहे हैं और सबसे ज्यादा पेट में दर्द जो हुआ है वो ये

डिग्री वाला मैटर पर हुआ है। आज तक चल रहा था जैसे वो नहीं होता पाखंडी बाबा, उसके पाखंड का जब तक भांडा फोड़ नहीं होता है, उसका आडम्बर उसके भक्त उसके चर्चा उसका महामाया सब टॉप क्लास होता है और जब उसका आडम्बर फ्रूट जाता है, है के नहीं आसाराम निकलता है तो क्या जाने कौन-कौन बाबा निकलता है, वो कहेंगे तो कंट्रोवर्सी हो जायेगा, तो वो ही आडम्बर इनका है। अब एक प्रधानमंत्री भारत के इतिहास में पहला प्रधानमंत्री हुआ है जो बारहवीं पास भी है कि नहीं उस पर भी डाउट है, उसको भी चैक करना पड़ेगा।

माननीया अध्यक्षः चलिये कम्प्लीट कीजिये झा जी।

श्री ऋतुराज गोविंदः तो प्रॉब्लम यहां है, पेट में दर्द यहां है, ये सीबीआई, ईडीआई कुछ नहीं है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मैंने रोक दिया ना।

श्री ऋतुराज गोविंदः कुछ होता।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मैंने टोक दिया, आप बैठिये।

श्री ऋतुराज गोविंदः अरे महाराज जी।

माननीया अध्यक्षः ऋतुराज जी शब्दों की मर्यादा को समझते हुये कम्प्लीट कीजिये।

श्री ऋतुराज गोविंदः आप मुझे बताईये कि अनपढ़ कौन-कौन नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः आप शब्दों की मर्यादा का ध्यान रखते हुये प्लीज़ बात करें।

श्री ऋतुराज गोविंदः मैंने कहा it is matter of fact madam क्या भारत के इतिहास में कोई बारहवीं पास प्रधानमंत्री हुआ है, कोई आदमी अनपढ़, इतना कम पढ़ा-लिखा हुआ है। तो इसमें गलत क्या बोले। कोई अपशब्द बोले, क्या हमने बोला।

माननीया अध्यक्षः चलिये कोई बात नहीं।

...व्यवधान...

श्री ऋतुराज गोविंदः हमने कहा कि इन्होंने अपने।

माननीया अध्यक्षः आप कम्प्लीट कीजिये।

श्री ऋतुराज गोविंदः क्या मैंने कहा।

...व्यवधान...

श्री ऋतुराज गोविंदः एक सैकेंड रूको।

माननीया अध्यक्षः अभी जब आप।

श्री ऋतुराज गोविंदः क्या मैंने।

माननीया अध्यक्षः अभी आप बोलेंगे, आप अपनी बात रख दीजियेगा, बोल दीजियेगा इतना अच्छा सदन चल रहा है आज सब लोग मर्यादित आचरण में हैं, कम्प्लीट कीजिये, कम्प्लीट कीजिये।

श्री ऋतुराज गोविंदः क्या मैंने कहा सुनो, क्या मैंने कहा मेरा बोलना।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः कोई बात नहीं ऋतुराज जी आप इसे रिपीट मत कीजिये, आप आगे बढ़िये।

श्री ऋतुराज गोविंदः कल दिन भर जेल में थे हम तो गला भी थोड़ा खराब है।

माननीया अध्यक्षः आप आगे बढ़िये।

श्री ऋतुराज गोविंदः तो क्या मैंने कहा कि एक अनपढ़ प्रधानमंत्री अपने कैबिनेट में तड़ीपार मंत्री को रखा है।

माननीया अध्यक्षः बात को रिपीट मत करिये ना।

...व्यवधान...

श्री ऋतुराज गोविंदः मैंने नहीं कहा।

...व्यवधान...

श्री ऋतुराज गोविंदः मैंने नहीं कहा।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः चलिये ऋतुराज जी।

...व्यवधान...

श्री ऋतुराज गोविंदः अच्छा ये बताईये मैंने।

माननीया अध्यक्षः मैं फिर आपको बिठा दूंगी।

श्री ऋतुराज गोविंदः नहीं-नहीं दो मिनट।

माननीया अध्यक्षः तो आप बोलिये।

श्री ऋतुराज गोविंदः मैंने नाम लिया क्या?

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः आप रिपीट नहीं करेंगे।

...व्यवधान...

श्री ऋतुराज गोविंदः मैंने नाम लिया क्या?

माननीया अध्यक्षः रोहित कुमार जी बैठिये, रोहित जी।

...व्यवधान...

श्री ऋतुराज गोविंदः लोग कहते हैं।

माननीया अध्यक्षः रोहित जी।

श्री ऋतुराज गोविंदः लोग कहते हैं।

...व्यवधान...

श्री ऋतुराज गोविंदः और ये।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बंदना जी।

श्री ऋतुराज गोविंदः भईया ये सीबीआई, ईडी करना बंद करो, भारत के अंदर में जितना स्टेट है union Territory है ये पप्पू-गप्पू का खेल बहुत कर लिये पर एक बात याद रखना एक आदमी हमारा नहीं तोड़ पाये ऑपरेशन लोटस को एक बार नहीं पांच बार फेल कर दिये।

माननीया अध्यक्षः चलिये, ठीक है ऋतुराज जी कम्प्लीट कीजिये।

श्री ऋतुराज गोविंदः पांच बार फेल कर दिये और इतिहास गवाह है मैडम स्पीकर।

माननीया अध्यक्षः कम्प्लीट कीजिये।

श्री ऋतुराज गोविंदः अच्छा अभी 10 मिनट कहां हुआ है।

माननीया अध्यक्षः बहुत सारे वक्ता हैं और अगर सबको बोलना है तो अनुशासन सबको बनाकर रखना होगा।

श्री ऋतुराज गोविंदः Madam Speaker only two minutes, they have wasted my time ठीक है अब देखिये दो मिनट में बात खत्म करूंगा। आप एक बात बताईये कोई राह चलता हुआ बेवड़ा नहीं बोला ये लिकर पॉलिसी की बहुत बात करते हैं, इनका ही गर्वनर बोलता है। क्या बोला कि मुख्यमंत्री इनका टैक्सी वाला से पैसा लेता है उसकी जांच हुई क्या, इनका गर्वनर बोलता

है कि PMO में दलाल बैठे हुये हैं जिसका नाम तक लिया, जांच हुई, क्या उसका, हुआ सीबीआई, ईडी? क्या इसकी जांच नहीं होनी चाहिये बताईये? इनका गर्वनर बोला कि PMO में दलाल बैठे हुये हैं, इनका गर्वनर बोला कि इन्हीं के पार्टी का मुख्यमंत्री गोआ का टैक्सी वाला से पैसा लेता है, बात समझ रहे हैं और क्या-क्या बोला उसकी जांच नहीं करायेंगे ये, पुलवामा पे जांच नहीं करायेंगे जो शहीदों, शहीदों की चिताओं की बात है, शहादत की बात है। इतने शहीद मारे गये उसके ऊपर इन्होंने राजनीति की, देश ने देखा और सुनिये भाषण करते थे नेता जी तो पीछे फोटो लगाते थे शहीदों का, इस निम्नस्तर की राजनीति करते हैं ये लोग। ये सीबीआई और ईडी आपको बचाने वाला नहीं है। अब वक्त आ गया है The time has come when the country is going to accept Kejeriwal model of governance.

माननीया अध्यक्षः चलिये बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री ऋतुराज गोविंदः और उसकी शुरूआत हो चुकी है।

माननीया अध्यक्षः बहुत-बहुत धन्यवाद ऋतुराज जी।

श्री ऋतुराज गोविंदः इतिहास गवाह है अध्यक्ष महोदय हर तानाशाह का अंत जरूर हुआ है और दर्दनाक हुआ है।

माननीया अध्यक्षः चलिये, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री ऋतुराज गोविंदः चाहें वो हिटलर हो, मुसोलिनी हो या भारत में भी बहुत सारी हुई है नाम नहीं लेंगे।

माननीया अध्यक्षः चलिये, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री ऋतुराज गोविंदः और आपका भी अंत आ गया है इसीलिये ''जब जब नाश मनुष पर छाता है बुद्धि, विवेक सब मर जाता है'' बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः मोहन सिंह बिष्ट जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया जी, आपने मुझे अल्पकालिक चर्चा में बोलने का मौका दिया इसके लिये मैं आपका आभार प्रकट करता हूं। महोदय, बड़े लम्बे समय इस विधानसभा सत्र को देखा और अल्पकालीन चर्चा में जिस प्रकार से इस चर्चा को प्रारंभ किया गया उसके एक भी बिंदु को छुआ नहीं गया। जहां सीबीआई और ईडी दोनों विषयों को लेकर के और मुख्यमंत्री के तुच्छ आधारों पर गिरफ्तार करने की, इन विषयों पर चर्चा होनी थी। चर्चा उन विषयों पर नहीं हुई। यदि आपने स्पेशल सेशन बुलाया है तो उन पर चर्चा होनी चाहिये थी।यह बहुत बड़ा दुर्भाग्य है कि इस सदन के अंदर विषय युक्त चर्चा नहीं हो रही है, उससे हटकर के चर्चा हो रही है। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि चर्चा उस विषय पर जरूर हो जिसकी वजह से इस हाउस को बुलाया गया है ये मेरा आपसे निवेदन है। अध्यक्ष महोदय वास्तव में ये सदन नियम, संविधान और कायदे और कानून के आधार पर चलता है, इस सदन की एक अपने आप में एक मर्यादा है लेकिन जिस प्रकार से इस सदन को बुलाया गया, ना तो नियमों का ध्यान रखा गया ना संविधान का ध्यान रखा गया, सिर्फ धाज्जियां उड़ाने के सिवाय इसमें कोई काम नहीं किया गया। अध्यक्ष महोदय, मैं मानता हूं कि स्पीकर तो इस सदन के एक मर्यादित सदस्य हैं और उनके आधार पर ये सदन चलता है लेकिन आज मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि ये सदन रिमोट कंट्रोल के आधार पर जिस

प्रकार से चल रहा है इससे बड़ा दुर्भाग्य कुछ नहीं हो सकता है। मेरा सीधा-सीधा कहना ये है मैडम कि दिल्ली के अंदर जो शराब घोटाला हुआ था जिस घोटाले के अंदर आज दिल्ली के अंदर एक भयावह स्थिति बनी हुई है उस पर चर्चा होनी चाहिये, वरना सदन के अंदर किसलिये आते हैं हम लोग, 70 के 70 मैम्बर इसलिये आते हैं की दिल्ली के बारे में चर्चा हो, दिल्ली के अंदर एक अच्छा मैसेज जाये, इस प्रकार की चर्चा होनी चाहिये। अध्यक्ष महोदय, आज हम जिस प्रकार की चर्चाओं को कर रहे हैं, मेरे को लगता है हर बात पर यू-टर्न, लगता है कभी हम केन्द्र के बारे में फिर दूसरे, तीसरे, हमको तो ऐसा लगता है केन्द्र सरकार का फोबिया इस सरकार को मार गया इसलिये ये सदन के अंदर इस प्रकार की बातों को कह रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, दिल्ली की यदि वास्तव में हालत होनी चाहिये, दिल्ली के अंदर पीने के पानी की क्या हालत है। मैं जिस एरिया से चुनकर के आता हूं, मैं पहली बार सदन का मैम्बर नहीं मैडम, मैं पांचवीं बार हूं। आज पीने के पानी की एक बूंद नहीं है वहां, यदि उस बात पर भी चर्चा हो जाती तो निश्चित रूप से मेरे जैसा व्यक्ति तो आपके इस सदन की, आपकी कुर्सी का आभारी रहता। क्यों हुआ घोटाला, उसमें किसने घोटाला किया, कौन था उसके बैक स्पोर्ट में ऐसे लोगों को, घोटालेबाजों को निश्चित रूप से जेल की हवा खानी चाहिये और खिलवानी चाहिये, क्यों नहीं चर्चा होती है पीने के पानी के बारे में, कौन तय करेगा उसके लिये दिल्ली के लोगों के भविष्य को। सरकार 'ए' की हो या 'बी' की हो, सरकार का नैतिक दायित्व बनता है कि वो इन समस्याओं के समाधान के लिये प्लानिंग बननी चाहिये। आज दिल्ली के अंदर पीने का पानी नहीं है, लोग प्यासे मर रहे हैं, मैडम यदि आपका सत्य कहूं तो सुबह हम जब देखते हैं, लोग गालियां

देते हैं भले ही वो किसी को दें। हम जनप्रतिनिधि हैं, हमें भी गालियां मिलती हैं, हम सरकार को गालियां देते हैं क्योंकि हम कर नहीं सकते हैं, हमने हाथ खड़े कर दिये। मेरा सीधा-सीधा कहना है कि ऐसी बातों पर चर्चा हो तो वास्तव में अच्छा लगता है। आज जिन स्कूलों का इसी सदन के अंदर, पूरे देश के अंदर एक हौवा बनाया जा रहा है, साहब, दिल्ली का एजुकेशन का मॉडल देश के अंदर नहीं, विदेशों के अंदर जिसकी गाथा को ये लोग गा रहे हैं, आप देख लीजिये, अब मैं जहां से चुनकर के आता हूं एक बारिश हुई थी, सिर्फ एक बारिश, घुटने-घुटने पानी, बच्चे स्कूल के अंदर नहीं जा सकते।

व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः भई बोलने दीजिये।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः भई बोलने दीजिये।

...व्यवधान...

श्री मोहन सिंह बिष्टः स्कूलों की इतनी।

माननीया अध्यक्षः बोलने दीजिये।

श्री मोहन सिंह बिष्टः अभी तो इनको पेट में दर्द होगा चिंता मत करो महाबल मिश्रा।

माननीया अध्यक्षः कुलदीप जी।

...व्यवधान...

श्री मोहन सिंह बिष्टः अरे मिश्रा जी आपके बाप के साथ कई एमएलए, उनसे पहले एमएलए बना हूं मैं।

माननीया अध्यक्षः विनय मिश्रा जी ये कोई तरीका है, कोई तरीका है ये।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं चर्चा कर रहा हूं अपने एरिया की।

माननीया अध्यक्षः कुलदीप जी कोई तरीका है ये।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आप भी रखिये ना कोई।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः कुलदीप जी अब शांति से बोलने दीजिये।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैडम कोई बात नहीं।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मेरा तो सिर्फ आपसे निवेदन है और मैं जब किसी को डिस्टर्ब करना पंसद नहीं करता हूं यदि कोई हमें डिस्टर्ब कर रहा है ये गलत बात, ये जब यदि हम सरकार में सत्ता पक्ष और विपक्ष पर दोनों एक-दूसरे के पहलू हैं, यदि विपक्ष वाला कोई बात बोलता है जो अच्छी बात है उसको सरकार को भी उसका आंकलन करना चाहिये, वो नाक, कान, आंख का काम कर रहा है इसलिये उसके।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः गलत बात।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः आप इधर–इधर बात मत करो।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आप।

माननीया अध्यक्षः शांत कुलदीप जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं जिस सदन का मैम्बर हूं मैं उस सदन की बात कर रहा हूं जिस सरकार की ड्यूटी बनती मैं उस सरकार से कहता हूं इसलिये मैडम इसमें ज्यादा परेशान होने की आवश्यकता नहीं, उसका चिंतन और मनन करना चाहिये दिल्ली के लोगों का भविष्य, कैसे बच्चों का भविष्य उज्जवल हो उसके लिये हमको काम करना चाहिये। दूसरी बात, मैंने कहा ये आज की चर्चा सीबीआई और ईडी पर लगाई। अरे शराब का घोटाला किस सरकार ने किया। कमीशन 2 परसेंट से बढ़ा करके 12 परसेंट किसने की, कौन थे इसमें वो लोग, दिल्ली को शराब की नगरी बनाने के लिए कौन लोग पहल कर रहे थे। ये केस भाजपा ने नहीं किया। मान लिया दो तो आपके मंत्री जेल में हैं, क्यों जेल में हैं, क्यों जेल में गये वो? यदि उन्होंने भ्रष्टाचार नहीं किया, तो मेरे को लगता है कि वो जेल में नहीं जाने चाहिए, कहीं न कहीं भ्रष्टाचार में लिप्त हैं वो। आज कोर्ट उनकी जमानत नहीं दे रहा, एक साल होने वाला है, किसी को 50 दिन होने वाले हैं। मेरा सीधा कहना है कि इसमें कहीं न कहीं दोषी वो व्यक्ति है, जिसकी शह पर यह सरकार चल रही है। मैंडम हम एक बार भोपाल में गये, उस समय भोपाल के चीफ मिनिस्टर गहलौत जी थे। तो हम आपस में बैठकर बात कर रहे थे। हमने पूछा यार, एक बात बताओ, आपके पास कोई पोर्टफोलियो नहीं है। कहने लगा नहीं। मैंने कहा पोर्टफोलियो वगैरह क्यों नहीं लिया आपने। कहा मैं मॉनिटरिंग कर रहा हूं। मैं मॉनिटरिंग करता

हूं इनकी। आज यदि पोर्टफोलियो के अंदर न होते हुए सरकार के नाक, आंख, कान के बीच में से यदि भ्रष्टाचार हो जाता है तो निश्चित रुप से सरकार का मुखिया भी उतना ही दोषी है, भ्रष्टाचारी है, ये मैं कहना चाहता हूं।

दूध का दूध, पानी का पानी होना चाहिए। दिल्ली का वातावरण खराब नही होना चाहिए। मैडम इन पर चर्चा होनी चाहिए थी। हम चर्चा कभी कहां की कर रहे हैं, कभी किधर की बात कर रहे हैं। आखिर दिल्ली के अंदर ये बात हुई तो क्यों हुई। आज मुख्यमंत्री जी को मान लिया सीबीआई और ईडी नोटिस दे रही है। अरे पूछताछ में यदि पाक साफ है तो जवाब देने में किस बात का डर, क्यों दिल्ली के अंदर वातावरण खराब कर रहे हो। कल हमने देखा पुलिस वाले जगह जगह बैठे हैं। मैं कहीं बाहर से आया, तो मैंने पूछा भाई आज क्या है। कहने लगे आज तुम लोगों का भी घेराव कर रहे है। मैंने कहा भाई हमारा घेराव क्यों करना है, न हम भ्रष्टाचार मे लिप्त हैं, न भ्रष्टाचार से कोसों तक हमारा संबंध है।

माननीया अध्यक्षः चलिये बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री मोहन सिंह बिष्टः इस प्रकार का ये नहीं होना चाहिए। मैडम सीधा आपके माध्यम से एक बात और कहनी है। आज वृद्धा पेंशन, अभी बहुत बोल रहे थे न वृद्धा पेंशन के लिए। क्यों नहीं वृद्धा पेंशन लगेगी। 2018 के बाद वृद्धा पेंशन कोई नहीं लगी। यही नहीं, यदि आप देखेंगे कोई वुजुर्ग आपके कार्यालय में भी आते होंगे। कहते होंगे मेरे बच्चों ने आज बाहर निकाल दिया, मैडम मेरी पेंशन लगा दो। उनका सहारा सिर्फ ये होता है कि 2500 रुपए में ज्यादा गुजारा तो हो नहीं सकता है, लेकिन ये ड्यूटी किसकी बनती है। घोटाले

में तो करोड़ों रुपये का तो घोटाला हो सकता है, उसको चुनाव में तो खर्च किया जा सकता है, उनकी चिंता कौन करेगा। मैडम आप और हम सब लोग चर्चा करेंगे। हम सब लोग इसमें शामिल हैं। यदि दिल्ली का मुख्यमंत्री बनता है तो 70 में हमारा भी मुख्यमंत्री है भाई। उसमें दिमाग से निकाल लिजिए। यदि मंत्री है तो हमारा भी मंत्री है वो, लेकिन दिल्ली के ऊपर यदि भ्रष्टाचार का पूरा आरोप लगता है, सरकार किसी की हो, लेकिन वो कहीं नहीं कहते, आप भी उस सरकार में शामिल हैं। तुम्हारी सरकार क्या कर रही है, ये मैं कहना चाहता हूं।

माननीया अध्यक्षः चलिये बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री मोहन सिंह बिष्टः इसलिए, मैडम ये चर्चा अभी मैं देख रहा था इसी के अंदर। ये तो पहली बार है, ...नही अब पुरानी चर्चा को देख रहा हूं, मैं पढ़ भी रहा हूं तो मुझे नहीं पता राजेश गुप्ता जी ने इसको सदन में रखा। इसमें दो तीन मेम्बरों के और भी नाम थे। मैं पूछ रहा था अपने लीडर अपोजिशन से मैंने कहा क्या ऐसा पहले भी होता था। कह रहे हैं मेरे को भी नहीं मालूम मैं भी ऐसा ही, लेकिन मैं ये कहना चाहता हूं हमको राजनीतिक भावनाओं से, दुर्व्यवहार की भावनाओं से, मन के अंदर कुंठित होती भावना से उठ करके दिल्ली के लिए योजना बनानी चाहिए। इन घोटालों में जो जो लोग शामिल हैं, निश्चित रुप से उनको सजा मिलनी चाहिए। दिल्ली के लोगों का दर्द तभी हटेगा, जब उनको इस पर न्याय मिलेगा, इतना ही मुझे कहना है। आपने मुझे बोलने का समय दिया। बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः अखिलेशपति त्रिपाठी जी।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठीः धन्यवाद अध्यक्षा महोदया, अभी हमारे बहुत ही काबिल साथी बिष्ट साहब बोल रहे थे। उनके लिए एक सेर पढ़ देता हूं:

''हर किसी के पास, अपने अपने मायने हैं,
हर किसी के पास अपने अपने मायने हैं,

खुद को छोड़कर सबके लिए आईने हैं,
खुद को छोड़कर सबके लिए आईने हैं।''

अध्यक्षा महोदया, अभी ये कह रहे थे कि चर्चा इस पर हो जाती, चर्चा उसपे हो जाती। जांच ही तो मांग कर रहे हैं, जांच हो जाती, जाकर जवाब दे देते बात खत्म। पूरा देश मांग कर रहा है। अडाणी जी ने 20 लाख करोड़ रुपए का घोटाला कर दिया। आप प्रधानमंत्री जी को भी जांच नहीं करा रहे हैं, बतायेंगे इसको सदन जानना चाहता है, ये भी बता देते आप। वो आईना आपको दिखाने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। पूरा देश कह रहा है कि अडाणी जी की जांच करा लो। नहीं, जांच नहीं कराएंगे। क्या रिश्तेदारी है, क्या दोस्ती है। ये रिश्ता क्या कहलाता है। ये दोस्ती हम नहीं छोड़ेंगे। तमाम् कसमे वादे खाए जा रहे हैं। लेकिन जांच नहीं कराएंगे। अभी सब चले गये, देखिये। सहा नही जा रहा है, उनको पता है। क्या करें मजबूर आईना उनको तो दिखाना चाह रहा था मैं। वो निकल गए। अब भाजपा वालों की आदत है, जब उनसे पूछा जाता है प्रधानमंत्री से प्रश्न है, तो विपक्ष से प्रश्न पूछते हैं जवाब तो आज तक दिया नहीं। आज तक उन्होंने जवाब ही नहीं दिया। पहले प्रधानमंत्री हैं जो बोलते बहुत हैं, लेकिन जवाब नहीं देते हैं, प्रश्न पूछते हैं। हालत ये है कि गवर्नर पद पर रहते हुए इनके एक गवर्नर ने साक्षात्कार दिया और कहा कि

देश में जो पुलवामा की घटना हुई, उसकी तो जांच होनी चाहिए। अभी साहब नहीं हैं, पूछो कैसे उनसे कि जांच क्यों नहीं हुई। प्रधानमंत्री जी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तो भाषण दिया करते थे कि ये सेंट्रल एजेंसीज, सीबीआई, ये तीनों फ्रौज, सेनाएं, इंटेलिजेंस ईडी, ये बैंक किसके पास है। ये आतंकवादियों को फ्रंडिंग कैसे हो रही है, जांच क्यों नहीं करती दिल्ली की सरकार। अब मैं यहां खड़ा होकर पूछ रहा हूं कि पुलवामा में एक बार मैं गया था, कश्मीर हम लोग घूमने गए तो वहां पर इतनी सघन जांच होती है अध्यक्ष महोदया कि वहां पर एक तेल का सीसी था उसमें, मेरे बैग में, वो कहा जी ये नहीं ले जा सकते आप। मैंने कहा भाई तेल लगाने वाला सर पर लगाते हैं, बोले ये आप नहीं ले जा सकते। उस कश्मीर में सेना जा रही है, 300 किलो से ज्यादा आरडीएक्स आ गया देश में। अरे प्रधानमंत्री जी गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए पूछा करते थे कि आरडीएक्स देश में कैसे आता है, दिल्ली की सरकार क्या करती है, अब हम लोग पूछ रहे हैं उनसे। लेकिन प्रधानमंत्री जी जांच क्यों नहीं करा रहे हैं, उसका जवाब तो दे दो। अभी भारतीय जनता पार्टी के साथी बैठे हैं। जांच होनी चाहिए कि नहीं चाहिए, बिधूड़ी जी बताएंगे। अभी मैं कहूंगा, इस पर जरूर बोलिएगा कि कश्मीर में आरडीएक्स 300 किलो कहां से आया, जिससे सेना के 40 जवान मार दिये गये।

माननीया अध्यक्षः त्रिपाठी जी।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठीः क्या यह लापरवाही नहीं थी। दूसरा... चार चार बैरियर पास कर दिया। उसकी जांच आज तक नहीं हुई, देश आज तक उस जांच का जवाब मांग रहा है और इन्होंने एक और चीज कहा कि ये सरकार

तय कर रही है कि क्या करना चाहिए, नही करना चाहिए। महावर जी खड़े हुए थे, अभी बोल रहे थे।

माननीया अध्यक्षः विपक्ष का नाम लेके आप अपनी बात रख लिजिए।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठीः उनको जवाब देना जरूरी है।

माननीया अध्यक्षः बस

श्री अखिलेशपति त्रिपाठीः ये कह रहे थे 2024 तक वैकेंसी नहीं है, अरे अहंकार में मत रहिये। राजेश गुप्ता ने बहुत बढ़िया उदाहरण दिया था। एक लाख पूत सवा लाख नाती... नहीं बचा कोई। जनता का काम, जनता को करने दीजिए, आप तय मत करिये। जनता तय करेगी 2024 में कौन रहेगा कि नहीं रहेगा। आप अहंकार में जी रहे हो अनायास में। एक तो ये घटना हो गयी, ये कहते हैं जांच करा लो, अरे जांच तो करा लो। अरे जांच तो हेमेंत विस्वा शर्मा का भी करा लो, हम कह रहे हैं उनको भी आना चाहिए इडी में जवाब देने के लिए। ईडी वाले, सीबीआई वाले उनको नोटिस क्यों देते। सवाल तो ये करने के लिए सदन खड़ा हुआ है। ये तो चर्चा कराना चाहते हैं कि दो तरह की नीति क्यों चल रही है। आप बुलाते क्यों नहीं वहां पे, मधय प्रदेश के व्यापम घोटाले वाले मुख्यमंत्री को, उनकी भी सीबीआई से थोड़ा बयान ले लो। हम पूछना चाहते हैं शुभेन्दू अधिकारी को आज तक सीबीआई वाले, ईडी वाले नोटिस क्यों नहीं दे रहे हैं? उनको भी बुला लेते, उनसे भी पूछ लेते कि आईये जवाब दीजिए सीबीआई में, ईडी में। सवाल तो इसी बात को लेकरके चर्चा हो रही है सदन में कि भाई खाली जहां विपक्ष के लोग हैं, वहीं पर आपको जो है लोगों को बुलाने में, और कुछ नेता हैं उनका भी नाम ले लूं।

आज तक उनको अध्यक्षा महोदया, आज तक उनको नोटिस नहीं आया सीबीआई का। इनके एक नेता हैं ज्योतिरादित्य सिंधिया, जब कांग्रेस में थे तो ईडी, मैं भूल जाता हूं ईडी सीडी लोग कहते हैं। ईडी और सीबीआई, ईडी और सीडी, समझ रहे हो न। समझ रहे हैं, सब लोग कह रहे हैं। ये उनको नोटिस देकर बुलाते थे, भारतीय जनता पार्टी में आ गए तो पाक-साफ हो गये। इनके, बीजेपी के सांसद हैं महाराष्ट्रा के वो तो सभा में जा करके कहते हैं पाटिल जी, उनका नाम भी बता देते हैं। वो कहते हैं कि जब से हम बीजेपी में आ गया तब से हमें ईडी और सीबीआई की चिंता नहीं रहती, अब मैं चैन की नींद सो पाता हूं। जब मैं बीजेपी मे नहीं था तो मुझे चिंता होती थी, चैन की नींद नहीं सो पाता था। ये आपके सांसद का ब्यान है। तमाम् अखबारों में प्रमुखता से छपा। तो आज जो चाल चरित्र और तरीका भारतीय जनता पार्टी ने अपना रखा है विपक्ष को डराने का ईडी और सीबीआई के माध्यम से, उसके बारे में सदन चर्चा कर रहा है।

सदन ये भी जानना चाहता है कि शारदा घोटाले में जो सीबीआई ने जांच शुरू की थी वो अब रुक क्यों गया है। सदन ये भी जानना चाहता है कि रोज वैली चिंटफंड घोटाले में जो जांच शुरू की थी सीबीआई और ईडी ने उसमें शुभेन्दू अधिकारी और इनके मुकुल रॉय इनके नेता हैं, उनको अब जांच के लिए क्यों नहीं बुलाया जा रहा है? येदुरप्पा जी इनके कर्नाटक के बहुत बड़े लीडर हैं, मुख्यमंत्री रहे हैं, अब हां... वही बात तो सब लोग जानते हैं कि भ्रष्ट हैं। उनकी जांच नहीं हो रही है। हेमंत विस्वा शर्मा जी कांग्रेस में थे, ईडी, सीबीआई लगा करके उनको भारतीय जनता पार्टी में आयात किया गया,

जब आयातित हो गए, मुख्यमंत्री बन गए तो एक ऐसा डिटरजेंट पाउडर इन्होंने इजाद कर रखा है वाशिंग मशीन...

माननीया अध्यक्षः कंप्लीट किजिए अखिलेश जी।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठीः जिसमें वो सारे दाग धुल गए और जब मैं पता कर रहा था सब लोग कहने लगे कि भाई एक बार एक मशीन है इनके पास वाशिंग मशीन जो भारतीय जनता पार्टी में दागदार नेता शामिल हो जाते हैं, उसकी सफाई कर देता है। तब मैं पूछा कोई वाशिंग मशीन, उसमें कोई डिटरजेंट पाउडर भी यूज करते हैं, तो लोग नहीं बता पाए थे, तो मैं आज वो भी कहना चाहता हूं डिटरजेंट पाउडर का नाम है रेड, छापा, ईडी और सीबीआई का छापा उसमें डिटरजेंट पाउडर का काम कर रहा है, उस वाशिंग मशीन में, जो भारतीय जनता पार्टी में उस रेड के बाद शामिल हो जाता है, वो साफ हो जाता है।

माननीया अध्यक्षः चलिये बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठीः तो अध्यक्षा महोदया, दो तीन चीजें और छोटा छोटा है दो मुद्दे। आज देश पूछ रहा है। आप ईडी या सीबीआई का प्रयोग विपक्ष पर कर रहे हैं। आप जब विपक्ष में थे तो ये आरोप लगाते थे कि कांग्रेस पार्टी सीबीआई और ईडी का दुरूपयोग कर रही है और हम सवाल खड़ा कर रहे हैं तो मेरे काबिल दोस्त खड़े हो जाते हैं। कहते हैं इसपे चर्चा कर लो जी, उस पर चर्चा कर लो जी। उस पर भी चर्चा करेंगे, उस पर भी चर्चा करते रहे हैं। हम कहते हैं पूरे देश में शिक्षा पर चर्चा होनी चाहिए। आईये करिये शिक्षा पर। करते क्यों नहीं शिक्षा पर चर्चा। अरे शिक्षा पर चर्चा करके,

शिक्षा पर चर्चा का विषय और विकास का विषय बनाया तो अरविंद केजरीवाल की सरकार ने बनाया है और आप उस शिक्षा को रोकने के लिए हमारे क्रांतिकारी शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया को जेल में बंद करना चाहते हैं। इस तरीके से चर्चा करेंगे आप लोग, शर्म नहीं आती आप लोगों को। आप कहते हैं चर्चा कर लो।

माननीया अध्यक्षः अखिलेश त्रिपाठी जी।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठीः इस सब पर चर्चा करिये, आईये शौच व्यवस्था पर चर्चा करिये, क्यों नहीं करते? आप ऐसे जेल में बंद करके एक स्वास्थ्य मंत्री पर चर्चा करेंगे। पूरे देश को चिकित्सा का मॉडल देने वाले आदमी सत्येन्द्र जैन जी को जेल में बंद कर देते हैं। कहते हैं चर्चा करेंगे। पूरे देश को अरविंद केजरीवाल जी ने डोर स्टेप डिलिवरी ऑफ सर्विसेस का मॉडल दिया, आईये चर्चा करिये न हम कहते हैं। आज जिसको नकल करके मधय प्रदेश में तीर्थ यात्रा योजना लागू कर रहे हैं, उस पर चर्चा करिये, आईये। चलिये कम से कम अरविंद केजरीवाल से सीखे तो सही।

माननीया अध्यक्षः चलिये।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठीः आईये चर्चा करना चाहते हैं, पूरे देश में लेके जा रहे हैं महिलाओं को फ्री यात्रा योजना का...।

माननीया अध्यक्षः अखिलेश जी।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठीः आईये उस पर चर्चा करिये। पूरी दिल्ली में महिलाओं को ट्रांसपोर्ट सिस्टम फ्री है, उस पर चर्चा करिये। चर्चा नहीं करते,

नकल करके वहां लागू करते हैं, वो कहते हैं हम कर रहे हैं। आज देश में एक उम्मीद और एक आशा की किरण पूरे देश के लोगों को नजर आने लगा है अरविंद केजरीवाल और उस अरविंद केजरीवाल की आशा की किरण धीरे धीरे दिल्ली से फैलते हुए वो खुशबू शिक्षा की, चिकित्सा की पंजाब तक पहुंचा, पंजाब में सरकार आई, भारतीय जनता पार्टी का सफाया होने का काम हो गया।

माननीया अध्यक्षः चलिये।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठीः वो खुशबु यहां से पहुंच करके दिल्ली के नगर निगम में पहुंच गयी, भारतीय जनता पार्टी का 15 साल का शासन काल खत्म हो गया। अब 2024 में नरेन्द्र मोदी जी को भय होने लगा है। ये खुशबू पूरे देश में जाने लगी है, ये केजरीवाल मॉडल ऑफ गवर्नेंस शिक्षा, चिकित्सा का पूरे देश में जाने लगा है। इसको ईडी से रोको, सीबीआई से रोको और मैं कहना चाहता हूं आप इस तरीके के छापे से, कायराना हरकतों से अरविंद केजरीवाल को नहीं रोक सकते हो। आपको अगर रोकना है तो, आपकी हिम्मत है तो दिल्ली समेत हमने 50 स्कूल को स्कूल बनाकर दिखा रहे हैं, आप पांच सौ स्कूल बनाकर दिखाइये, तब मैं मानता हूं जनता आपको चुनने का काम करेगी। हम 500 मोहल्ला क्लीनिक बनाने का काम दिल्ली में किये हैं। भारतीय जनता पार्टी केन्द्र की सरकार है। आप आईये 1000 मोहल्ला क्लीनिक बनाइये।

माननीया अध्यक्षः त्रिपाठी जी बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठीः मैं कहता हूं मुकाबला होगा। इस कायरता से मुकाबला नहीं...

माननीया अध्यक्षः त्रिपाठी जी।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठी: ...कर सकते, ये जो।

माननीया अध्यक्ष: कम्प्लीट किजिए।

श्री अखिलेशपति त्रिपाठी: सीबीआई और ईडी का जो कायराना डर दिखा करके विपक्ष को बैठाने का काम किया जा रहा है। भ्रष्टाचार के खिलाफ देश की मजबूत आवाज अरविंद केजरीवाल को दागदार करने के लिए जो ये काम किया गया है, ये बर्दास्त नहीं करेगा, पूरा देश। आने वाले 2024 में जवाब देगा और उसको वापस होना चाहिए, मैं इसकी निंदा करता हूं और सीबीआई और ईडी इस तरीके के दबाब में सरकार के कार्य करना बंद करे। मैं इसकी निंदा करता हूं और भारतीय जनता पार्टी की कुत्सित मानसिकता की निंदा करता हूं। बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्ष: चलिये, सवा दो बजे लंच के बाद पुन: सदन की बैठक को प्रारंभ करेंगे।

(सदन की कार्यवाही 2.15 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)

सदन अपराह्न 2.15 बजे पुनः समवेत हुआ।

माननीया उपाध्यक्ष (श्रीमती राखी बिरला) पीठासीन हुईं ।

माननीया अध्यक्ष: अजय दत्त जी।

श्री अजय दत्त: धन्यवाद अध्यक्षा जी आपने मुझे इस चर्चा में भाग लेने का मौका दिया। आज हम... अध्यक्षा जी पहले तो मैं आपको धन्यवाद।

माननीया अध्यक्ष: बैठिये बैठिये।

श्री अजय दत्तः बधाई देना चाहता हूं कि आज आपने जो सेशन चलाया बहुत ही शांतिपूर्ण तरीके से, शानदार चलाया तो अध्यक्षा जी के लिए एक बार जोरदार... (सदन के सभी सदस्यों द्वारा मेज थपथपाकर समर्थन किया गया।) जिस दिन आपका, जिस दिन विपक्ष भी कहने लग जाए, जिस दिन विपक्ष भी आपकी तारीफ करने लग जाए तो उस दिन सोच लिजिए, सोच लिजिए कि आप अच्छा काम कर रहे हो, जैसे कई बार विपक्ष के लोग अरविंद केजरीवाल जी की तारीफ करते हैं। दिल्ली मॉडल की तारीफ करते हैं और पूरे देश में दिल्ली मॉडल की तारीफ होती है, तो इसका मतलब आम आदमी पार्टी अच्छा काम कर रही है।

अध्यक्षा जी, आज दिल्ली और मुझे लगता है पूरा देश एक अलग तरीके के इतिहास को देख रहा है। ये अलग तरीके की राजनीति को महसूस कर रहा है और ये राजनीति, इस राजनीति में बहुत सारे जो लोग हैं, उनके साथ, उन राजनीतिक पार्टियों के साथ जो व्यवहार हो रहा है, वो बहुत ही दुखद है। एक तरफ बीजेपी के, ये तो ले सकते हैं न, बीजेपी का नाम तो ले सकते हैं। बीजेपी सेंट्रल में बैठी हुई है, मैंने सोचा था कि कहीं उछल न जाएं। अच्छा कह दें बीजेपी, मोदी जी का नाम नहीं लेना है। अच्छा चौकीदार चोर तो कह सकते हैं।

माननीया अध्यक्षः अजय दत्त जी आप विषय पर रहिये।

...व्यवधान...

श्री अजय दत्तः अच्छा अच्छा ठीक है।

माननीया अध्यक्षः अजय महावर जी। जो आपत्तिजनक है, उस पर मैं खुद बोल देती हूं ना...

श्री अजय दत्तः इस देश के अंदर... ये देखिये आप न ये कुछ कह रहे हैं अनपढ़ मत बोलना, कुछ कह रहे हैं चौकीदार चोर है, ये सब मत बोलना, ऐसा है देखिये।

...व्यवधान...

श्री अजय दत्तः नाम किसी का नहीं लेंगे, लेकिन बाकी सब चीज कह देंगे। इस देश के अंदर लोकतंत्र है, इस देश के अंदर सरकारें चुनी जाती हैं, इस देश के अंदर चुनाव होते हैं, हरेक वोट का अधिकार समान है और इस देश के अंदर एक सरकार आयी आम आदमी पार्टी की सरकार। दिल्ली के अंदर तीन बार लोगों ने आम आदमी पार्टी की सरकार को चुना। अरविंद केजरीवाल जी की सरकार को चुना और अरविंद केजरीवाल ने एक ऐसा मॉडल साबित किया जो पूरे दिल्ली में नहीं, पूरे देश में नहीं, पूरे विश्व में शिक्षा के मॉडल के नाम से जाना जाने लगा। शिक्षा के अंदर जो अभूतपूर्व बदलाव हुए, हमारे शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया जी ने हमारी जो भी मंत्री हैं, बहन आतिशी जी ने जो मेहनत की, वो किसी से छुपी नहीं हैं और इसका डेटा सीबीएसई बोर्ड देता है। सीबीएसई बोर्ड का जो रिजल्ट आता है, वो पहले दिल्ली का 50 परसेंट आता था आज 90 परसेंट, 95 परसेंट 10वीं और 12वीं का, ये एविडेंस है कि क्या काम हुए हैं।

दिल्ली के अंदर स्वास्थ्य पर काम हुआ। सत्येन्द्र जैन जी ने नये हॉस्पिटल बनाये, सत्येन्द्र जैन जी ने मोहल्ला क्लीनिक बनाए। पानी की लाईनें करीबन डेढ़

हजार कॉलोनियों में पानी की लाईन पहुंची। जब ये सब काम हो रहा था तो उसको देखकर बीजेपी के शासक डर गए। वो डर इसलिए गए कि इन्हीं कामों की बदौलत पंजाब में आम आदमी पार्टी को वोट मिला। वो भी चाहते हैं कि ऐसा शासन पंजाब में आए, पंजाब में सरकार बनी।

इसके बाद हमने और चुनाव लड़े। गुजरात में हमारी बहुत सारी सीटें आयीं और 14 परसेंट वोट मिला, जिससे हम राष्ट्रीय पार्टी बन गए। जैसे ही हम राष्ट्रीय पार्टी बने बीजेपी के लोग और बौखला गए और उन्होंने उठाकर हमारे मनीष सिसोदिया जी को जेल में डाल दिया। शिक्षा रोक दो, इनके शिक्षा का काम रोक दो। उससे पहले सत्येन्द्र जैन जी को जेल में डाल दिया और इन्होंने ईडी और सीबीआई के माध्यम से अरविंद केजरीवाल जी को डराने और धमकाने की कोशिश की। लेकिन ये जानते नहीं हैं कि अरविंद केजरीवाल जी वो शख्स हैं और उनके इस सदन में चुनकर जो लोग आए हैं, ये वो शख्स हैं, जो अपना सब कुछ देश के लिए न्यौछावर करके आए हैं।

अरविंद केजरीवाल जी आईआरएस थे, वो छोड़कर आए। मनीष सिसोदिया जी बहुत बड़े पत्राकार थे, वो छोड़कर आए। हमारे यहां नरेश जी वकालत छोड़कर आए। हमारे यहां सौरभ भाई अपनी इंजीनियरिंग छोड़कर आए। आतिशी जी विदेश से पढ़कर आई, वो छोड़कर आई। मैं अजय दत्त अपना आई.टी. का काम छोड़कर आया और बहुत सारे लोग अपने काम धंधो छोड़कर आए, तो हम अपना न्यौछावर करने के लिए आए हैं। हम कोई ट्रेडिशनल पॉलिटिशियन नहीं थे। हम देश बदलने आए हैं और देश बदलकर जाएंगे।

ये डराना चाहते हैं, किसलिए डराना चाहते हैं। हम तो छोड़कर आए हैं तो हमको लेना क्या है। डर तो तुमको लगना है। यहां तो पढ़े-लिखे लोगों की

जमात है। एक व्यक्ति झोला उठाकर जा रहा था। उसको फिर कुछ और एक स्टेट मिल गया काम करने के लिए, उसको फिर एक और बड़ा काम मिल गया तो डर तो उनको है कि ये सत्ता हमारे हाथ से न चली जाए, इस वजह से ये डर रहे हैं और आम आदमी पार्टी को कुचलने की कोशिश कर रहे है।

कल का दिल्ली के अंदर एक छोटा सा डिमॉन्सट्रेशन हुआ। ये छोटा सा इसलिए कह रहा हूं कि पूरी दिल्ली के अंदर जनता रोडों पर आयीं। जनता ने दिखा दिया कि अगर अरविंद केजरीवाल जी की तरफ कोई उंगली उठाएगा तो उसकी आंखे नोंच ली जाएंगी। कल ये हुआ कि पूरी दिल्ली जाम कर दी गयी और अब अगर बाइचांस इन्होंने थोड़ा सा और आगे कदम बढ़ाया तो इनको बता दें कि पूरा देश, आम आदमी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी बन चुकी है। कर्नाटका से लेकर कन्याकुमारी से लेकर जम्मू-कश्मीर तक हर जगह हमारे इलेक्टेड मेम्बर हैं। कहीं पंचायत में, कहीं पार्षद बने हुए हैं, कहीं विधायक बने हुए हैं और 10 एमपी है, 10 एमपी और इस बार ये तीन फिगर में एमपी बन जाएंगे हमारे ये भी मैं आपको कह रहा हूं।

तो अध्यक्षा जी, ये पानी, बिजली, सड़क के मॉडल हैं, शिक्षा के जो मॉडल हैं, इनसे डरकर ये आम आदमी पार्टी को खत्म करने की नाजायज कोशिश कर रहे हैं और दूसरी तरफ जिन लोगों ने इस देश को लूटा। दो मोदी देश का पैसा लेकर भाग गए। सैंगर पैसा लेकर भाग गए। मालया पैसा लेकर भाग गए और अडाणी ने साढ़े 4 लाख करोड़ का घपला किया, उसकी कोई बात नहीं कर रहा। अरे ईडी छोड़नी है तो इन लोगों पर छोड़ो, अगर ईडी से कुछ

लेना है, सीबीआई छोड़नी थी, तो इन लोगों पर छोड़ो। उन लोगों को सताने की कोशिश कर रहे हैं, जो देश बना रहे हैं, जो भविष्य बना रहे हैं।

आज दिल्ली का भविष्य, देखकर लग रहा है कि अमेरिका और लंदन जैसे देशों से हम कम्पिट कर सकते हैं। लग रहा है कि इस देश में कुछ नया हो सकता है तो आप अपनी बड़ी लाईन खीचें। हमारे बहुत सारे साथी प्रवक्ताओं ने कहा कि अगर हमने 100 स्कूल बनाये तो आप हजार बनाओ। हमने 100 हॉस्पिटल बनाये आप दो हजार बनाओ। ये काम कर सकते हो। आप ये डरा धमका कर राजनीति कर रहे हैं। अगर आपको बचाना है तो आप फाइनेंशियल इंस्टीट्यूट को बचाओ, जिसे अडाणी जैसे लोग लूटकर खा गए। लाइफ इंश्योरेंस कम्पनी को बचाओ, आरबीआई को बचाओ, नये इंस्टिट्यूशन खोलो, कुछ और नया कर लो। दो करोड़ जॉब दे दो, कुछ तो कर लो।

माननीया अध्यक्षः चलो कम्पलीट करो।

श्री अजय दत्तः लेकिन इन्हें करना नहीं है। इन्हें डर है कि विपक्ष को खत्म कर दो। अरे थोड़ी सी तो अक्ल लगा लो, जिस देश में विपक्ष नहीं है, उस देश में लोकतंत्र नहीं होता और जिस देश में लोकतंत्र नहीं है, वहां तानाशाह होते हैं और भारत पूरे वर्ल्ड का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। यहां तानाशाही नहीं चलने देंगे और एक बात और कहूं ये भारत के अंदर हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई, दलितों ने अपना खून दे देकर इस भारत को सींचा है। बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने बहुत महान संविधान बनाया और बाबा साहब के संविधान को तुम जैसे लोग नहीं तोड़ सकते, न कुचल सकते क्योंकि बाबा साहब के संविधान ने हम लोगों को शेरनी का दूध पिला दिया, पढ़ा दिया, बढ़ा दिया अब हम रूकने वाले नहीं हैं।

अरविंद केजरीवाल जी ने, अभी मैं पीछे एक स्पीच सुन रहा था। उन्होंने कहा मैं सबसे ज्यादा इज्जत और सम्मान बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर जी का करता हूं। क्यों करते हैं, क्योंकि पढ़ाई-लिखाई की एक वैल्यू है। पढ़ा-लिखा व्यक्ति कुछ कर सकता है। जिसने पढ़ा लिखा नहीं है, वो क्या करेगा। तो बड़ा प्रश्न ये है कि आज पूरा वर्ल्ड, आज पूरा वर्ल्ड चल रहा है टेक्नोलॉजी पर, आज पूरा वर्ल्ड चल रहा है इंफॉरमेशन पर, आज पूरा वर्ल्ड चल रहा है एक्सचेंज पर, तो कुछ बड़ा करो। ऐसा मत करो, कोई अभी मुझे बीजेपी के एक साथी कह रहे थे कि हम सेवादार हैं, मैं उनको करेक्ट करता हूं कि उन्होंने कहा था कि मैं चौकीदार हूं और हम कह रहे हैं कि चौकीदार चोर है।

माननीया अध्यक्षः चलिये बहुत बहुत धन्यवाद। अजय दत्त जी बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री अजय दत्तः एक मिनट मैडम।

माननीया अध्यक्षः बस बस। बहुत सारे वक्ता हैं।

श्री अजय दत्तः अच्छा तो मैं ये कहना चाह रहा था कि अभी हमारे एक साथी ये बता रहे थे कि शराब का घोटाला हो गया। भाई साहब देखो ऐसा है पढ़े-लिखे हो, थोड़ी सी और समझ ले लो। यही शराब की नीति पंजाब में लागू की, 40 परसेंट अधिक मुनाफा लेकर आए, शराब की यही नीति दिल्ली में थी। तो दर्द कहां पर है, मैं बताता हूं उनको दर्द क्यों है, क्योंकि इस नीति ने सारे शराब माफियाओं को खत्म कर दिया और शराब का धंधा इन माफियाओं के द्वारा ये चलवा रहे थे। शराब का धंधा ये लोग चलवा रहे थे, इसलिए इनको दर्द है।

माननीया अध्यक्षः अजय दत्त जी बस।

श्री अजय दत्तः गुजरात के अंदर कहते है Dry State है। काहे का Dry State है। गुजरात में सबसे ज्यादा शराब बिकती है, हजारों लोग मर रहे हैं। पिछली साल कच्ची और गंदी शराब पीकर 100 से ज्यादा लोगों की जान गयी। अरे तुम्हारे यहां शराब के धंधे चल रहे हैं और उसके बाद तुम कह रहे हो शराब नीति खराब है। नीति नहीं तुम्हारी नीयत में खोट है। अगर नीयत में खोट है, उसको ठीक करो। ये देश चलाओ। यहां के लोगों को मत मारो। यहां जो अच्छे काम करने वाले लोग है अरविंद केजरीवाल जी जैसे, उनसे सीखो, न कि उन लोगों को तुम बर्बाद करने कोशिश करो। और एक चीज बताता हूं।

माननीया अध्यक्षः चलिये बहुत बहुत धन्यवाद। पूरे 10 मिनट हुए।

श्री अजय दत्तः एक मिनट और लास्ट में।

यदा यदा हिधर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहमं
परित्राणाय साधूनां विनाशाय चदुष्कृतामं।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

तुम में से बहुत सारो को संस्कृत भी नहीं आती होगी, फिर भी मैं बता देता हूं। इसका मतलब है जब जब इस देश में धर्म की हानि होती है, तो एक अच्छे ईश्वर अपने रूप में अरविंद केजरीवाल जी जैसे लोगों को भेजते हैं और कंस का विधवंस और नाश होना तय है, इसलिए अरविंद केजरीवाल जी को जरा सी भी अगर खरोंच लगाओगे न तो वो अपने आप सजा देगा।

मुझे लग रहा है पिछली बार तो झोला था अगली बार कटोरा देगा। आपने मुझे बोलने का मौका दिया।

माननीया अध्यक्षः बहुत बहुत धन्यवाद। विनय मिश्रा जी।

श्री अजय दत्तः जय हिंद जय भारत। जय भीम।

श्री विनय मिश्राः बहुत बहुत धन्यवाद। मैं आज स्पीकर साहब नहीं हैं, आपके माध्यम से आम आदमी पार्टी को बहुत बहुत बधाई देना चाहूंगा कि आम आदमी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी बन गयी और मैं अपने सभी साथियों को बहुत बहुत बधाई देना चाहता हूं और आज हम लोग बहुत ही अहम, मेरे साथी कह रहे हैं कि इन लोगों की वजह से भी आम आदमी पार्टी ने, इनको भी धन्यवाद कर दो, बहुत बहुत धन्यवाद।

ये बहुत ही संवेदनशील मुद्दा है क्योंकि कल हमने देखा कि किस तरीके से पूरी दिल्ली में दिल्ली पुलिस ने कैसा तांडव किया और शांतिपूर्ण जब दिल्ली के लोग खुद सड़क पर आए और दिल्ली के बेटे को जिस तरीके से इन्होंने सीबीआई बुलाकर साढ़े 9 घंटे पूछताछ की और कल जब दिल्ली के लोग खुद सड़क पर उतरे तो किस तरीके से दिल्ली पुलिस ने बर्बरता की और शांतिपूर्ण प्रदर्शन भी नहीं होने दिया और सबको उठाकर, चुने हुए प्रतिनिधियों को, विधायकों को, सांसदों को, मंत्रियों को, पंजाब से आए विधायक, उनको भी किस तरीके से बर्बरता से उठाकर ले गयी, आप सब ने देखा, पूरे देश ने देखा।

मैं, चूंकि कुछ खबरें मैं लेकर आया हूं। ये अखबार की खबरें हैं। बहुत ही प्रतिष्ठित अखबार है और अखबारों में आया क्योंकि यहां सीबीआई की बात हो रही है। अभी कुछ दिन पहले सीबीआई की डायमंड जुबली मनी गयी थी

दिल्ली में विज्ञान भवन में, उसमें हमारे प्रधानमंत्री जी ने जाकर सीबीआई की बहुत बाखान की, उसकी तारीफों के बहुत पुल बांधे। ये वही सीबीआई है, जिसको प्रधानमंत्री जी ने जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे तो कहते थे कि कांग्रेस ब्यूरो ऑफ इंवेस्टिगेशन। आज उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद वही सीबीआई एक इंडीपेडेंट बॉडी हो गयी। वो जो तारीफ के कसीदे पढ़े, वो इसलिए पढ़े क्योंकि मैं जब कुछ अखबार की कटिंग देख रहा था तो उसमें मैंने देखा कि 2015 में ये अमित शाह जी ने असम में प्रेस कोन्फ्रेंस की थी और उन्होंने एक जो है, एक पूरी बुकलेट निकाली थी जिस बुकलेट का नाम था, Saga of Scams in Congress ruled States जिसमें उन्होंने अभी वर्तमान में असम के मुख्यमंत्री हैं, हेमंत बिस्वा शर्मा जी जो अभी नए–नए बीजेपी में गए हैं तो अपने आप को पूरा प्रधानमंत्री जी का, पूरा फेथफुल दिखाने के लिए किसी पर भी एफआईआर कर दे रहे हैं, उनके खिलाफ साफ–साफ कही थी कि जो असम में वॉटर डेव्लपमैंट स्कैम हुआ था उसमें हेमंत शर्मा जी उसमें इन्वॉल्व्ड हैं और उनके खिलाफ जाँच कराई जाएगी। ऐसे ही बहुत सारे और भी नाम हैं, पूरी ये मेरी खबर नहीं है ये प्रेस की क्लिपिंग है और पूरा प्रेस पर है। इसमें आप देखेंगे वो तमाम नाम नारायण राहणे, जिनको 300 करोड़ रुपये की मनी लोड्रिंग का केस था, उन्होंने 2019 में बीजेपी ज्वाइन की, उसके बाद इनकी कोई इंक्वायरी नहीं हुई, बिलकुल पाक–साफ हो गए 300 करोड़ रुपये का स्कैम भाई साहब। सुबेंदु अधिकारी, नारदा स्कैम, जो अब बीजेपी में जाकर लीडर ऑफ अपोजिशन हो गए, ये इनकी किताब जो इन्होंने छापी थी उसमें है। उसके बाद भावना गवली 5 ईडी के समन मिले थे उनको, वो महाराष्ट्र के यवतमाल वाशिम लोकसभा से आती हैं और 5 बार ईडी का समन मिला, लेकिन जैसे ही शिवसेना

की पार्टी टूटी, सिंदे फ्रैक्शन के वो साथ आए और उनको जो है शिवसेना पार्लियामेंट्री कमेटी जो पार्लियामेंट में होती है, Chief whip जैसे हमारे चीफ हैं दिलीप पांडे जी हैं, वैसे उनको पार्टी का चीफ लोकसभा में बनाया गया। ऐसे ही शिंदे कैम्प के बहुत सारे लीडर्स हैं बहुत सारे एमएलएज हैं जिनके बहुत सारे किसी ने फ्रेमा वाइलेशन किया, किसी ने मनी लोंड्रिंग की, बहुत सारे ऐसे और भी हैं जो आप देखेंगे तो बहुत सारे नाम हैं, ये सब अखबार में आए हैं, बीएस येदुरप्पा जी, सब मेरे साथियों ने कहा रेड्डी ब्रदर्स जिनपे जो बेल्लारी से जो आते हैं उन पर भी 16 हजार 500 करोड़ रुपये का स्कैम जो है उनपर भी आज तक कोई इंक्वायरी नहीं हुई क्योंकि उन्होंने बीजेपी ज्वाईन कर लिया। मुकुल रॉय, शिवराज चौहान जी व्यापम स्कैम, इतना बड़ा स्कैम कि अगर जो जो भी गवाही देने आया, उसको कैसे मौत के घाट उतार दिया गया सोचने का विषय है। फिल्मों में हम लोग देखा करते थे, जो फिल्मों में हमने देखा वो महाराष्ट्र में हुआ लेकिन आज तक उसकी कोई इंक्वायरी नहीं हुई। मुकुल रॉय जी के बारे में सब ने कहा, रमेश पोखरियाल निशंक जिनको इन्होंने Human Resource Development Minister बनाया था जैसे हमारे यहां एजुकेशन डिपार्टमेंट, उसमें भी है, उनका भी Hydro Electric Project करके एक स्कैम आया था जब वो उत्तराखण्ड सरकार में मुख्यमंत्री थे, लेकिन उनको वहां से हटाकर सांसद बने और केंद्र में मंत्री बनाया गया। तो ऐसे बहुत से नाम हैं जिनके खिलाफ कंप्लेंट्स हुईं, लेकिन आज तक उनकी इंक्वायरी नहीं हुई। तो आज सीबीआई स्वायत्त कहां से रह गई। मेरे बहुत से साथी यहां पर विपक्ष के हैं, चूंकि मैं चेयर को जवाब दे रहा हूँ, कहना नहीं चाह रहा, लेकिन ठीक है, 5 बार के विधायक हैं, मेरे से बाहर कह रहे थे, मुझे बोल रहे थे, मेरे

पिताजी के साथ विधायक रहे, लेकिन मैं सोच रहा था सबसे पहले तो इन पर जाँच कराओ इन्होंने कराया क्या है वहाँ पर जो आज भी इनके यहां पर स्कूल टपक रहा है। दूसरा वो कहते हैं कि हमारे होम मिनिस्टर और प्रधानमंत्री पर भी इंक्वायरी आयी, वो चुप चाप जाते थे। अरे हमारे शेर हैं हमने चोरी नहीं की, हम चौड़े में जाते हैं कि हमसे जो मर्जी पूछना है पूछ लो, हमने कोई चोरी नहीं की है। तुम्हारे मन में चोर था, तुम छुप कर जाते थे, कहीं ऐसा ना हो, अरेस्ट कर लें, तो जवाब देना भारी पड़ जाएगा। हमने कभी भी, कभी भी किसी जाँच में हमको बुलाया हमने कभी इवेंट नहीं किया और कल भी मैं मुख्यमंत्री साहब को सुन रहा था उन्होंने चौड़े में कहा मुझे 100 बार बुलाएंगे, मैं 100 बार ईडी, सीबीआई जाउंगा, 100 बार जवाब दूंगा, मैं कभी घबराउंगा नहीं, कभी सीबीआई से डरूंगा नहीं। तो हम छुप कर क्यों जाएंगे और आज हमारे नेता ईमानदार हैं, आज पूरे देश में पहचान है, मुझे गर्व है तुम जब–जब मेरे नेताओं को सीबीआई बुलाओगे, अभी तो कल आपने एक टेलर देखा था, जब–जब बुलाओगे पूरी दिल्ली सड़क पर उतरेगी। अगली बार आप लोग देखना, आपका चलना मुश्किल हम लोग कर देंगे और आप सही शक कर रहे हो अब, आप सही शक कर रहे हो, अभी तक तो हमने चौराहे जाम किए थे, ये दिल्ली है, दिल्ली में हमारी सराकर है, बेशक पुलिस हमारे पास नहीं है, लेकिन हमारे पास लोगों की ताकत है, अभी तो हमने चौराहे जाम किए थे, आपका शक सही है अगली बार आपके घर–घर जाकर जाम करेंगे, आपको घर से निकलने नहीं देंगे, जब तक हमारे मुख्यमंत्री को आप परेशान करते रहोगे। मेरे पास एक कर्नाटका का केस है मैम लास्ट पॉइंट ले रहा हूँ मैं चूंकि 10–10 मिनट आपने कहा है तो मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा, मैं तथ्य

पर बात करना चाहता हूँ, क्योंकि मुख्यमंत्री जी हर मंच से कहते हैं कि ये अफसरों को डरा रहे हैं, पत्रकारों को डरा रहे हैं, जजों को भी ये डरा रहे हैं, धमकाते हैं, इसका एक साफ, एक बड़ा फैक्ट मेरे सामने मेरे हाथ में है। हमारे उपमुख्यमंत्री साहब के यहां इन्होंने छापा मारा, उनके गाँव से लेकर सरकारी आवास से लेकर पैत्रिक निवास तक इन्होंने छापा मारा उनके यहां एक रुपया भी नहीं मिला, उनके लॉकर पर भी गए कोई गहना नहीं मिला। ये बड़ी साधारण सी बात है मैडम, हमारी कमाई बढ़ती है ना तो बीबी देखती है पति की कमाई बढ़ते हुए वो भी कहती है यार अब तो तुम्हारे पैसे आ रहे हैं, एक आधा कुछ हार–वार दिला दो, होता है, ये तो जेनुअन है। ये तो, मैडम हंस रही हैं, आपकी भी नई–नई शादी हुई है तो आप तो बेहतर जान रही हैं। तो ये बड़ी साधारण सी बात है, लेकिन आपने देखा उनके लॉकर में भी उन्होंने छापा मारा, लॉकर में भी एक गहना या कोई नया हार नहीं मिला। झुनझुना मिला झुनझुना, सेम कोर्ट में जाते हैं तो ये कहते हैं कि जो है ये हमारी इंक्वायरी में सपोर्ट नहीं कर रहे हैं, हमको और रिमांड चाहिए, जबकि हम हर बार इनका सपोर्ट करते हैं, हर इंक्वायरी में हम लोग जाते हैं। कर्नाटका में एक एमएलए हैं, बीजेपी एमएलए हैं इनका नाम है मडल विरुपक्षयप्पा, 27 मार्च को ये अरेस्ट किए गए थे, क्योंकि कर्नाटका लोकायुक्त की पुलिस ने इनको अरेस्ट किया था, क्योंकि हाईकोर्ट ने इनकी बेल रिजेक्ट कर दी थी। इनके बेटे के यहां से सबने देखा 40 लाख रुपये कैश पकड़े गए थे और घर से 8 करोड़ रुपये कैश मिला था सबने देखा। सेम केस, हमारे यहां जबकि हमारे उपमुख्यमंत्री के यहां या किसी मंत्री के यहां एक रुपया नहीं मिला, इनके विधायक के यहां पैसा मिला, लेकिन कोर्ट में किस तरह का दबाव है कि उसी केस में कोर्ट

क्या कहता है, कोर्ट ने जो बेल दी है बेल ऑर्डर मैं पढ़ रहा हूँ एक, ऑर्डर तो खैर बहुत बड़ा है, पर मैं सिर्फ तीन लाईन पढ़ूंगा The Petitioner has undertaken to co-operate and assist in fair investigation and trial of the case यहां तो कोर्ट कह रहा है, हम तो हर स्टेज पर कह रहे हैं और कोर्ट कह रहा है The Police alleged that he has not co-operated during the investigation but, on this ground alone his bail cannot be rejected as the police have not seized any amount from his hand ये कोर्ट कह रहा है कि भई उस एमएलए के हाथ में कुछ नहीं मिला, तो उसको बेल डिनाई नहीं कर सकते, लेकिन यहां पर आप देखिये, इन्होंने यहां इतना छापा मार लिया, इतने घोटाले कि चिल्ला चिल्ला कर कह रहे हैं एक रुपया नहीं मिला, लेकिन हमारे उपमुख्यमंत्री को बेल नहीं मिल रही है।

माननीया अध्यक्षः चलिए कंप्लीट कीजिए।

श्री विनय मिश्राः तो ये कहीं ना कहीं साफ दिख रहा है कि ये जो सेंट्रल एजेन्सियां हैं किस तरीके से ये सीबीआई, ईडी का इस्तेमाल कर रहे हैं और आज मनीष जी हों, चाहे सत्येन्द्र जैन जी हों, चाहे अब मुख्यमंत्री जी को ये जो परेशान करने की बात है, ये साफ-साफ जाहिर हो रहा है और एक हमारे साथी बोल रहे थे कि जी, जो आजकल हम गवर्नर साहब के जो सत्यपाल मलिक साहब का जो सुन रहे हैं कि आज इतना बड़ा खुलासा कर रहे हैं, ये सब कह रहे हैं वो झूठे हैं, वो झूठे हैं, वो झूठे हैं, हाँ तो इनके लिए तो वो झूठे होंगे ही, सुकेश चन्द्रशेखर जो देश का सबसे बड़ा महा ठग है, वो इनके लिए सबसे बड़ा सच्चा है। उसकी बात ये हर स्टेज पर करेंगे, सुकेश चन्द्रशेखर, सुकेश चन्द्रशेखर। तो सोचिये क्या मानसिकता हो गयी है, तो

ऐसी मानसिकता वाले लोगों से आप कैसे उम्मीद कर रहे हैं कि ये सच बात कहेंगे। अगर सीबीआई से जांच कराना है तो उसकी जांच कराए।

माननीया अध्यक्षः चलिए कंप्लीट कीजिए।

श्री विनय मिश्राः लेकिन उसकी बात नहीं करेंगे तो आपने इस महत्वपूर्ण मुद्दे में मुझे बोलने का मौका दिया, मैं उसके लिए बहुत धन्यवाद करता हूँ और हालांकि शेर ओ शायरी मेरे से हो नहीं पाती, पर मेरे साथी ने एक शेर बड़ा अच्छा लिख कर दिया तो मुझे लगा मैं भी इसको पढ़ दूं ये, उसके कत्ल पर मैं भी चुप था पूरा पढ़ूं, चलो मैं पूरा पढ़ देता हूँ :

जलते घर को देखने वालों फूस का छप्पर आपका है,
आपके पीछे तेज हवा है और आगे मुकद्दर आपका है,

उसके कत्ल पर मैं भी चुप था मेरा नंबर अब आया,
मेरे कत्ल पर आप भी चुप हैं, अगला नंबर आपका है।

माननीया अध्यक्षः चलिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री विनय मिश्राः चलिए बहुत बहुत धन्यवाद डिप्टी स्पीकर साहिबा बहुत-बहुत धन्यवाद, आपने मुझे बोलने का मौका दिया और मैं इस डिस्कशन का समर्थन करता हूँ, निश्चित तौर पर सीबीआई, ईडी का जो इस्तेमाल हो रहा है वो दिल्ली नहीं पूरा देश देख रहा है। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिंद।

माननीया अध्यक्षः जरनैल सिंह जी, समय का ध्यान रखें, बहुत वक्ता हैं।

श्री जरनैल सिंहः बहुत मेहरबानी स्पीकर साहिबा। दिल्ली दे मौजूदा हालातां ते जिथे बहुत खतरनाक स्थिति बनी हुई है। सीबीआई ते ईडी बरगी एजेंसियां

ओनू मोहरा बनाके दिल्ली दे मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी नू फर्जी मुकदमें विच गिरफ्तार करंदी कोशिश कीती जा रही है, ते आम आदमी पार्टी नू खत्म करंदी जो साजिश मोदी सरकार वलो रची जा रही है, इस इशु ते बोलं दा समय तुसी दित्ता, स्पीकर साहब ए सिलसिला 2013 तो शुरु होया पया है 2023 आ गया जद मैन्नु याद है अप्पा 28 एमएलए होंदे सी सिर्फ तुसी वी होंदे सी उन्हा विच्चों इक तद तो ले के हुण तक बीजेपी 2013 विच्च इस साजिश विच्च नाकाम रही। 2015 विच्च फिर इस साजिश विच्च फेल हुई। साडे 40 एमएलए दे उत्ते फर्जी केस कित्ते गए। 21 साडे पार्लियामेंट्री सेक्रेट्रीज ते केस चला दित्ते गए उन्हा दी डिस्क्वालिफिकेशन तक भेज दित्ती गई उथे डिस्क्वालिफाई कर दित्ता गया। 2020 विच्च फिर ए कोशिश शुरु हो गई। 2022 विच्च पंजाब दी सरकार बड़न तो बाद उत्थे वी ए कोशिशा शुरु हो गईयां। पर एक चीज वास्ते मैं धन्यवाद करदां हां, एह कहना चांदा हां कि जितना तुम सड़ता है उतना केजरीवाल बढ़ता है। तुसी आम आदमी पार्टी नू जिन्ना खत्म करन दी कोशिश कीती है आम आदमी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी बणके उभरी है। सबतू बड्डा त्वाडे मुंह ते तमाचा देश दे लोका ने मारेया कि देश दे लोग अरविंद केजरीवाल नू प्यार करदे ने। इस करके आम आदमी पार्टी वदद रही है। मोदी जी को ये बहुत खल रहा है, कि मेरे इतने तूफानों के बाद भी आम आदमी पार्टी का चिराग क्यों जल रहा है। ए माहौल मोदी जी ने देश दा बनाया होया है। स्पीकर साहब रिपोर्ट कार्ड दा पैटर्न इस देश विच्च आम आदमी पार्टी ने शुरु कित्ता है। अस्सी अपणा भावे एमएलएज ने भावे सरकार है सारे आपणा आपण रिपोर्ट कार्ड पेश करदे की भाई ए साडे काम ने त्वानू काम पसंद आए होण ते सानू वोट देओ, नहीं ते वोट ना देओ। ते मैं सोचया क्यों ना आपा मोदी साहब दी

जो दो एजेन्सीज ने ईडी ते सीबीआई इन्हा दा वी इक रिपोर्ट कार्ड बणा दियै। हालांकि ईडी दा मतलब है इन्फोर्समेंट डायरेक्टरेट, पर हुण ए बण गए ने इम्प्लाई ऑफ डिक्टेटर, इस इम्प्लाई ऑफ डिक्टेटर जो डिपार्टमेंट हैगा इसदी जे तुस्सी 2014 तो ले के हुण तक दी अचीवमैंट वेखोगे ते 111 केस टोटल इन्हा ने रजिस्टर कीते ने। 111 विच्चों 105 केस जो इन्हा दी अपोजिशन है उस दे उत्ते केस कित्ते ने। स्पीकर साहब ए तुस्सी देख सकते हो मिस यूज एजेन्सीज दा हो रिया है। कांग्रेस दे उत्ते 24 केस, टीएमसी के ऊपर 19 केस, एनसीपी ते 11, शिवसेना ते 8, डीएमके ते 6, बीजेडी ते 6, आजेडी ते 5, बीएसपी ते 5, समाजवादी पार्टी ते 5, टीडीपी ते 5, आम आदमी पार्टी ते 3, आईएनएलडी ते 3, वाईएसआरसीपी ते 3, सीपीआई ते 2, एनसी ते 2, पीडीपी ते 2, 2 एआईएमडीके ते 1 एमएस ते मतलब इस तरीके दे इन्हानू बीजेपी विच्च कुछ नहीं दिखरिया। सारी दी सारी एजेन्सी अपोजिशन ते लाई होई है कि किसी तरीके साडे कोल पावर आ गई है इन्हानू आपा खत्म कर दईये। सेम हिसाब सीबीआई दा है, इन्हाने 124 केस कीते ने जिसदे विच्चों 118 केस नोन बीजेपी लीडर दे उत्ते कीते ने। ते इस तरीके कदो तक चलेगा स्पीकर साहब। मैं सोच रहा सी शायद बीजेपी विच बहुत ईमानदारी है एदा कुछ होयेगा सीबीआई नूं पता नहीं होयेगा पर बीजेपी दे लीडर्स ने पूरी एबीसीडी लिखी होई है करप्शन दी। मैं सारे सदन दे सामने रखागां। वैसे ए फार एप्पल होंदे, बी फार बाल होंदे, सी फार कैट होंदे, पर बीजेपी दे करप्शन विच ए फार लेटेस्ट सब तो घोटाला होया है जिनूं कहंदे ने अडानी स्कैम। बी फार बाल्को डिस-इनवेस्टमेंट स्कैम सारे स्कैम दा साईज हजारां लखां करोड़ विच है कोई छोटा साईज नहीं है। सी फार चिकी स्कैम, डी फार दाल स्कैम। ई फार अर्थक्वेक स्कैम, एफ फार

फिशरीज स्कैम, जी फार जीएसपीसी स्कैम, एच फार हुडको स्कैम, आई फार इंडिगो रिफाइनरी स्कैम, जे फार ज्यूडियस स्कैम, के फार केरला मेडिकल स्कैम, एल फार ललित मोदी स्कैम, एम फार मेट्रो रेल स्कैम, एन फार नेनो प्लांट लैंड स्कैम, ओ फार आपरेशन वेस्टएंड स्कैम, पी फार पीडीएस स्कैम, के फार क्वेरी स्कैम, आर फार बहुत वडा स्कैम है राफेल स्कैम, एस फार सिरजन स्कैम, टी फार टेंडर स्कैम, यू फार यूडीए स्कैम, वी फार व्यापम स्कैम, डब्लयू फार वेट मेजरमेंट इंस्पेक्टर स्कैम, एस फार एक्सरे टेक्निकल स्कैम, वाई फार येदुरप्पा स्कैम, ते जैड फार जुबेन ईरानी लैंड स्कैम। पूरी ए टू जैड घोटालयां दी डिटेल आन तो बाद वी सीबीआई नूं, ईडी नूं, इक बंदा नहीं मिलया पिछले 10 साल दे अंदर कि भई इत्थे वी जाके कुछ नजर मार लो टोटल ईडीआई ते सीबीआई दा फंक्शन ए रह गया है कि जित्थे इलेक्शन होण जित्थे सरकार नूं गिरानां होवे ओथे जाके छापे मारो। शेर चलता था कि गरीबों की थाली में पुलाव आ गया है लगता है शहर में चुनाव आ गया है। अब एक नया शेर आ गया है स्पीकर साहब ईडीआई सीबीआई के दफ्तरों में बहुत काम हो रहा है, लगता है किसी राज्य के अंदर चुनाव हो रहा है। टोटल ईडीआई, सीबीआई का काम आया था कि जित्थे इलैक्शन हो रहे हैं ना ये उत्थे जाओ विधायका दे फर्जी मुकदमें दर्ज करो, सरकार गिराओ ते इनादी सरकार बनाओ। इस तरीके दा कानून कद तक चलेगा स्पीकर साहिबा। मैं एक बड़ा जो साडी पार्टी ने आपको एग्जाम्पल देन लगा। साढे मिनिस्टर सी जितेंद्र सिंह तोमर जी । उनां दे उते इनां ने फर्जी डिग्री दा मुकदमा चलाया हालांकि ओ बरी हो गये रिसेंटली। उस मुकदमे विच उनां नूं हथकड़ी पवा के पूरे देश दे अंदर जित्थे जित्थे डिग्री दा मिशन सी उत्थे घुमाया। पर मैं पूछना चाह रहेया हथकड़ी मोदी जी दे हथ विच क्यूं

नहीं पै रही। उत्थे ते कोर्ट विच जाके सबूत उत्थे पेनल्टी नाल दिती जा रही है जिने पीटिशन लाईये । इस देश विच इक कनून कदो बनेगा स्पीकर साहिबा। जिस तरीके डेमोक्रेसी कहंदी भई सबनूं सारे नागरिक समान ने, कानून सब वासते समान है कल प्रोटेस्ट होएया पंजाब दे साढे एजुकेशन मिनिस्टर, पंजाब दे साढे हेल्थ मिनिस्टर, साढे एमएलएज, बेहिसाब वालंटियर्स क्योंकि अरविंद केजरीवाल नूं पूरा देश आज प्यार करदै। उनां दी इस सीबीआई दे दफ्तर विच जो पेशी होई ओहदे खिलाफ दिल्ली आ रहे सी प्रोटेस्ट करन ते उनां नूं बार्डरा ते रोक लिता जायेगा कि पंजाब दा कोई मिनिस्टर पंजाब दा देश दा कोई वी नागरिक अपनी राजधानी विच नहीं आ सकदा। ते ऐ विचकरा स्पीकर साहिबा कदो तक चलेगा, सतपाल मलिक दी गल सारे कर रहे ने ते जवाब देना चाहिदा ऐ। जो कह रहे ने कि मैं बहोत सेफली मैं कह सकता हूं कि प्रधानमंत्री साहब को भ्रष्टाचार से कोई परहेज नहीं है, जो इन्तहां बीजेपी अन्याय दी कर चुकी ऐ, इसदा अंत जरूर होयेगा। ऐ ओ ही दिल्ली है जित्थे गुरूतेग बहादुर साहिब जी दा गुरूद्वारा है, जित्ते ओनां दा शीश दा बलिदान होया सी। इक छोटी सी गल कह रहे सी, सबक लैनां चाहिदा, आजकल बड़े मत्थे टेकदे सी तुस्सी गुरूद्वारे जाके। गुरूतेग बहादुर साहब ने धर्म दी रख्या वास्ते शीश दा बलिदान दित्ता आज ओथे सोने दी लौ विच देसी घी दे दीवे जलान वालयां दी लैन लगदी है। ते दूसरे पासे औरंगजेब सी। औरंगजेब दी मजार ते तेल दा दीवा जलान वाला वी आज नहीं मिलदा स्पीकर साहिबा। इस चीज तो इनां नूं सबक लैनां चाहिदा है ।

माननीया अध्यक्षः चलिये बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री जरनैल सिंहः मैं अपनी गल खत्म करांगा स्पीकर साहिबा। ईडीआई, सीबी, सीबीआई ईडी के जोर पर तो तानाशाही कोई भी कर सकता है

''सीबीआई ईडी के जोर पर तो तानाशाही कोई भी कर सकता है

जो काम करके दिलों पर राज करे उसे केजरीवाल कहते हैं।''

थैंक्यू।

माननीया अध्यक्षः सोमनाथ भारती जी।

श्री सोमनाथ भारतीः अध्यक्षा महोदया आपका बहुत-बहुत धन्यवाद आपने मुझे इस महत्वपूर्ण मुद्दे पे बोलने का मौका दिया। सबसे पहले मैं सारे साथियों का धन्यवाद करना चाहता हूँ। कल जो हमारा प्रदर्शन रहा दिल्ली की सड़कों पे लाजवाब रहा। आपका सबका तहे दिल से धन्यवाद। पूरी दिल्ली ने इस बात को सराहा कि किस प्रकार से आम आदमी पार्टी के विधायकों ने, पार्षदों ने, सांसदों ने, कार्यकर्ताओं ने बहुत शांतिपूर्ण रवैये से उस बात को हर घर और दिल्ली के लोगों तक पहुंचा दिया कि भाजपा और माननीय मोदी जी आम आदमी पार्टी से, अरविंद केजरीवाल से कितनी घबराहट में है। साथियों आपको इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं अभी जब आ रहा था दिन में तो देखा भाजपा वाले प्रदर्शन कर रहे थे। तो मन में ख्याल आया कि भाजपा जब हरकत करती है ना, जब ये प्रदर्शन करती है अरविंद केजरीवाल के खिलाफ, तो लगता है गब्बर सिंह अहिंसा पे लैक्चर दे रहा है। मैंने आज साथियों के सारे वक्तव्य को सुना। अध्यक्षा महोदया, मैं आज दो मुद्दों को छुऊंगा। मेरे हाथ में एक ये फोटो है, ये माननीय मोदी जी हैं जो आगे भाषण दे रहे हैं और पीछे 40 जवानों का फोटो है चुनाव के पहले। ये वो फोटो है जब सीआरपीएफ के 40

जवानों की पुलवामा में हत्या हुई। उसका राजनीतिक दुरूपयोग किस प्रकार से किया गया। हम सब कह रहे थे इस बात को उस वक्त, पूरा देश कह रहा था उस बात को इस वक्त कि ये ऐसा सेनसिटिव स्टेट जम्मू काश्मीर और ऐसा सेनसिटिव रूट जहां हर 10 मिनट के ऊपर आपको रूकना पड़े, आपको अपनी आइडी चैक करानी पड़ती है, आपकी जांच होती है। उस रूट पे इतना बड़ा काफ़िला 1000 जवानों का काफिला और सड़क के माध्यम से कैसे जा रहा है। हम सबके मन में सवाल था। हम सब सोचते थे ये क्या है। इतनी इररिसपॉन्सीबल सरकार है। इतनी इलइन्फॉर्म सरकार है। उसका जवाब आया। सत्यपाल मलिक जो जम्मू कश्मीर के गर्वनर रहे, जिनके टेन्योर में ये घटना घटी, उन्होंने अपने इंटरव्यूह में इस बात को माना और ताल ठोक के कहा कि मैंने सलाह दी थी। सीआरपीएफ के जवानों ने सलाह दी थी, रिक्वस्ट की थी कि हमें प्लेन्स मोहैया कराया जाए, जिससे कि हम इतने बड़े काफिले को एक जगह से दूसरी जगह ले जा सके। अध्यक्षा महोदय, इसलिए इम्पोर्टेंट है कि बहुत देश भक्ति की बात करते हैं ये कि हम बड़े देशभक्त हैं, देशभक्त हैं, देशभक्त हैं। हमने कई बार इस सदन के अंदर भी, बाहर भी कहा कि एक बार एक औरत का बच्चा गुम हो गया। वहां के राजा के सामने पेश किया गया। उस बच्चे को लाया गया। दो महिलाओं ने क्लेम किया कि मेरा बच्चा है। तो राजा ने कहा एक काम करो इस बच्चे को दो भाग में बांट दो और आधा-आधा दोनों महिलाओं को दे दो। तो जिसका बच्चा था उसने कहा बांटों मत, काटो मत दूसरे को ही दे दो। यही हाल इनका है। भाजपा का एक भी धेहले का कान्ट्रीब्यूशन इस देश की आजादी में नहीं है और यही कारण है कि ये गद्दार हैं और यही कारण है कि पुलवामा में सत्यपाल मलिक

जी के कथन से सिद्ध होता है कि 40 जवानों को जानबूझकर के शहीद कराकर के इन्होंने अपना राजनीतिक उल्लू सीधा किया। शर्मसार कर रहा है पूरे देश को और रिपोर्ट है कि उस मूवमेंट के पहले पुलवामा में 11 बार खुफिया चेतावनी थी। जनवरी 2, 3, 7, 18, 21, 24, 25, फरवरी 9, 12 और 13 इतनी खुफिया चेतावनियों के बावजूद जानबूझकर के शहीदों को, हमारे नौजवानों को, हमारे जवानों को हमारे सैनिकों को बलि का बकरा बनाया गया। मैं चाहता हूँ वो इक्जैक्ट स्टेटमेंट जो सत्यपाल मलिक जी ने दिया वो क्या है। जब करन थापर ने पूछा तो कहा कि 'let me tell you the facts CRPF people asked for aircraft to ferry their people because such a huge convoy never goes by road.' कौन कह रहा है। गवर्नर कह रहा है। करन थापर ने पूछा they asked you, he says, 'they asked the Home Ministry, they refused to give. had they asked me, I would have given them the aircraft, no matter how. They only needed five aircrafts, which was not given to them.' फिर कहते हैं कि आप कह रहे हैं कि होम मिनिस्ट्री को आप उन्होंने होम मिनिस्ट्री से एयरक्राफ्ट मांगे और होम मिनिस्ट्री ने रिफ्यूज कर दिया तो कहते हैं 'yes, and I told it to the Prime Minister in the evening that this has happened.' अगर आपको याद होगा उस वक्त प्राइमिनिस्टर क्या कर रहे थे, सूटिंग कर रहे थे। सफारी में यही हिन्दुस्तान में सफारी में सूटिंग कर रहे थे जिम कार्बेट में और कहा it told to the Prime Minister in the evening कौन कह रहा है ये वहां का गवर्नर कह रहा है कि ऐसा हमारी गलती के कारण हुआ है। ये गवर्नर ने एडमिट किया है इसमें। ये बहुत बड़ी बात है पूरे देश के लिए। कह रहा है कि हमने कहा अगर वो कह रहे हैं कि अगर हमने पीएम को

बोला हम एयरक्राफ्ट दे दिये होते तो ये घटना नहीं घटती तो क्या कहा प्रधानमंत्री ने उनको, चुप रहो। चुप रहो और जनरल शंकर चौधरी जी ने कहा है सवाल उठाया। पूरी आर्मी पूरे देश के अंदर हर वक्त, हर घर कोई आज सवाल पैदा कर रहा है, सब पूछ रहे हैं कि आपने मुझे बलि का बकरा बनाया अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा के लिए। अध्यक्ष महोदय ये बहुत बड़ी बात है। ये आज प्राइममिनिस्टर मोदी को खुल के बोलना चाहिए कि अगर ये झूठ बोल रहे हैं सत्यपाल मलिक जी तो आगे आइये और आप प्रमाण दीजिए। जवाब देना चाहिए। ये छोटी बात नहीं है और मुझे लग रहा है इस इंटरव्यूह को दबाने के लिए ही अरविंद केजरीवाल जी के पास सीबीआई का नोटिस भेजा गया। इनके पास जवाब नहीं है कि 40 जवानों को जो बलि का बकरा बनाया है आपने। अध्यक्षा महोदय आज ये एक्सपोज हो चुके हैं कि इनके जैसा देशद्रोही पूरे भारत के इतिहास में कोई नहीं हुआ। अध्यक्षा महोदय, फिर कहते हैं कि जी हम भ्रष्टाचार विरोधी है, भ्रष्टाचार विरोधी है, भ्रष्टाचार विरोधी हैं। पूरा देश मांग कर रहा है। किस प्रकार से अडानी के मामले में चुप्पी साधो हुए हैं प्रधानमंत्री मोदी जी और भाजपा के साथी जो यहां बैठे हैं। अगर इनके पास जवाब है तो ये ही दे दें। सत्यपाल मलिक जी कह रहे हैं कि करप्शन जो है माननीय मोदी जी के लिए कोई बड़ा मुद्दा नहीं है। उनको इससे परहेज नहीं है। उनको पूछा कि राम माधाव 300 करोड़ रूपए के ऑफर लेके आए थे, बोले हाँ जी लेके आए थे। ये बात उन्होंने बताई, तो कहते हैं के जी ऐसा है ना कि जब मैंने बात करने का प्रयत्न किया तो मुझे कहा, चुप रहो। क्यों? क्योंकि उनको करप्शन सेपरहेज नहीं है। जब गोवा में करप्शन का मसला उठाया तो सत्यपाल मलिक जी को ट्रांसफर कर दिया गया। तो मैं जानना चाहता हूँ कि ना तो आप देशभक्त

ठहरे, आज आपकी सारी पोल खुल गई और मैं देख रहा हूँ कि भाजपा के साथी मेरी बात से सहमत हैं।

माननीया अध्यक्षः भारती जी अपने विषय पर रहें।

श्री सोमनाथ भारतीः बात ये है कि पूरे देश के अंदर इस बात की चर्चा होनी चाहिये। आज मैं उन चैनलों को भी कहना चाहता हूं जो आप बड़े देशभक्ति के ढिंढोरा पीटते हो सतपाल मलिक के इंटरव्यू से बड़ी कोई बात नहीं इस वक्त। आज सारे चैनलों को चलाना चाहिये उस इंटरव्यू को और दिखाना चाहिये कि किस प्रकार से इनकी देशभक्ति खोखली है। किस प्रकार से इनकी भ्रष्टाचार विरोधी बातें खोखली हैं। साफ साफ निकल के आ गया कि ये न तो देशभक्त हैं, न भ्रष्टाचार विरोधी हैं अध्यक्ष महोदय। तीसरी बात,

माननीया अध्यक्षः कंप्लीट कीजिये।

श्री सोमनाथ भारतीः तीसरी बात, ये मैं एफिडेविट लेकर आया हूं ये एफिडेविट माननीय मोदी जी का है, चुनाव का एफिडेविट। उसमें ये लिख रहे हैं अपनी शिक्षा के बारे में, बता रहे हैं कि जी हम कितने पढ़े लिखे हैं और ये कह रहे हैं जी मैं बैचलर आफ आर्ट्स हूं ये उनका 2019 का एफिडेविट है। Bachelor of Arts from Delhi University 1978. Master of Arts, Gujrat University 1983. अब हम सबने, हमारे साथियों ने कई बार इस बात को रखा कि जहां से आदमी पढ़ता है अगर वो प्रधानमंत्री बन जाये, एमपी बन जाये, सीएम बन जाये तो वहां का लोकनायक, वहां के छात्र, वहां के इंस्टीट्यूट, वहां के प्रोफ्रेसर्स खुशी मनाते हैं, उसको बुलाते हैं, ऑनर करते हैं, उनके दोस्त यार बाहर निकल के आ जाते हैं। सौरभ भाई ने किसी इंटरव्यू

में बताया कि हमारे फेसबुक में इतने देखिये हमारे क्लासमेट्स ठहरे। तो पहली बात तो इनका कोई अतापता नहीं कि भई कहां पढ़े, किसके साथ पढ़े, अभी मेरे साथी ने कहा कि किस प्रकार से तोमर जी को घुमाया फिराया, वहां कौन से टायलेट गये थे, कौन से कमरे में पढ़े थे, कौन से हॉस्टल में रहे थे। और मैं आपको बता दूं भाजपा के साथी जान लें 2024 का चुनाव मोदी जी के लिये असंभव सा दिख रहा है। क्यों? अभी तो गुजरात यूनिवर्सिटी को गुजरात हाईकोर्ट से मैनेज कर लिया कि भई मामा दिखाओ डिग्री। जब ये एफिडेविट फिर भरी जायेगी 2024 में और लिखेंगे कि भई एमए कौन से उसमें किया Entire Political Science वैसे जिस किसी ने भी मोदी जी को सलाह दिया वो उनका दुश्मन था। लिखवा दिया Entire Political Science मैंने यूजीसी में पूछा कि भई Entire Political Science किसी यूनिवर्सिटी में पढ़ाई जाती है, बोला भाई साहब आप तो मत पूछो। मैंने कहा क्यों? कहता है मुझे पता है आप क्यों पूछना चाह रहे हैं। मैंने कहा आरटीआई लगा दूं? बोला लगाओ, देखते हैं। तो बिधूड़ी जी पूरे हिंदुस्तान में किसी यूनिवर्सिटी में Entire Political Science नहीं पढ़ाई जाती।

माननीया अध्यक्षः सोमनाथ जी कंप्लीट कीजिये।

श्री सोमनाथ भारतीः और ये जब 2024 को भरेंगे जो भी उम्मीद्वार कोई और अगर उस सीट पर भरेगा तो पूछ सकता है रिटर्निंग आफिसर से कि भई इनकी डिग्री दिखाओ जो तुम भर रहे हो। क्योंकि 2016 का जजमेंट है 2016 का जजमेंट है सुप्रीम कोर्ट का कि अगर कोई भी व्यक्ति अपने एफिडेविट में अपनी शिक्षा को लिखता है तो उसे डिग्री दिखाना पड़ेगा ये 2016 का सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट है और उसी आधार पे उस एमएलए का जिसका केस गया

था सुप्रीम कोर्ट के सामने उसको निरस्त कर दिया गया। अभी बताता हूं तरीका क्या है इसका। 2024 में जैसे कोई व्यक्ति कहता है और डिग्री नहीं दिखाते हैं, शायद नहीं दिखायेंगे क्योंकि यूनिवर्सिटी को आगे आना पड़ेगा। और अगर रिटर्निंग आफिसर अलाउ कर देता है, अलाउ कर देगा और जीत जाते हैं मान लो तो इलेक्शन पीटिशन के माध्यम से 45 दिन के भीतर चुनाव कंप्लीट होने के 45 डेज़ के भीतर वो व्यक्ति इनका चुनाव चैलेंज कर सकता है और उसी प्रोसेस के आते आते सुप्रीम कोर्ट में फिर इनका चुनाव जो है वो रद्द किया जायेगा। और अगर ये नहीं भरते हैं तो 420 का केस तैयार खड़ा है कि पिछले चुनाव में आप थे एमए, बीए और इस चुनाव में हो गये एसएससी। तो ये माननीय मोदी जी को बता देना भाजपा के साथियों।

माननीया अध्यक्षः चलिये भारती जी कंप्लीट कीजिये।

श्री सोमनाथ भारतीः मैंने आपके सामने 2024 के चुनाव के तीनों पहलू रख दिये। ये न पूरे देशभक्त ठहरे, न तो भ्रष्टाचार रहित में इनको इंटरस्ट है और इनकी जो ये डिग्री है ये 2024 में इनके लिये बहुत बड़ी मुसीबत बनके उभरेगी। और जहां तक मेरी लीगल नॉलेज जाती है, 2024 के अंदर ये चुनाव नहीं लड़ पायेंगे और अगर लड़ लिये तो इनका चुनाव रद्द होगा 2024 के अंदर। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः संकल्प प्रस्तुत करने की अनुमति। अब श्री दिलीप पाण्डेय, माननीय मुख्य सचेतक अपना संकल्प प्रस्तुत करने की सदन से परमिशन लेंगे।

श्री दिलीप पाण्डेयः अध्यक्ष महोदया, मैं संकल्प प्रस्तुत करने के लिये सदन की परमिशन चाहता हूं।

माननीया अध्यक्षः यह प्रस्ताव सदन के समक्ष है

जो इसके पक्ष में हैं, वे हाँ कहें

जो इसके विरोध में हैं, वे ना कहें

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता

प्रस्ताव पास हुआ।

माननीया अध्यक्षः अभी रख रहे हैं पहले परमिशन तो ले लेने दो तभी तो रखेंगे। थोड़ा सा तो।

माननीया अध्यक्षः रखिये आप प्रस्ताव रखिये।

श्री दिलीप पाण्डेयः अध्यक्ष महोदया, भारत के प्रधान मंत्री जो दुनिया में सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी का प्रतिनिधित्व करने का दावा करते हैं वह इस देश की सबसे युवा राजनीतिक पार्टी आम आदमी पार्टी को कुचलने के लिये अपनी पूरी ताकत लगा रहे हैं। प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी ने लंबे समय से आम आदमी पार्टी के तेजी से हो रहे विकास एवं विस्तार और इसके राष्ट्रीय संयोजक श्री अरविंद केजरीवाल जी की बढ़ती लोकप्रियता को रोकने की कोशिश की है। हालांकि देश के दूरदराज के भागों में श्री अरविंद केजरीवाल जी की बढ़ती लोकप्रियता को रोकने में नाकाम रहने पर प्रधानमंत्री महोदय ने आम आदमी पार्टी को कुचलने के लिये सीबीआई, ईडी सहित सभी केंद्रीय एजेंसियों को फैला दिया है। स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री महोदय सिर्फ एक

शख्स से डरते हैं जिसका नाम श्री अरविंद केजरीवाल है। श्री अरविंद केजरीवाल ने अपने दिल्ली के Model of Governance के माध्यम से पूरी दुनिया को दिखा दिया है कि भारत खुद को इस दुनिया में नंबर वन के तौर पर बदल सकता है, स्थापित कर सकता है। देशभर के लोगों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी और गवर्नेंस के बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में उनके जबर्दस्त काम को देखा है। गुजरात में भारतीय जनता पार्टी की सरकार पिछले 30 वर्षों में एक भी विश्वस्तरीय स्कूल नहीं बना सकी जिसके कारण प्रधानमंत्री को टेंट से बने अस्थाई स्कूल का वीडियो बनाना पड़ा। दशकों से कई राज्यों में भाजपा के शासन के बावजूद वे अपने नागरिकों को मुफ्त बिजली और पानी जैसी बुनियादी सेवायें देने में विफल रहे। प्रधानमंत्री ने महसूस किया है कि वह शासन के मामले में, गवर्नेंस के मामले में श्री अरविंद केजरीवाल के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते। भारत के लोग श्री अरविंद केजरीवाल जी के सपने पर विश्वास करते हैं, उन्हें भरोसा है कि श्री अरविंद केजरीवाल ही भारत को नंबर वन बना सकते हैं और यह सपना उनके जीवनकाल में ही हासिल किया जा सकता है। आज श्री अरविंद केजरीवाल 140 करोड़ भारतीयों की आशा का प्रतिनिधित्व करते हैं लेकिन प्रधानमंत्री महोदय भारत के लोगों की इस उम्मीद को कुचलना चाहते हैं। इस सदन ने देखा है, अवलोकन किया है कि भारतभर के लोग श्री अरविंद केजरीवाल के साथ जुड़ रहे हैं और भारत को नंबर वन बनाने के लिये इस मूकक्रांति का हिस्सा बन रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी अपनी पूरी ताकत और एजेंसियों के साथ इस विचार को कभी रोक नहीं पायेंगे जैसा कि विक्टर युगों ने बयान किया है कि इस धरती पर कोई भी ताकत उस विचार को नहीं रोक सकती अगर उसका वक्त आ गया, उसका समय आ गया है।

माननीया अध्यक्षः अभय वर्मा जी।

श्री अभय वर्माः धन्यवाद अध्यक्षा महोदय। अभी सदन में आने से पहले मैंने सारे रिकार्ड चेक किये। आज हम लोगों ने एक इतिहास बना दिया कि पहली बार विधान सभा सिर्फ अल्पकालिक चर्चा के लिये बुलाई गयी है। 1993 से लेकर अब तक एक बार भी ऐसा कभी भी समय नहीं आया कि विधायी कार्यों के अलावा कभी भी बिना किसी और विधेयक या कानून बनाने से संबंधित चर्चा के सीधे अल्पकालिक चर्चा के लिये सत्र बुलाया गया है ये अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना आज हुआ और पूरा दिन सदन एक अल्पकालिक चर्चा और वो भी चर्चा किसपे सीबीआई और ईडी जिसपे न इस सदन का कोई कंट्रोल है, न इस सदन से कोई प्रस्ताव इस केंद्रीय एजेंसी के खिलाफ हम दे सकते हैं। और इसमें एक बड़ा महत्वपूर्ण सवाल उठाया गया है कि मुख्यमंत्री के खिलाफ दुर्भावना से, उनकी लोकप्रियता और उनके कार्यों को देखते हुए इस सेंट्रल एजेंसी का दुरूपयोग किया जा रहा है। अध्यक्षा महोदय, हमने सुना था कि जब भी कोई भी इंक्वायरी किसी भी प्रकार की जांच होती है तो जांच एजेंसी को प्रभावित नहीं करना चाहिये और आज ये हाउस लगातार सुबह से सीबीआई और ईडी जैसी जांच एजेंसी के खिलाफ बोल बोल के प्रभावित करने का प्रयास किया जा रहा है जो निश्चित रूप से इस सदन की गरिमा के खिलाफ है। अध्यक्षा महोदय, चर्चा में बहुत सारे सदस्यों ने अपनी अपनी बातें रखी हैं लेकिन आखिर ये जांच हो क्यों रही है। ये जांच की आंच मुख्यमंत्री पे क्यों आई इसपे भी चर्चा होनी चाहिये। हमें याद है आज से एक साल पहले इसी हाउस में माननीय उप-मुख्यमंत्री जी ने शराब घोटाले पे लगभग 40 मिनट नयी पॉलिसी के बारे में बताया था। रिकार्ड पे है। इसको निकाल के सुन सकते

हैं। इसको निकाल के देख सकते हैं। उन्होंने दावा किया था कि जो ये पॉलिसी है उसमें भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिये और बड़े बड़े जो कारोबारी, बड़े बड़े जो दलाल हैं उनके आधिपत्य को खत्म करने के लिये ये नयी पॉलिसी हम लेके आ रहे हैं। हुआ क्या, हुआ ठीक इसके विपरीत। और इसका एक उदाहरण बजट भाषण में माननीय वित मंत्री ने स्वीकार किया कि 32 परसेंट रेवेन्यू सरकार का नुकसान हुआ। सरकार ने कहा था हम 9500 करोड़ रूपया कमायेंगे, सरकार के पल्ले अब 21 मार्च तक उम्मीद था कि 6500 करोड़ रूपया आयेगा और मैंने एक लिखित प्रश्न पूछा था इसी हाउस में जिसमें उन्होंने जवाब दिया था कि नयी लिकर पॉलिसी में कुल 22 करोड़ लीटर दारू बेची गयी और उस 22 करोड़ लीटर दारू में 5576 करोड़ रूपये का रेवेन्यू सरकार को आया। सेम पीरियड में उससे पिछले साल सिर्फ 12 करोड़ लीटर बेचे गये दारू पर 4890 करोड़ आया। 12 करोड़ लीटर दारू बेचके 4890 करोड़ रूपये सरकार कमाती है तो दुगुना दारू 22 करोड़ लीटर दारू बेचने के बाद भी क्यों 5500 करोड़ ही कमा पा रही है, ये जो 3100 करोड़ का नुकसान है उसका जवाब कौन देगा मैडम। जवाब तो मुख्यमंत्री को देना ही पड़ेगा। और ईडी और सीबीआई के पास ऐसा नहीं है कि कभी और कोई मुख्यमंत्री या मंत्री नहीं गया हो। मैं इतना बताना चाहता हूं कि अगर ये नुकसान नहीं हुआ, अगर दिल्ली की जनता की जेब पे डाका नहीं पड़ा, सरकारी खजाने का लॉस नहीं हुआ तो क्यों सिसोदिया जी जेल गये, क्यों नहीं कोर्ट ने बेल दिया, क्यों कोर्ट 20 दिन उनको रिमांड पे देती है?

आज बड़ी बड़ी बातें हमारे साथी कह रहे हैं, जाके कोर्ट के सामने बोलिये न। न आपको लोअर कोर्ट कोई रिलीफ दे रहा, न हाईकोर्ट कोई रिलीफ दे

रहा, न सुप्रीम कोर्ट कोई रिलीफ दे रहा, तो क्या ये सब भाजपाई हो गये हैं। दोष लगाना आसान होता है और आरोप को फेस करना एक अलग बात होता है। आपको जो भी लड़ाई लड़नी है, आपने बहुत लोगों का नाम लिया है, कोर्ट के दरवाजे खुले हैं, आप जाके कोर्ट में अपनी बात कह सकते हैं। क्यों नहीं अरविंद केजरीवाल जी एंटीसिपेटरी बेल लगा रहे? क्योंकि उनके मामले में कहीं न कहीं उनकी संदिग्ध भूमिका बनती है और उस भूमिका से बच नहीं सकते चाहे आप मुख्यमंत्री क्यों नहीं हों क्योंकि यही 13 विपक्षी दल, मैडम ये 13 विपक्षी दल मिल के सुप्रीम कोर्ट गये थे और उन्होंने कहा था कि केंद्र सरकार ईडी और सीबीआई एजेंसी का दुरूपयोग कर रही है, इनको बहुत सारे पावर दे दी है तो सुप्रीम कोर्ट ने क्या कहा, सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कोई बड़ा नेता हो, कोई बड़ा उद्योगपति हो, कोई सामान्य व्यक्ति हो, सबके लिये कानून बराबर है और सबके लिये एजेंसी बराबर होगा।

माननीया अध्यक्षः चलिये कंप्लीट कीजिये।

श्री अभय वर्माः मैडम एक बात और कहना चाहता हूं। बार बार सीबीआई और ईडी पे क्वेश्चन उठाया जा रहा है। जब 2014 में केंद्र में मोदी सरकार आई उससे पहले 2004 से 2014 तक सीबीआई और ईडी ने जितने भी मुकदमे दर्ज किये उसमें सिर्फ 4156 करोड़ रूपये की रिकवरी हुई। जबसे मोदी सरकार है पिछले नौ सालों में एक लाख करोड़ रूपये से ज्यादा भ्रष्टाचार के पैसे मोदी जी ने पकड़े हैं। ऐसे हाउस बुलाकर सीबीआई और ईडी को जो प्रभावित करने का प्रयास किया जा रहा है इससे केंद्रीय एजेंसी डरने वाली नहीं है। ये मोदी है, भ्रष्टाचार पे किसी को नहीं छोड़ेगा।

माननीया अध्यक्षः चलिये बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री अभय वर्माः आपको आना ही पड़ेगा।

माननीया अध्यक्षः बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री अभय वर्माः मैडम एक।

माननीया अध्यक्षः धन्यवाद।

श्री अभय वर्माः चलिये। कोई नहीं, पुलवामा में भी आपका हाथ फ्री है आप जाके कर सकते हैं मुकदमा। आपके कहने से कुछ नहीं होगा।

माननीया अध्यक्षः अभय वर्मा जी बैठ जाईये।

श्री अभय वर्माः आप अपनी बात कहो। अरे आपके मुख्यमंत्री भ्रष्टाचार में आ गये हैं और आप कह रहे हो कि बस।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः अभय वर्मा जी, अभय वर्मा जी

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः अभय वर्मा जी।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः धन्यवाद स्पीकर साहिबा।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः अभय वर्मा जी। अभय वर्मा जी बैठिये।

...व्यवधान...

श्री अभय वर्माः दिल्ली की जनता माफ नहीं करेगी। मुख्यमंत्री जी ने जो 3100 करोड़ का घोटाला करा है दिल्ली की जनता माफ नहीं करेगी। दिल्ली की जनता माफ नहीं करेगी। दिल्ली की जनता बार बार पूछ रही है शराब घोटाले में क्यों आप लोगों ने लूटा।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः अभय वर्मा जी बैठिये।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः सोमनाथ जी शांति बनाये रखिये। बीएस जून साहब, 5 मिनट में अपनी बात रखिये। बीएस जून जी 5 मिनट हैं आपके पास। पांच मिनट में अपनी बात रखिए।

श्री बी.एस. जूनः धन्यवाद स्पीकर साहिबा। स्पीकर साहिबा अभी अभी अभय वर्मा जी ने एक बात कही कि अरविंद केजरीवाल जी एंटीसिपेटरी बेल क्यों नहीं लगा देते? अरविंद केजरीवाल जी एंटिसिपेटरी बेल क्यों लगायें? न ही ये स्कैंडल में मुलजिम हैं न वो गवाह हैं।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः अभय वर्मा जी। अभय वर्मा जी।

श्री बी.एस. जूनः अब सुन लीजिए, अरे सुन लीजिए।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः ये अच्छी बात नहीं है। अभय वर्मा जी ये अच्छी बात नहीं है। ये तरीका ठीक नहीं है, बिल्कुल तरीका ठीक नहीं है। बिल्कुल तरीका ठीक नहीं है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः जून साहब आप किसी का नाम नहीं लेंगे। आप बात करिये यहां पर चेयर से।

श्री बी.एस. जूनः मैडम एंटिसिपेटरी बेल तब लगती है जब 41 सीआरपीसी का किसी को नोटिस दिया जाता है एज ए सस्पेक्ट, तब लगती है। अभी तक अरविंद केजरीवाल के पास ऐसा कोई नहीं है।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः अजय दत्त जी।

श्री बी.एस. जूनः दूसरी बात, अभी हमारे एक साथी ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री ग्लोबली एक्सेप्टिड नेता है और उन्होंने देश की गरिमा दुनिया में बढ़ा दी है। पिछले ही महीने इंटरपोल ने मेहुल चौकसी का रेडकार्नर वारंट कैंसिल कर दिया। कहां थे ये ग्लोबल नेता? कहां थे ये ग्लोबल नेता उस टाईम सुनिए। पिछले महीने भारतीय दूतावास पर इंग्लैंड में, लंदन में अटैक किया गया, कहां थे ये ग्लोबल नेता? आज इंग्लैंड का प्रधानमंत्री भारतीय मूल का है सुनक। अगर आप इतने एक्सेप्टेबल ग्लोबली नेता हैं तो कहिये नीरव मोदी को भारत को वापिस

कर दे। नीरव मोदी को वापिस ले आईये। इसके अलावा कनाडा में अटैक होता है, फ्रांस में अटैक होता है तो कहां है ग्लोबली एक्सेप्टेंस। कहीं नहीं है, सिर्फ ड्रामा है, दिखावा है। अब मैडम मैं असली मुद्दे पे आता हूं। ईडी और सीबीआई का मिसयूज। कल मुख्यमंत्री जी को बुलाया 160 का नोटिस दिया सीआरपीसी का और उनको 10 घंटे बिठाये रखा। क्वेश्चन कितने पूछे, 56 क्वेश्चन, 56 क्वेश्चन में अपनी ईगो सैटिस्फाई मैं सीबीआई को नहीं कह रहा, उनके जो आका हैं भारतीय जनता पार्टी और जो उपर के नेता हैं प्रधानमंत्री, गृहमंत्री अपनी ईगो सैटिस्फाई करने के लिये, अपनी ताकत दिखाने के लिये जनता में ये भ्रम फैलाया गया कि देखो हमने दिल्ली के मुख्यमंत्री को 10 घंटे कनफाईन किया, उनको डिटेन किया, बिठाये रखा। 56 क्वेश्चन 10 घंटे में नहीं पूछे जाते। ये तो बड़प्पन है माननीय मुख्यमंत्री जी का कि बाहर आके उन्होंने कहा कि बड़े कंड्यूसिव एटमोस्फियर में पूछताछ हुई और सीबीआई के आफिशियल्स का बिहेवियर भी ठीक था। लेकिन करने वाले उपर हैं। उन्होंने ये दिखाने की कोशिश की कि आज हम आपको 10 घंटे बिठा सकते हैं और ऐसे ही झूठे हम आपको कहीं फंसा सकते हैं जैसे आपके पहले दो मंत्रियों को फंसाया है। अब मैडम मैं नेक्स्ट क्वेश्चन पे आता हूं। 14 फोन का जिक्र आया सीज़र मीमो में। कि जी 5 तो ईडी के पास हैं और 9 फोन जो हैं इन्होंने डेस्ट्राय कर दिये। जबकि 9 फोन सारे वर्किंग आर्डर में हैं, चल रहे हैं। तो कौन सा फोन डेस्ट्राय हुआ? कल इनके एक प्रवक्ता टीवी डिबेट में कह रहे थे नहीं जी 4 फोन हैं एक दिया है तीन अभी नहीं दिये, वो डेस्ट्राय कर दिये। तो पहले ये डिसाईड कर लें कि कितने फोन डेस्ट्राय हुए और कितने फोन एक्चुअल में थे। कुछ नहीं पता लग रहा कि कोई कुछ बोल देता है, कोई कुछ बोल देता है। दूसरा टॉर्चर

की बात आई। कि टार्चर करके स्टेटमेंट जो है एब्स्ट्रैक्ट की जाती हैं कस्टम एक्ट में और इसमें पीएमएलए में जो स्टेटमेंट मुजरिम देगा उसके खिलाफ यूज हो सकती है। लेकिन सवाल ये है कि ये वाकई में सही बात है कि टार्चर किया जाता है और टार्चर करके आडियो/वीडियो इनका रिकार्ड कर लो कि मेरे साथ कुछ हुआ ही नहीं। और आज स्टेटमेंट आई है ईडी की कि हमारे पास आडियो भी है, वीडियो भी है, हमने किसी को कोई टार्चर नहीं किया। ये सब ड्रामा है, लोगों को टार्चर किया जाता है और उसके साथ साथ वीडियो रिकार्डिंग होती है आडियो रिकार्डिंग होती है कि हमारे साथ कुछ नहीं हुआ, हम वालंटरी स्टेटमेंट दे रहे हैं। अभी एक बात आई कि जो इनकी बेल क्यों नहीं हो रही मनीष सिसोदिया जी की? पीएमएलए एक्ट में 60 दिन में चार्जशीट आती है, कंप्लेंट आती है। जब तक कि चार्जशीट नहीं आ जाती, कंप्लेंट नहीं आ जाती कोर्ट बेल ग्रांट नहीं करती, एक सिंगल इंस्टांस आप बताईये जिसमें 60 दिन से पहले बेल हुई हो? करो आप कंप्लेंट फाईल, बेल भी हो जायेगी। करो कंप्लेंट फाईल, लेकिन नहीं करेंगे। सत्येंद्र जैन की? सत्येंद्र जैन जी को अगर आज 11 महीने हो गये ट्रायल क्यों नहीं शुरू हो रही। उनकी ट्रायल शुरू नहीं करने दे रहे। कुछ न कुछ, कुछ न कुछ लगाते रहेंगे और ट्रायल स्टेज पे आ ही नहीं रहा। तो जानबूझ के इनको अंदर रखा जा रहा है ताकि हरासमेंट की जाये और सबसे बड़ा कारण क्या है मैडम कि मेन चार्जशीट आती है उसके बाद दो चार्जशीट और आ जाती हैं सप्लीमेंटरी चार्जशीट। क्रिमिनल लॉ में एक लिमिट है कि आप कितनी सप्लीमेंटरी चार्जशीट फ्राईल कर सकते हो। आज आपने जो गिरफ्तार कर लिया 60 दिन तक इंतजार करो फिर उसकी सप्लीमेंटरी चार्जशीट फाईल कर दी, अगले महीने एक और को गिरफ्तार कर लो फिर 60 दिन इंतजार करो फिर एक सप्लीमेंटरी चार्जशीट आ जायेगी।

माननीय अध्यक्षाः कंप्लीट कीजिये।

श्री बी.एस. जूनः मैं कोई रिपीटिशन नहीं कर रहा हूं मैं सिर्फ लीगल बातें बोल रहा हूं। तो कोर्ट को भी देखना चाहिये कि भई सप्लीमेंटरी चार्जशीट का कोई एंड है या नहीं। दूसरी बात, अगर बात करें मैडम आज हर एजेंसी कंस्टीट्यूशनल जितने भी प्रोविजंस हैं, कोर्ट हैं, इंस्टीट्यूशंस हैं they are all under threat ज्यूडिशियरी को ले लीजिये आप। इधर एक जज रिटायर हुआ, अगले दिन वो राज्यसभा का मेंबर बन जाता है। एक दूसरा जज रिटायर हुआ, अगले दिन गवर्नर बन जाता है। पहले क्या होता था एक कूलिंग आफ पीरियड होता था और वो ज्यूडिशियरी में आज भी है। अगर एक सुप्रीमकोर्ट का जज रिटायर होता है तो दो साल तक वो प्रैक्टिस नहीं कर सकता। उस पीरियड को कहते हैं कूलिंग आफ पीरियड। वो भी इन्होंने खत्म कर दिया। इतनी डिग्रेडेशन आ गया है सिस्टम में और इतना डिग्रेड कर दिया है 2014 के बाद कि हर एजेंसी, हर दिन जो है वो रिटार्डिड हो चुकी है। तीसरी बात मैडम, अभी कल परसो आपने देखा होगा कि पुलिस कस्टडी में दो आदमियों को मार दिया जाता है, प्रेस के सामने पुलिस कस्टडी में। ये anarchy नहीं है तो और क्या है। एक anarchy की तरफ बढ़ चुके हैं अराजकता की तरफ। और अगर ये ऐसा ही सिस्टम चलता रहा तो वो दिन दूर नहीं जब ये देश सिविल वार के मुहाने पर खड़ा होगा। तो मैं इसलिये बार बार कहता हूं कि जितना भी ये ईडी, सीबीआई का मिसयूज हो रहा है ये सोसाइटी को डिवाईड करते हैं, डिवाईड कर रहे हैं और देश में आज नफरत का और भय का माहौल है, इससे किसी का भला होने वाला नहीं। आज ये जो मर्जी करें कल इनको भुगतना पड़ेगा। यही

जिम्मेवारी लेनी पड़ेगी इनको कि इनकी वजह से इनकी पॉलिसियों की वजह से देश आज वहां पहुंचा गया।

माननीय अध्यक्षाः चलिये।

श्री बी.एस. जून: तो मैं ज्यादा समय नहीं ले रहा हूं, मैं ये कहूंगा कि ईडी, सीबीआई का मिसयूज ये बंद करें। एक इंस्टांस और दूंगा छोटा सा। यूपी में एक पोलिटिकल अपोनेंट को यूएपीए में एनआईए ने बंद कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने जाके उसको सैट असाईड कर दिया। तो ये एनआईए, सीबीआई, ईडी इसका दुरूपयोग बंद कीजिये, मन की बात करते हैं मोदी जी इस बार उनको कहियेगा कि एक तो जवाब दे दें अडानी इशु पे और एक जवाब दे दें ये मेहुल चौकसी इशु पे कि ये दो रेडकार्नर वारंट कैसे कट हो गया। बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः रामवीर बिधूड़ी जी। समय का ध्यान रखियेगा।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, माननीय नेता प्रतिपक्षः बता दीजिए कितना समय बोलना है।

माननीया अध्यक्षः चलिये। शुरू कीजिये। आप शुरू कीजिये।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, माननीय नेता प्रतिपक्षः आधा घंटा तो आपको लीडर आफ अपोजिशन को देना ही चाहिये।

माननीय अध्यक्षाः आप शुरू कीजिये। आप शुरू कीजिये न, आप छोड़ दीजिये। आप शुरू कीजिए।

माननीय नेता, प्रतिपक्षः आदरणीय सभापति महोदया। श्री राजेश गुप्ता जी जो इस हाउस के ऑनरेबल मेंबर हैं उन्होंने अल्पकालिक चर्चा प्रारंभ की है। इस चर्चा में मुझे भी बोलने का आपने अवसर दिया है मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूं। आदरणीय सभापति महोदया, श्री मदन लाल खुराना जी दिल्ली की प्रथम विधान सभा के चीफ मिनिस्टर थे और जिस कुर्सी पर आप बैठी हैं इस कुर्सी पर भारतीय जनता पार्टी के बहुत ही वरिष्ठ नेता, देश के भूतपूर्व प्रधानमंत्री आदरणीय श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी मेट्रोपोलिटन काउंसिल के चेयरमैन के रूप में बैठते थे। आपको याद होगा एक डायरी में यह लिखा हुआ मिला एमएल और एमएल के सामने दो लाख रूप्या, केएल उसके सामने लिखा हुआ था ढाई लाख रूपया। अपोजिशन ने आरोप लगाया एमएल का मतलब मदन लाल खुराना और केएल का मतलब कृष्ण लाल आडवाणी जी। आदरणीय सभापति महोदया, अब ये क्या हो रहा है ये? अच्छी बात है क्या।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः साहनी जी बैठ जाईये। प्रहलाद सिंह जी बैठ जाईये। आप बोलते रहिए।

...व्यवधान...

माननीय नेता प्रतिपक्षः आदरणीय सभापति महोदया,

माननीया अध्यक्षः जरनैल जी।

माननीय नेता प्रतिपक्षः आदरणीय सभापति महोदया, श्री मदन लाल खुराना जी ने चीफ मिनिस्टर के पद से इस्तीफा दे दिया। श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी ने पार्लियामेंट से इस्तीफा दे दिया, ये है भारतीय जनता पार्टी के।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः भई क्या बात है बोलने दीजिये।

माननीय नेता प्रतिपक्षः बहुत मुश्किल हो जायेगा।

माननीय अध्यक्षाः मंत्री महोदय को भी बोलना है।

माननीय नेता प्रतिपक्षः मैं किसी को डिस्टर्ब करता नहीं। और एक एलओपी को इस तरह से डिस्टर्ब किया जा रहा है, शोभा नहीं देता।

माननीया अध्यक्षः आप उधार बात ना करें। चेयर से बात करें।

माननीय नेता, प्रतिपक्षः आदरणीय सभापति महोदया, ये है भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं का त्याग, तपस्या और।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षाः क्या बात है भई।

माननीय नेता प्रतिपक्षः सहचरित्र, चरित्रवान मुख्यमंत्री जी इस सदन में उपस्थित नहीं हैं। मैं उनसे अनुरोध करूंगा उनकी गैरहाजिरी में कि मुख्यमंत्री जी को खुराना जी और आडवाणी जी का जो उन्होंने शानदार उदाहरण पेश किया। उस रास्ते पर चलकर दिखाए हैं। आदरणीय अध्यक्ष महोदया, जब नई एक्साइज पॉलिसी विधानसभा में लाई गई तो मैंने तीन बातें कही थी कि शराब के ठेकेदारों का कमिशन दो परसैंट से बढ़ाकर 12 परसैंट कर दिया इसमें हजारों करोड़ रुपए का घोटाला हुआ है। जिन रिहायशी क्षेत्रों में हमारा कानून शराब के ठेके खोलने की अनुमति नहीं देता है, उन क्षेत्रें में भी सैकड़ों शराब के

ठेके खोलकर शराब के ठेकेदारों से सैकड़ों करोड़ रुपया लिया गया है। शराब बेचने का समय रात 10 बजे तक होता था, बगैर पुलिस की अनुमति के, बगैर पुलिस से एनओसी लिए उसकी समयसीमा बढ़ाकर प्रातः 3 बजे कर दी और मैंने कहा था कि इस नई शराब नीति को वापस ले लो। मैंने आग्रह किया था आदरणीय मुख्यमंत्री जी से। हमसभी विधायकों ने भारत सरकार से ये आग्रह किया था कि नई शराब नीति जो लाई गई है उसमें हजारों करोड़ रुपए का घोटाला हुआ है सीबीआई से इसकी जांच हो। हमारा आग्रह स्वीकार नहीं किया। आदरणीय सभापति महोदया, मैं इस ऑनरेबल हाउस को बताना चाहता हूं, आप क्यों ईडी और सीबीआई के ऊपर सवाल खड़ा कर रहे हो, क्यों आप मोदी जी के ऊपर सवाल खड़ा कर रहे हो। अरे भई 8 जुलाई, 2022 को दिल्ली के मुख्य सचिव श्री नरेश कुमार, जो आपके मातहत काम करते हैं, आपके चीफ सेक्रेटरी हैं उन्होंने दिल्ली के एल जी को, दिल्ली के ओनरेबल चीफ मिनिस्टर को और दिल्ली के ओनरेबल डिप्टी चीफ मिनिस्टर को एक रिपोर्ट सौंपी और रिपोर्ट क्या कहती है। रिपोर्ट कहती है कि शराब के ठेकेदारों को, उनकी जो लाइसेंस फीस थी उसमें 144 करोड़, 36 लाख रुपए की छूट दी गई है। अब नीति में किसी भी बदलाव से पूर्व एक्साइज डिपार्टमेंट को कैबिनेट, कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्स और दिल्ली के ओनरेबल एल जी से अनुमति लेनी चाहिये थी और यदि नहीं ली गई तो ये गैर कानूनी था। आज जवाब देंगे ओनरेबल चीफ मिनिस्टर। लाइसेंस धारकों को अनुचित लाभ पहुंचाना– रिपोर्ट कह रही है मनीष सिसोदिया जी पर विदेशी शराब की कीमतों में बदलाव करने, प्रति बीयर 50 रुपया आयात शुल्क हटाकर लाइसेंस धारकों को अनुचित फायदा पहुंचाने का चीफ सेक्रेटरी ने आरोप लगाया। क्या ओनरेबल डिप्टी चीफ मिनिस्टर रिप्लाई

करेंगे? एक्साइज विभाग ने शराब के ठेकेदारों को 30 करोड़ रुपया वापस कर दिया। सरकार ने लाइसेंस की बोली के लिए जमा किए गए 30 करोड़ रुपया कम्पनी को वापस कर दिये। रिपोर्ट में कहा गया है यह दिल्ली आबकारी नियम-2010 का उल्लंघन है। अगर कोई आवेदक लाइसेंस के लिए औपचारिकताएं पूरी नहीं कर पाता है तो उसकी जमा राशि जब्त हो जाती है। क्या ऑनरेबल डिप्टी चीफ मिनिस्टर साहब बताएंगे कि 30 करोड़ रुपया शराब के ठेकेदारों को क्यों लोटाया गया? आदरणीय सभापति महोदया, अगर श्री मनीष सिसोदिया जी, श्री सतेंद्र जैन जी को गलत गिरफ्तार किया गया है या सीबीआई, ईडी ने गलत मुकद्दमें दायर किए हैं, तो उनको जमानत क्यों नहीं मिल रही है? आदरणीय सभापति महोदया, श्री सिसोदिया जी, करीब 2 महीने से जेल में है, श्री सतेंद्र जैन जी लगभग एक साल से जेल में है। क्या ईडी और सीबीआई के साथ-साथ देश की अदालतें भी क्या पक्षपात कर रही है, आज ऑनरेबल चीफ मिनिस्टर को ये बात बतानी पड़ेगी। आदरणीय सभापति महोदया, 31 मार्च, 2023 को विशेष न्यायधीश माननीय श्री एम के नागपाल ने चेतावनी देते हुए श्री सिसोदिया की जमानत खारिज कर दी। अदालत ने कहा कि उन्होंने अपराधि क साजिश में सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और श्री मनीष सिसोदिया आपराधिक साजिश के उद्देश्यों को हासिल करने के लिए आबकारी नीति को बनाने और उसे लागू करने में गहराई से शामिल थे। ये कोर्ट कह रहा है, ये मोदी जी नहीं कह रहे, ये भारतीय जनता पार्टी नहीं कह रही। आदरणीय सभापति महोदया, गिरफ्तारी के दिन, जैसे गिरफ्तारी हुई, दो दिन के बाद 28 फरवरी को श्री सिसोदिया सुप्रीम कोर्ट गए और उन्होंने कहा कि ये झूठा मामला है, गिरफ्तारी अवैध है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने उनकी पेटिशन को

खारिज कर दिया। भई आपने तो कोर्ट में कहा है कि झूठा मामला है, फिर सुप्रीम कोर्ट ने उनकी पेटिशन खारिज क्यों कर दी। आदरणीय सभापति महोदया, इसके बाद श्री सिसोदिया जी हाईकोर्ट में भी गए। वहां से भी उनको राहत नहीं मिली, यहां तक कि अक्तूबर,2022 में, मैं अब श्री सतेंद्र जैन जी के बारे में चर्चा कर रहा हूं। श्री सतेंद्र जैन जी की यह चोरी भी पकड़ ली। उन्होंने कहा कि वो बीमार हैं, उन्हें जमानत दे दी जाए। उन्होंने अंतरिम जमानत के लिए अर्जी दाखिल की और कहा कि मेरा मैडिकल एलएनजेपी अस्पताल में कराया जाए। जब कोर्ट ने कहा एलएनजेपी अस्पताल में आपकी जांच-पड़ताल नहीं होगी किसी अन्य होस्पिटल में जांच-पड़ताल होगी। तो उन्होंने अपनी याचिका वापस ले ली। क्यों वापस ली थी। जब श्री सतेंद्र जैन को गिरफ्तारी के कुछ ही दिन बाद कोर्ट में पेश किया जाता है तो ऐसी तस्वीर दिखाई गई जिसमें ऐसा लग रहा था कि उनकी मुंह से खून आ रहा है। मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट किया कि जेल में श्री सतेंद्र जैन को पीटा जा रहा है और ईडी वाले उन्हें प्रताड़ित कर रहे हैं। बाद में पता चला, वैन में जब वो बैठे हुए थे तो पेड़ की जो छाया पड़ रही थी उनके मुंह पर उसके निशान आ गए। अब इस तरह के आरोप ईडी और सीबीआई को लगाते हुए, मैं इतना जरूर कहूंगा इस ऑनरेबल हाउस को कि आप के नेताओं को सावधानी बरतनी चाहिये। आदरणीय सभापति महोदया, कोर्ट ने अब तक श्री सतेंद्र जैन की जमानत की सारी दलीलें जो अभी तक दी गई हैं, उनको नामंजूर किया है। 17 नवंबर, 2022 को कहा गया है कि चार्जशीट फ्राइल हो चुकी हैं, तो अब जेल में रखने का कोई मतलब नहीं है। लेकिन कोर्ट ने तब भी जमानत मंजूर नहीं की। दिल्ली की एक अदालत ने 30 जुलाई, 2022 को कहा कि ईडी के आरोप-पत्र में

दिल्ली के मंत्री श्री सतेंद्र जैन जी के खिलाफ पहली नजर में पर्याप्त सबूत हैं, उन्होंने और उनके सहयोगियों ने राष्ट्रीय राजधानी में और उसके आसपास कृषि भूमि खरीदने के लिए हवाला फ्रंड का उपयोग किया है। अभी कुछ दिन पहले ही 6 अप्रैल, 2023 को दिल्ली हाईकोर्ट ने श्री सतेंद्र जैन को जमानत देने से इंकार करते हुए कहा है, कोर्ट ने साफ कहा है कि श्री सतेंद्र जैन मनी लॉड्रिंग के पूरे ऑपरेशन के कर्ताधार्ता थे।

माननीया अध्यक्षः अच्छा चलिए कम्पलीट कीजिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः उन्होंने ही मनी लॉड्रिंग की परिकल्पना की।

माननीया अध्यक्षः बिधूड़ी जी कम्पलीट कीजिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः regularize किया और फिर उस योजना को पूरा किया, अदालत ने ये भी साफ कहा कि कम्पनियों को श्री सतेंद्र जैन और उनका परिवार ही नियंत्रित करता था। कोर्ट की इस टिप्पणी के बाद भी अगर कोई कहता है कि फर्जी केस है तो फिर वो जानबूझ कर सच्चाई को स्वीकार नहीं करना चाहता या फिर वह होश में नहीं है।

माननीया अध्यक्षः चलिए बहुत-बहुत धन्यवाद। बस-बस बहुत बात है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः अभी तो, देखिये आपने मुझे 10 मिनट नहीं दिए अभी तक। आप बता दीजिए ना आप।

माननीया अध्यक्षः साढ़े तीन पर बोलना शुरू कर दिया था।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः देखिये मैं 10 मिनट में अपनी बात को समाप्त करूंगा।

माननीया अध्यक्षः तीन बजकर तीस मिनट पर।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः मैं अपनी बात को समाप्त कर रहा हूं।

माननीया अध्यक्षः आपका बोलना बहुत जरूरी है।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः आदरणीय सभापति महोदया।

माननीया अध्यक्षः बिधूड़ी जी आप तीन बजकर 30 मिनट पर आपने बोलना शुरू कर दिया था।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः नहीं, नहीं देखिए।

माननीया अध्यक्षः मैंने आपका टाईम नोट किया था।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः मैं लास्ट कर रहा हूं।

माननीया अध्यक्षः एक मिनट में कम्पलीट कीजिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः मैं फ्रिजूल की बातें नहीं कर रहा हूं।

माननीया अध्यक्षः एक मिनट में कम्पलीट कीजिए अपनी बात।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः आदरणीय सभापति महोदया, अन्ना हजारे जी क्या कह रहे हैं, ''शराब ने किसी का भला किया हो, ऐसा तो

कभी नहीं हुआ।'' कुछ दोष दिखाई दे रहा होगा इसलिए पूछताछ होगी। अगर गलती की है तो सजा होनी चाहिए। जिस काँग्रेस के साथ आप मित्रता करने जा रहे हैं, जिनकी लीडरशीप आप स्वीकार कर रहे हैं वो काँग्रेस क्या कह रही है कि उनका ये मानना है की केजरीवाल जैसे लोगों और उनके साथियों को जिनपर भ्रष्टाचार के गम्भीर आरोप लगे हैं, किसी तरह की सहानुभूति या समर्थन नहीं दिया जाना चाहिये। लीकरगेट और घीगेट के आरोप की गहन जांच होनी चाहिये और दोषी पाए जाने वालों को सजा मिलनी चाहिये, सभी राजनीतिक नेताओं के लिये ये जान लेना महत्वपूर्ण है कि केजरीवाल द्वारा भ्रष्ट तरीकों से अर्जित धान का उपयोग पंजाब, गोवा, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और दिल्ली सहित कई राज्यों में कॉग्रेस पार्टी के खिलाफ किया गया है।

माननीया अध्यक्षः बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः अब शेर और शायरी हो रही है तो मैं थोड़ा सा एक लाइन हो जाए। वैसे तो अभी।

माननीया अध्यक्षः मर्यादा रखिए आप सुबह से पहले सदन बहुत अच्छा चल रहा है, आप बैठ जाइए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी, नेता प्रतिपक्षः चलिए, अरे भाई, आम आदमी पाटी के ऑनरेबल एमएलएज। अरे यार रोना बंद करो, किसी ने कहा है। ''इफतदाए इश्क है रोता है क्या, आगे-आगे देखिए होता है क्या।'' बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः चलिए बहुत-बहुत धन्यवाद। माननीय मंत्री राजकुमार आनंद जी। राजकुमार आनंद जी। मंत्री महोदय। माननीय मंत्री श्री सौरभ भारद्वाज जी।

श्री सौरभ भारद्वाज, स्वास्थ्य मंत्रीः अध्यक्षा महोदया, बहुत-बहुत शुक्रिया कि आपने।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठिए, बैठिए। माननीय मंत्री सौरभ भारद्वाज जी शुरू करें।

श्री सौरभ भारद्वाज, स्वास्थ्य मंत्रीः अध्यक्षा महोदया, बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने बोलने का मौका दिया। ये पहली बार नहीं है कि किसी को सत्ता हासिल हुई हो। भारत के इतिहास में, दुनिया के इतिहास में बड़े-बड़े हुक्मरान आए। हमारे देश में ऐसे प्रधानमंत्री हुए जिनके बारे में कहा जाता था कि ये इतने प्रसिद्ध हैं कि ये कभी हार ही नहीं सकता। 2004 के इलैक्शन से पहले जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार चुनाव में गई मेरी उस वक्त नई-नई नौकरी लगी थी। Shining India Campaign चल रहा था और कोई आदमी ये मानने के लिए तैयार नहीं था कि बाजपेयी जी वापिस नहीं आयेंगे और Shining India Campaign, India Shining Campaign से ऐसा लगता था कि नहीं अब तो भारतीय जनता पार्टी की तूती बोल रही है ये ही रहेंगे। इंदिरा गांधी के समय में भी ऐसा था। इंदिरा गांधी को ऐसा लगने लगा था कि इंदिरा जो है चुनाव नहीं हार सकती। सभी राजनैतिक विश्लेषक ये ही कहते थे और जब-जब इस तरीके की स्थिति किसी देश में, हिन्दुस्तान मे आई है तो जो आदमी सबसे

ऊपर होता है उसको सत्ता का नशा आता है। सत्ता में एक नशा है और वो नशा जब सर पर चढ़ जाता है तो घमंड आता है, अंहकार आता है। आज हमारे भारतीय जनता पार्टी के मित्र अपने प्रधान मंत्री का अंहकार देख रहे हैं। ये सब देख पा रहे हैं और उस अंहकार को देखकर खुश हैं। ये लोग खुश है कि देखिए आज हमारे पास कितनी ताकत है। ईडी है सीबीआई है, इन्कम टैक्स है किसी को भी धमका लो। किसी की क्या औकात। बड़े-बड़े बिजनेस मैन को धमकाओ। कोई कुछ बोले तो ईडी भेज दो। बीबीसी जैसा विश्वस्तरीय एक न्यूज एजेंसी जिसके बारे में प्रधान मंत्री खुद कहते थे कि अगर कहीं पर विश्वास ना हो किसी न्यूज के बारे में तो बीबीसी देख लें। उस बीबीसी की एक डाक्यूमेंट्री क्या चल गई, इन्होंने बीबीसी के पास इन्कम टैक्स भेज दिया। अब ईडी के अंदर उसकी कार्यवाही चल रही है और विश्व की सबसे विश्वनीय न्यूज एजेंसी भारतीय जनता पार्टी की परिभाषा के अंदर वो मनी लॉड्रिंग कर रहे हैं। ईडी के पास उनके जर्नालिस्ट अब चक्कर लगाते हैं। सुबह बुलाते हैं, उनके एडिटर्स को शाम तक बैठाकर रखते हैं। ये घमंड है इनका। क्या करेगा बीबीसी? बुलायेंगे तो जाना पड़ेगा, सत्ता है इनके पास। हमारे दो मंत्री जेल के अंदर हैं। भारतीय जनता पार्टी फ्रूली नहीं समा रही कि साहब हमने इसको अंदर डाला, अब इसको अंदर डाला, अब इसको अंदर डालेंगे। भविष्यवाणियां करते हैं। यहां इस सदन में खड़े होकर भविष्यवाणियां करते हैं। पता सबको है। हम भी करते हैं। हम भी पंडित है, तुम भी पंडित हो। तो यहां खड़े होकर भविष्यवाणियां करते हैं कि अब इसको जेल भेजेंगे, अब इसको जेल भेजेंगे। ये सत्ता का नशा है। एक एजेंसी अगर इन्वेस्टिगेशन कर रही है तो एजेंसी ने इनको पहले ही बता दिया कि अब इसको बंद करेंगे, अब इसको बंद करेंगे, तय है। स्क्रिप्ट तय है। इनके जो spokesperson हैं वो छः महीने से बोल

रहे थे मनीष सिसोदिया को अंदर भेजेंगे, मनीष सिसोदिया को अंदर भेजेंगे। अब ये और बोल रहे हैं। तो जो घमंड है अध्यक्ष महोदया, ये घमंड जो है बड़े-बड़े शासकों के नाश का कारण घमंड ही है, अंहकार। अब क्या है कि इनको ये अंहकार हो गया है कि हमें अब कोई चेलेंज करेगा। मीडिया को हमने चुप करा दिया। एजेंसियों को हमने चुप करा दिया। बिजनेसमैन को हम नहीं बोलने देते। कोई नेता बोलता है तो उसको चुप करा देते हैं। किसी के विधायक खरीदकर सरकार गिरा देते हैं तो इतनी बड़ी absolute power इनके हाथ में लग गई है कि अब ये आदमी को आदमी नहीं समझते। अब इनको मजा आता है इसके अंदर। अच्छा ये मुख्यमंत्री ज्यादा सवाल कर रहा है। बुलाओ इसको, ईडी में बुलाओ। बुलाओ इसको सीबीआई में बुलाओ। क्या करोगे, जाना पड़ेगा। सौ बार बुलाओगे, सौ बार आयेंगे हम। भई आपके पास सत्ता है, आपके पास सत्ता का नशा है। अभी तो चल रही है आपकी। मगर इसी से इनके पतनकी शुरूआत होगी। इनके पास लगभग हर राज्य के अंदर सरकार है। अध्यक्ष महोदय, कुछ राज्य है गिनती के जहां पर इनकी सरकार नहीं है। इनको वो सरकारें भी पसन्द नहीं आ रही कि देखिये यहां पर अरविंद केजरीवाल कैसे चला रहे हैं सरकार दिल्ली के अंदर। इसके अंदर कुछ करा दें। पंजाब में कैसे चल रही है भगवंत मान की सरकार, अरविंद जी की सरकार, उसको जो है डिस्टर्ब किया जाए, गवर्नर से डिस्टर्ब कराया जाए, एलजी से डिस्टर्ब कराया जाए। मीडिया में narrative चलाया जाए। मतलब इनके पास इतना कुछ है तब भी इनको दूसरा आदमी जो है भा नहीं रहा। प्रधान मंत्री जी खुद कहते हैं कि जो है भारतीय जनता पार्टी दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है। भारतीय जनता पार्टी कहती है कि हमारे प्रधान मंत्री दुनिया के सबसे प्रसिद्ध प्रधानमंत्री हैं। भई आप इतनी बड़ी पार्टी हैं, इतने प्रसिद्ध आप है, आपको एक छोटे से अरविंद केजरीवाल से क्यों

डर लग रहा है। कुछ तो है कि आप इस पार्टी के पीछे पड़े हुए हैं। आम आदमी पार्टी तो बहुत छोटी सी पार्टी है। अभी दो छोटे-छोटे राज्यों के अंदर हमारी सरकार है। मगर आपने पूरी ताकत जो है एक आम आदमी पार्टी, एक अरविंद केजरीवाल के पीछे जो है लगा दी है। ये प्रधान मंत्री जी की ये जो तडप है ये सबको देखने में आ रही है। ऐसा नहीं है कि इसको देख नहीं पा रहे हैं लोग। लोग दूर से भी बैठे हुए देख रहे हैं कि क्या कारण है कि अरविंद केजरीवाल की सरकार के पीछे आप पड़ गए हैं और छोटी-छोटी चीजों पर जब हम हक मांगने जाते हैं तो आप हक देना नहीं चाहते। हमारे पास जो दिल्ली में हक है आप चाहते हैं कि उप-राज्यपाल के माध्यम से उन हकों को आप छीन लें। पंजाब के अंदर हम बजट बुलाना चाहते हैं, आप चाहते हैं कि वहां के राज्यपाल से आप उसको छीन लें और ये घमंड है जिसकी वजह से बड़े-बड़े राजाओं का जो है नुकसान हुआ। मुझे याद आती है कुछ दिनों पहले हमारे एक साथी ने भी बताया था। दुर्योधन को भी इसी तरीके से अपने ऊपर बहुत घमंड हो गया था और पांडव अपनी राईट मांग रहे थे, कह रहे थे पांच गांव तो दे दो। पांच गांव भी देने के लिए दुर्योधन तैयार नहीं था। भगवान कृष्ण चाहते थे कि किसी तरीके से समझौता हो जाए। मिलकर बात हो जाए। काम हो जाए। मगर दुर्योधन को ये विश्वास नहीं था। दुर्योधन को लगता था कि नहीं जब सब कुछ मेरा है तो मैं ही रखूंगा, मैं कैसे किसी को दे दूं। इस देश में आज इतनी समस्याएं हैं बेरोजगारी है, महंगाई है, गरीबी है, मगर प्रधानमंत्री जी को ये लगता है कि आज इस राज्य को डिस्टर्ब किया जाए, आज इस मुख्यमंत्री को डिस्टर्ब किया जाए, आज ये किया जाए, आज इसकी सरकार गिराई जाए। ये समय तो ऐसा था कि आपको ऐसा

कहना चाहिए था कि सबको मिलकर आगे बढ़े। कोई कहीं पर जीता है। अगर टीएमसी की सरकार बंगाल के अंदर है तो आपको एक्सेप्ट करनी चाहिए। अगर शिव सेना की एनसीपी की कांग्रेस की सरकार महाराष्ट्र में है आपको एक्सेप्ट करना चाहिए। राजस्थान में कांग्रेस की सरकार है आप एक्सेप्ट कीजिए। मगर आपकी और आपकी पार्टी की पूरी की पूरी विचारधारा इस तरह से है कि इस सरकार को किस तरह से डिस्टर्ब करे और जब-जब आप किसी राज्य को डिस्टर्ब करेंगे आपका देश भी डिस्टर्ब हो रहा है। आपके देश के अंदर कैसे आयेगी इन्वेस्टमेंट। कौन investor आयेगा इस देश के अंदर। आप कितने भी बड़े-बड़े investor summit कर लीजिए। वो कहेंगे यार यहां का प्रधानमंत्री तो रोज किसी मुख्यमंत्री से जो है झगडा कर रहा होता है। वो रोज ये सोच रहे होते हैं कि आज इसको गिरा दो, आज इसको गिरा दो, आज इसको गिरा दो, आज इसको बंद कर दो। आज इसकी ईडी खोल दो, आज इसकी सीबीआई खोल दो। कौन आयेगा इस देश के अंदर। आप इस बात को समझिए। ये आंकड़े जो है ना ये आंकडे आप अपने लोगों को तो बता सकते हैं कि आल टाइम ये आईये, ऑल टाईम ये आईये। मगर मामला बहुत खराब है। आप कभी, आप लोग भी विधायक हैं, हम लोग भी विधायक हैं। अपने दफ्तरों में बैठते हैं तो हमें पता है कि कितने बेरोजगार आते हैं। तो कृष्ण जी जब कौरवों के पास गए कि भई इतना लालच ठीक नहीं है जो हक है वो दे दो, मगर दुर्योध न माना नहीं।

''वर्षो तक वन में घूम-घूम
बाधा विघनों को चूम-चूम,
सह धूप, घाम, पानी, पत्थर,
पांडव आये कुछ और निखर।''

ये जो पांडव बैठे है ना ये बड़े दिनों से संघर्ष कर रहे हैं और ये आप लोगों का आशीर्वाद ही है, आप लोगों का आशीर्वाद ही है किये संघर्ष से निखर रहे हैं। मगर मैं एक बात और बोलता हूं,

''सौभाग्य ना सब दिन सोता है,
देखो आगे क्या होता है।

सौभाग्य ना सब दिन सोता है,
देखो आगे क्या होता है,

मैत्री की राह दिखाने को,
सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को,

भगवान हस्तिनापुर आए,
पांडव का संदेशा लाये।''

मगर दुर्योधन को समझ में नहीं आई बात। दुर्योधन जो है अपने घमंड में चूर था और भगवान ने कहा:

''दो न्याय अगर तो आधा दो,
उसमें भी यदि बाधा हो

तो दे दो केवल पांच ग्राम,
रखो अपनी धरती तमाम।

हम ये ही खुशी से खायेंगे,
परिजन पर हंसी ना उठायेंगे,

पर दुर्योधान वो भी दे ना सका,
आशीष समाज की ले ना सका।

उल्टा हरि को बांधने चला,
जो था असाध्य, साधने चला,

हरि ने भीषण हुंकार किया,
अपना स्वरूप विस्तार किया।

डगमग-डगमग दिग्गज डोले,
ये भगवान कुपित होकर बोले,

जंजीर बंधाकर बांधा मुझे
हाँ-हाँ दुर्योधान साधा मुझे।''

आप लोग समझ नहीं रहे हैं। ''जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।'' जय हिन्द।

माननीया अध्यक्षः माननीय राज्यसभा सांसद हमारे सदन में मौजूद हैं श्री राघव चड्ढा जी। मैं पूरे सदन की तरफ से उनका हार्दिक स्वागत करती हूं, अभिनन्दन करती हूं। माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल जी।

श्री अरविंद केजरीवाल (माननीय मुख्यमंत्री): माननीय अध्यक्षा महोदया, आज मैं सदन को एक कहानी सुनाना चाहता हूं। कहानी का शीर्षक है 'चौथी पास राजा'। आपने बचपन में राजा रानी की बहुत कहानियां सुनी होंगी। मेरी कहानी में रानी नहीं है, बस राजा है। अध्यक्षा महोदया, ये एक ऐसे राजा की कहानी है जो अनपढ़ था, चौथी पास था मगर बेहद अंहकारी था और पैसे

की इतनी हवस थी, इतना भ्रष्टाचारी राजा था। ये एक महान देश की कहानी है। एक बहुत महान देश था, कई हजार साल पुराना देश। उस देश में एक गांव में एक बहुत गरीब परिवार में एक बच्चे का जन्म हुआ। जब बच्चे का जन्म हुआ तो ज्योतिषी ने कहा, गांव में ज्योतिषी होते हैं, वो पत्री बनाते हैं, ज्योतषी ने कहा माई तेरा लड़का बड़ा होकर बहुत बड़ा सम्राट बनेगा। माई को यकीन नहीं हुआ बोली मैं इतनी गरीब हूं, कहां से मेरा बेटा सम्राट बनेगा। उसने कहा नहीं, तेरे बेटे के ग्रह बताते हैं कि तेरा बेटा बहुत बड़ा सम्राट बनेगा। बेटा धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। गांव का स्कूल था, स्कूल जाता था। उसका पढ़ने वढ़ने में मन नहीं लगता था। तो चौथी के बाद, उसने किसी तरह से चौथी करी, चौथी के बाद उसने स्कूल छोड़ दिया। गांव के पास एक रेलवे स्टेशन था। तो घर का खर्चा चलाने के लिए वो लड़का वहां स्टेशन पर चाय बेचता था। लड़के को भाषण देने का बड़ा शोक था। सारे गांव के लड़कों को इकट्ठा कर लेता, आसपास के गावं के भी इकट्ठा कर लेता, सामने वो खाट डाल लेता उस पर चढ़ जाता और भाषण देता। धीरे-धीरे आसपास के गांव के लड़के भी इकट्ठे हो गए। जिस चीज पर भी भाषण देता, एक बार शुरू हो जाता तो बंद ही नहीं होता। अब ज्योतषी ने कहा था, लड़का बड़ा हुआ, बड़ा होकर एक दिन उस महान देश का वो राजा बन गया।

पूरे देश में उसका नाम हो गया 'चौथी पास राजा'। लोग उसको 'चौथी पास राजा' कहते थे। उसे आता जाता कुछ था नहीं, पढ़ा-लिखा था नहीं, अफसर आते कुछ-कुछ अंग्रेजी में चपर-चपर करते उसको समझ नहीं आता, अफसर जो मर्जी उससे साइन कराकर ले जाते, जो मर्जी उससे साइन कराकर ले जाते। अब वो अफसरों से कुछ पूछे तो उसे भी शर्म आती थी कि मैं ये पूछूंगा तो

उनको लगेगा अनपढ़ आदमी है, पता चल जाएगा। तो उसके भी दिल में यह रहता था यार मैं पूछूं न पूछूं, पता नहीं किस-किस चीज पे उस 'चौथी पास राजा' ने साइन कर दिये। फिर धीरे-धीरे राजा को यह बुरा लगने लगा, यार ये मेरे को चौथी पास, चौथी पास कहते हैं, तो उसने एक फर्जी डिग्री बनवा ली, कहीं से फर्जी डिग्री बनाकर ले आया एम.ए. की, बोला मैं एमए हूं। लोगों को लगा यार ये तो ठीक नहीं है, ये तो फर्जी डिग्री बनाकर ले आया हमारा राजा। तो लोगों ने आरटीआई डाली, जो आरटीआई डालता उस पर 25 हजार रुपये जुर्माना। आपके नेता की बात नहीं कर रहा, आप लोग भी हंस सकते हो। तो जो आरटीआई डाले उसको 25 हजार रुपये का जुर्माना, जो आरटीआई डाले उसको 25 हजार रुपये का जुर्माना। एक दिन कुछ लोग 'चौथी पास राजा' के पास गये, बोले जी एक बड़ा धांसू आइडिया लेकर आए हैं, बोले बताओ, बोले जी नोटबंदी कर दो भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा देश से। तो उसने कुछ पूछा, उसे कुछ समझ नहीं आया राजा को क्या कह रहे हैं क्या नहीं, पर उसे लगा यार कुछ धांसू आइडिया होगा। उसने एक दिन रात को 8 बजे टीवी चैनलों पर जाकर नोटबंदी कर दी, बोला सारे नोट बंद, पूरे देश में हाहाकार मच गया, तड़प गये लोग, धंधे बंद हो गये, दुकानें बंद हो गईं, लोग बेरोजगार हो गये, बुरा हाल हो गया पूरे देश का, लंबी-लंबी लाइनें लग गईं पूरे देश के अंदर। लोगों ने उसको जाकर कहा जी नोटबंदी कर दो आतंकवाद खत्म हो जाएगा। न आतंकवाद खत्म हुआ, न भ्रष्टाचार खत्म हुआ, देश बर्बाद हो गया, वो महान देश जिसका वो राजा बना था वो देश 10 साल, 15 साल, 20 साल पीछे चला गया उस नोटबंदी से, उस चौथी पास राजा की वजह से। एक दिन उस राजा के पास कुछ लोग गये बोले जी खेती खूब बड़ी हो जाएगी

ये किसानों के कानून पास कर दो। अब उस राजा को कुछ अक्ल नहीं थी, अनपढ़ राजा था, उसने साइन कर दिये, किसानों के 3 काले कानून पास हो गये। पूरे देश के किसान सड़कों पर, जगह-जगह मोर्चे, साढ़े सात सौ किसानों की मौत हो गई एक साल के अंदर। अंत-वंत में राजा को वो कानून वापस लेने पड़े। धीरे-धीरे देश की समस्याएं बढ़ती गई, बढ़ती गई, बढ़ती गई क्योंकि राजा ऐरे-गैरे, इससे पहले एक और राजा आया था मोहम्मद बिन तुगलक वो भी ऐसे ही करता था, कभी उसने देश की राजधानी बदल दी, कभी बोला मैं चमड़े के सिक्के बनाउंगा, उसी तरह से ये था अनपढ़ राजा, कुछ भी कर देता था। अब राजा को एक दिन लगा यार मैं तो राजा बन गया पता नहीं कितने दिन रहूंगा तो उसने गरीबी में जो जीवन उसने जिया था, उसे लगा यार पैसे तो कमाने चाहिए, पैसे कैसे कमाउं पैसे कमाउंगा तो जनता में छवि खराब होगी। तो उसने अपने एक दोस्त को बुलाया और उस दोस्त को बोला कि ऐसे करते हैं कि मैं तो राजा हूं सारे सरकारी ठेके तेरे को दिलवाउंगा, सारी कंपनियां तेरे को दिलाउंगा, सरकारी पैसा तेरे को दिलाउंगा, नाम तेरा, पैसा मेरा। तेरे को उस पर पूरे 10 परसेंट कमीशन मिलेगा, सारा पैसा मेरा। दोस्त मान गया, दोस्त को क्या था फ्री में पैसा मिल रहा था। उसके बाद दोनों ने मिलकर जो देश को लूटा, जो देश को लूटा, सबसे पहले वो दोस्त आया और बोला सर सबसे पहले बैंकों को लूटते हैं, तो वो बोला कैसे, यार बैंकों को लूटेंगे तो ये तो ठीक नहीं है। बोला नहीं ऐसे करते हैं आप किसी बैंक के चेयरमैन को बुलाओ, उसको बोलो कि वो मेरे को लोन देगा। तो बोला लोन देगा तो वापस करना पड़ेगा। बोला वापस कौन करेगा, वापस थोड़े ही करना है, आप राजा हो वापस-वूपस नहीं करना, लोन दिला दो बस। तो राजा ने एक बैंक के चेयरमैन

को बुलाया बोला इसको लोन दे, तो वो चेयरमैन की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। यार मैं तो मर जाउंगा, फंस जाउंगा वो भाग गया। तो फिर उन्होंने ढूंढ़-ढांढ़कर एक ऐसा चेयरमैन चुना जो कि सरासर भ्रष्टाचारी, जिसके ऊपर 10 फाइलें खुली हुई, जिसके ऊपर 10 केस चल रहे हैं, उसको बुलाया बोला देख तेरे को चेयरमैन बना रहे हैं, अब तू 10 हजार करोड़ रुपये दे दे इसको नही तो तेरे को जेल भेजेंगे, जेल जाना है कि पैसे दे रहा है। उसने कहा माइबाप जो कहोगे जहां कहोगे मैं साइन कर दूंगा, उसने 10 हजार करोड़ रुपये का लोन उसके दोस्त को दे दिया। ऐसे करते-करते चौथी पास राजा ने और उसके दोस्त ने मिलकर दो ढ़ाई लाख करोड़ रुपये बैंकों से लूट लिये। अब बैंकों से पैसा लूटने के बाद उन्होंने देश को खरीदना चालू किया। सबसे पहले उन्होंने देश के एयरपोर्ट खरीदे। पहले 6 एयरपोर्ट खरीदे, फिर इन्होंने बिजली कंपनियां खरीदीं, फिर उन्होंने पूरे देश के अंदर बिजली के दाम बढ़ा दिये, फिर उन्होंने सी-पोर्ट खरीदने चालू कर दिये, फिर उन्होंने कोयले की खदानें ले ली, फिर इन्होंने पुलिस को भेज-भेजकर जो लोगों की कंपनियां थी प्राइवेट लोगों की कंपनियां, यहां बंदूक रख-रखकर उनकी कंपनियां छीन ली राजा ने और उसके दोस्त ने। पूरे देश के अंदर हाहाकार मच गया, इतनी महंगाई हो गई, इतनी महंगाई गई पूरे देश में कि पहले गैस 400 रुपये सिलेंडर होती थी, चौथी पास राजा के आने के बाद सिलेंडर 1100 रुपये का हो गया। पहले पेट्रोल 71 रुपये होता था, 97 रुपये हो गया। पहले डीजल 57 रुपये होता था 90 रुपये लीटर हो गया। जब पेट्रोल के दाम बढ़ गये, डीजल के दाम बढ़ गये तो सारी चीजों के दाम बढ़ गये, देश के अंदर हाहाकार मच गया। सब चीजों पर इसने और इसके दोस्त ने कब्जा कर लिया। दूध पहले 46 रुपये होता था, 66 रुपये लीटर हो गया

बच्चों को मांएं दूध पिलाने लायक नहीं बची, घरों के अंदर छोटे-छोटे बच्चों के दूध छीन लिये इस राजा ने। सरसों का तेल 90 रुपये लीटर होता था 214 रुपये हो गया, बताओ। धीरे-धीरे पूरे देश में हाहाकार मच गया, लोग अब राजा के खिलाफ आवाज उठाने लगे, लोग उसके खिलाफ बोलने लगे तो राजा ने कह दिया कि जो मेरे खिलाफ बोलेगा, पकड़कर जेल में डाल दूंगा। एक के बाद एक, एक के बाद एक राजा ने लोगों को पकड़-पकड़कर जेल में डालना शुरु कर दिया। किसी ने राजा का कार्टून बना लिया, उसको भी जेल में डाल दिया। किसी ने राजा का नाम गलत ले दिया, उसको भी जेल में डाल दिया। किसी टीवी चैनल वाले ने राजा के खिलाफ लिख दिया, उसको भी पकड़कर जेल में डाल दिया। किसी जज ने राजा के खिलाफ कोई आर्डर कर दिया, उसको भी पकड़कर जेल में डाल दिया। न जजों को छोड़ा, न पत्रकारों को छोड़ा, न मीडिया को छोड़ा, न व्यापारियों को छोडा, न उद्योगपतियों को, किसी को नहीं छोड़ा, उस चौथी पास राजा ने पकड़-पकड़कर सबको जेल में डालना चालू कर दिया। एक महान देश कहां से कहां पहुंच गया। उसी देश के अंदर एक छोटा सा राज्य था उस राज्य का एक मुख्यमंत्री था, वो मुख्यमंत्री अपने लोगों का खूब ख्याल रखता था। वो मुख्यमंत्री कट्टर ईमानदार था, वो मुख्यमंत्री कट्टर देशभक्त था, वो मुख्यमंत्री पढ़ा-लिखा था। उस मुख्यमंत्री ने अपने लोगों को महंगाई से छुटकारा दिलाने के लिए बिजली मुफ्त कर दी। भाई साहब, उसके बाद तो चौथी पास राजा पागल हो गया। उसने बुलाकर उस मुख्यमंत्री को जो हड़काया कि तेरी हिम्मत कैसे हुई। उसे लगा राजा ने तो सारी बिजली कंपनियों पर कब्जा कर रखा था, उसे लगा अगर ये बिजली मुफ्त करने लग गया तो बाकी देश में तो मेरा बेड़ा गर्क, मेरी बिजली कंपनियां लुट जाएंगी, ऐसे कैसे

चलेगा। उसने उसको कहा खबरदार जो तूने बिजली मुफ्त की। मुख्यमंत्री नहीं माना। धीरे-धीरे उस मुख्यमंत्री ने अपने गरीबों के स्कूल ठीक करने चालू कर दिये तो राजा ने उसको बुलाकर और हड़काया। राजा बोला ये क्या कर रहा है, तू स्कूलों में बच्चों को पढ़ाता है, तू स्कूल खोल रहा है, ये बंद कर, ये सब नहीं चलेगा इस देश के अंदर। वो मुख्यमंत्री नहीं माना। फिर उस मुख्यमंत्री ने सबका ईलाज मुफ्त कर दिया, सबके लिए शानदार मोहल्ला क्लीनिक खोल दिये। राजा तो बिलकुल ही पागल हो गया। धीरे-धीरे जनता को पता चला कि राजा कैसा है। एक दिन लोगों ने उस राजा को उखाड़कर फेंक दिया और लोगों ने एक किसी ईमानदार और देशभक्त आदमी को वहां बिठा दिया और उनकी सरकार आ गई और उसके बाद देश से महंगाई खत्म हुई और देश दिन-दूनीरात-चौगुनी तरक्की करने लगा। तो जैसे हम बचपन में सुना करते थे 'मोरल ऑफ द स्टोरी' मतलब भई इस कहानी से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? इस कहानी से ये प्रेरणा मिलती है कि अगर आपके देश में महंगाई है, आपके देश में समस्याएं हैं, आपके देश में सबकुछ गड़बड़ चल रहा है तो सबसे पहले जांच-परखकर देखो आपका राजा अनपढ़ तो नहीं है। अगर आपके देश में सब गड़बड़ चल रहा है, बेरोजगारी है, बहुत सारी समस्याएं हैं, जरा देखो आपके राजा का कोई दोस्त तो नहीं है, अगर है तो सबसे पहले अपने राजा को उखाड़कर फेंको, नहीं तो आपकी समस्याओं का कोई समाधान नहीं होगा। वो पढ़ा करते थे 'अंधोर नगर चौपट राजा सवा सेर भाजी सवा सेर खाजा', बहुत-बहुत शुक्रिया।

माननीया अध्यक्षः संकल्प पारित करना अब श्री दिलीप पांडे माननीय मुख्य सचेतक द्वारा

प्रस्तुत संकल्प सदन के सामने है,

जो इसके पक्ष में हैं वो हां कहें

जो इसके विरोधा में हैं वो ना कहें,

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता संकल्प स्वीकार हुआ

सदन को अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित करने से पहले मैं सदन के नेता एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी, सभी मंत्रीगण, माननीय नेता प्रतिपक्ष, श्री रामसिंह बिधूड़ी तथा सदन के सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक आभार प्रकट करती हूं। इसके अलावा सत्र के संचालन में सहयोग देने के लिए विधानसभा सचिवालय तथा दिल्ली सरकार के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ विभिन्न विभागों और सुरक्षा एजेंसियों तथा मीडिया का भी हार्दिक धन्यवाद करती हूं। अब मैं सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगी की वे राष्ट्रगान के लिए खड़े हो जाएं।

(राष्ट्रगान)

(सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित की गई।)

... समाप्त ...

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

राज कुमार

सचिव

RAJ KUMAR

Secretary

महेन्द्र गुप्ता

उप-सचिव (सम्पादन)

MAHENDRA GUPTA

Deputy Secretary (Editing)